* ओ३म् *

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

का

संवत् २००३, ४, ५ तथा ६

चार वर्षों का

कार्य वृत्तान्त

प्रकाशक

मानकचन्द 'मन्त्री'

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,

होशियारपुर रोड, जालंधर नगर।

भाद्रपद २००७ ५.०

छप रही है ! छप रही है !! छप रही है !!!

वैदिक डायरी १९५१

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से दीपमाला के अवसर पर जनता के सन्मुख प्रकाशित होकर आ रही है। जिसमें प्रारम्भिक प्रवचन श्री शान्त स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के दिए जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के भाष्यों के आधार पर प्रत्येक मन्त्र के भावार्थ (उन्हीं के शब्दों में) दिए जा रहे हैं। दैनिक पंचयज्ञ, स्वस्ति-[illegible]न, शान्ति प्रकरण, सामान्य प्रकरण आदि के अतिरिक्त [illegible]र्य, मेधा, श्रद्धा, मधु, सहृदयता, पुरुष, सगठन, निर्भयता [illegible]युदय आदि अनेक उपयोगी सूक्तों का भी समावेश [illegible] गया है। जप, उपासना, प्राणायाम आदि के विषय में [illegible] दयानन्दसरस्वती जी के मौलिक विचार भी दिए गए हैं।

आर्य भाइयों व आर्य समाजों को अभी से आर्डर भेज [illegible]दिक डायरी की प्रतियां सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

गत वर्ष की भाँति इस उत्तम प्रकाशन से वंचित पड़ेगा इस वर्ष भी डायरी सीमित संख्या में निकाली [illegible]। एक प्रति का मूल्य १)

निवेदक—

सम्पादक आर्य,

निकल्सन रोड, अम्बाला छावनी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का

सं० २००३ का कार्य वृत्तान्त

परिचय

यह सभा सं० २००३ की समाप्ति के साथ अपने कार्य काल के ६२ वर्ष समाप्त कर चुकी है। इस सभा के आधीन इस वर्ष पंजाब प्रान्त तथा रियास्तों, सीमा प्रांत, बिलोचिस्तान, और जम्मू तथा कश्मीर रियासत में ११०० के लगभग आर्य समाजें वैदिक धर्म प्रचार का काम कर रही हैं तथा अन्य विविध वैदिक संस्थाएं भी इस कार्य में सहयोग दे रही हैं।

सं० २००१ के अन्त में ११६ आर्य समाजों की ओर से २५१ प्रति-निधि सभा में सम्मिलित थे। सं० २००२ में ५ आर्य समाजों की ओर से ८ प्रतिनिधि और स्वीकार हुए। इस प्रकार सं० २००२ के अन्त तक १२४ आर्य समाजों की ओर से २५६ प्रतिनिधि हो गए। सं० २००३ के अन्त पर भी यही संख्या रही। सभा के लिए प्रति-निधियों के त्रैवार्षिक चुनाव का यह तृतीय वर्ष था।

वेद प्रचार—सभा का मुख्य कार्य वेद प्रचार है। उपदेशक विभाग द्वारा वार्षिकोत्सव और दान संग्रह आदि ... वर्षों का तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है—

सम्वत्	उपदेशक भजनीक	वार्षिकोत्सव
२००१	७६	३३
२००२	६८	३५
२००३	८०	२५

वेद प्रचार		चार आना निधि
६२६०४)	स० २००१	१३८
६२७१६)	स० २००२	१५६
५५८७४)	स० २००३	१०१

सभा कार्यालय—सभा कार्यालय का कार्य श्रीमान् निरंजननाथ जी सहायक मन्त्री की देख रेख में सुचारू रूप से चलता रहा। वे प्रायः प्रतिदिन कार्यालय में पधार कर कार्यालय को सुव्यवस्थित रखने में प्रयत्नशील रहे। सभा उनकी इस निष्काम सेवा के लिये आभारी है। म० युगलकिशोर जी सभा के कार्यालयाध्यक्ष रहे। कार्यालय में २ गणक ५ लेखक २ जायदाद निरीक्षक और २ लेखक वेदप्रचार विभाग में कार्य करते हैं। कार्य की मात्रा का विवरण निम्न प्रकार है—

पत्र लिखे गए	१८०००
आय की रसदें जारी हुई	३१७४
व्यय के वाउचर बने	१६६३

सभा आधीनस्थ संस्थाओं की संख्या वृद्धि के कारण हिसाब किताब का तथा अन्य कार्य दिनों दिन बढ़ रहा है।

जायदाद विभाग—दोनों जायदाद निरीक्षक अभियोगों की ...णों तथा भूमियों मकानों के किराया की प्राप्ति और जायदाद ...न्धत अन्य विविध कार्य भली भांति निभाते रहे।

...न महानुभावों ने सभा के अभिभोगों और जायदाद रक्षा ... निःशुल्क सेवा की, इस के लिए सभा इन की आभारी है।

...) ला० अर्जुनदेव जी बगाई एडवोकेट लाहौर।

...) चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट लाहौर।

... पं० देवेन्द्रनाथ जी अवस्थी एडवोकेट लाहौर।

... बाबू मनोहरलाल जी बगाई एडवोकेट डेराइस्माईलखाँ।

... ला० केदारनाथ साहनी एडवोकेट, रावलपिण्डी।

... ०० दुर्गादास खन्ना एडवोकेट लाहौर।

... ला० देवराज भाटिया, गुजरात।

...:— सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजें अपने सभासदों से ... आय का दशांश सभा को देती हैं। सं० २००३ में इस ...२८) आय हुई है।

...ाना निधिः— आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ...ी स्मृति में सभा ने यह निधि स्थापित की हुई है; इस ... वेदप्रचार में व्यय होता है। इस वर्ष इस निधिमें १०१२)

आय हुई। आर्य भाइयों को चाहिए कि वे ऋषि बोध तथा निर्वाण उत्सवों के अवसर पर अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की ओर से कम से कम ।) के हिसाब से इस निधि में अपनी भेंट अर्पण करके इस निधि को अधिक से अधिक सफल बनाएं।

प्रेम देवी होम करण:—इस निधि के सूद की आय कन्या महाविद्यालय जालन्धर को दी जाती है। इस वर्ष ४८) सूद की आय हुई।

स्व० राजपाल स्मारक:—शहीद श्री राजपालजी के स्मारक तथा उनके परिवार की सहायता के लिए सभा को लगभग ६०००) प्राप्त हुआ था परन्तु उनके परिवार ने सहायता लेना स्वीकार नहीं किया। सं० २००२ की रिपोर्ट में बताया गया था कि आर्य हाई स्कूल गुरुदत्तभवन में राजपाल ब्लाक नाम से ६ कमरे बनाने की तजवीज है। वह ६ कमरे बनवाए जा चुके हैं। राजपाल ब्लाक का उद्‌ सभा की हीरक जयन्ती के अवसर पर श्री स्वामी स्वतन्त्रता महाराजके कर कमलों द्वारा कराया गया। राजपाल ब्लाक व्यय हुआ है, जो निम्न प्रकार प्राप्त हुआ है:—

राजपाल स्मारक निधि का शेष	६१०५)
श्री राजपाल जी के सुपुत्रों द्वारा दान	६२३५)
श्री म० कृष्ण जी का दान	५०००)
योग	१७,३४०)

इस प्रकार राजपाल स्मारक नामक निधि समाप्त हो

शहीद राजपाल जी की माता को ७) मासिक श्री लेखराम स्मारक निधि से दी जा रही है।

श्री चमूपति साहित्य विभाग:— यह वि श्री पं० चमूपति जी की स्मृति में स्थापित किया हुआ अधिष्ठाता सभा मंत्री हैं। कागज की कठिनाई के कारण पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी। सरकार से कागज मिलने पर भी कागज़ के दुकानदारों से वह परमिट कैश

सभा की हीरक जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित कि

विक्रयार्थ शेष हैं :—

(१) सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)
(२) हीरक जयन्ती स्मारक ग्रन्थ (हिन्दी)
(२) आचार्य रामदेव जी की जीवन झांकियां (हिन्दी)
(४) आर्य समाज (अंग्रेज़ी)
(५) सत्संग पद्धति

इनके अतिरिक्त अन्य कई पुस्तकें भी विक्रयार्थ मौजूद हैं। समय समय पर 'आर्य' पत्र में विज्ञापन प्रकाशित किया जाता रहा है। आर्यसमाजों और आर्य भाइयों को इन पुस्तकों की खपत करनी और करानी चाहिए।

सभा के पास हिन्दी सत्यार्थप्रकाश भी विक्रयार्थ मौजूद है।

आचार सुधार-निधिः— इस में लगभग २६७८) जमा हैं। ... के सूद की आय आचार सुधार सम्बन्धी ट्रैक्ट प्रकाशित करने के ... परन्तु राशि की न्यूनता और कागज़ की अप्राप्ति के कारण ...ीं हो सका।

...म स्मारकः— इस निधि में स्थिर राशि के सूद से ... दान से ११।-) आय हुई। श्री पं० तुलसीराम जी ... श्रीमती लाजवन्ती जी को १५) मासिक तथा श्री राजपाल ... को ७) मासिक सहायता इस फ़ण्ड से दी जाती है।

वैदिक पुस्तकालय—सभा के इस पुस्तकालय में विभिन्न ... भिन्न भिन्न विषयों की लगभग १६००० पुस्तकें हैं। ...के साथ वाचनालय भी है। षाण्मासिक, त्रैमासिक, ...क, साप्ताहिक तथा दैनिक लगभग ६० पत्रिकाएं और ... वाचनालय में आते हैं। जिन में २० मूल्य से तथा शेष ... परिवर्तन में आते हैं।

...के ५१ साधारण सदस्य है। १०) अमानत रखने और ...ल्क देकर साधारण सदस्य बनने का नियम है।

...३ में ८५०० व्यक्तियों ने पुस्तकालय से लाभ उठाया। ...ज जी विद्यालंकार पुस्तकाध्यक्ष रहे और पं० जगदीश ...उनके आधीन कार्य करते रहे।

अनुसंधान विभागः— इसके अध्यक्ष पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति हैं। पं० भगवद्दत्त जी वेदालंकार, उनकी देख रेख में इस विभाग में कार्य करते हैं। निम्न पुस्तकों का मसौदा तय्यार किया जा रहा है।

वृत्रासुर (आध्यात्मिक दिव्य शक्तियों को प्रकट न होने वाला एक आवरण)
दाश्वान् (भगवान् के प्रति आत्म समर्पण करने वाला पुरुष)

रामचन्द स्मारक बटहराः— शहीद श्री रामचन्द जी की स्मृति में बटहरा रियासत जम्मू में सभा ने यह स्मारक स्थापित किया हुआ है। और यहां शहीद की स्मृति में प्रति वर्ष वीर मेला मनाया जाता है श्री ला० अनन्तराम जी (जम्मू निवासी)इसके अधिष्ठाता हैं।

दीवानचन्द स्मारकः— स्वर्गीय श्री ला० दीवानचन्द जी ठेकेदार देहली के दान से सैदपुर जिला झेलम में एक हस्पता[illegible] पाठशाला और जंजघर स्थापित है।

हस्पताल में लगभग ६००० नए रोगी आए। नए [illegible] सब मिलकर १६००० रोगियों ने लाभ उठाया। वर्ष आर[illegible] भारद्वाज जी इस हस्पताल के अध्यक्ष थे। पुनः कविराज श्[illegible] जी वैद्य को कार्य सौंपा गया।

पाठशाला में हिन्दी पढ़ाई जाती है। एक अध्याप[illegible] करती है।

प्रान्त में साम्प्रदायिक दंगों के कारण पाठशाला १[illegible] से तथा हस्पताल१अप्रैल४७से कुछ काल के लिए बन्द कर[illegible]

'आर्य' पत्र—इसके अधिष्ठाता और सम्पादक[illegible] तथा व्यवस्थापक पं० यशःपाल जी हैं। पं० जगदीश जी [illegible] ध्यक्ष इसके उपसम्पादक के रूप में कार्य करते रहे। [illegible] संख्या इस वर्ष ६५० रही।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय—इसके अधि[illegible] अर्जुनदेव जी एडवोकेट और आचार्य श्री स्वामी वेदान्[illegible] महाराज हैं।

पं० शिवदत्त जी मौलवीफ़ाज़िल, सिद्धांतशिरोमणि और पं० महेन्द्रकुमार जी सिद्धांतभूषण अध्यापन कार्य करते हैं।

विद्यालय को स्थापित हुए २२ वर्ष हो चुके हैं। विद्यालय अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर रहा है। भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में विद्यालय के स्नातक आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। इस वर्ष विद्यालय में २० विद्यार्थी रहे, जिन की संख्या प्रान्तों की दृष्टि से और श्रेणी वार निम्न प्रकार है:—

पंजाब	राजपूताना	बंगाल	उड़ीसा	आसाम	संयुक्त-प्रान्त
६	२	१	१	१	१

भूपाल	मालावार	बिहार।
१	३	१

सिद्धान्त भूषण	तृतीय खण्ड	द्वितीय खण्ड	प्रथम खण्ड	प्रवेशिका
	२	४	१	१३

१. विद्यालय से इस वर्ष दो स्नातक बन कर निकले।
२. विद्यार्थियों के लाभार्थ विशेष व्याख्यान कराए गए।
३. विद्यालय के आचार्य और अध्यापक वर्ग समाजों के वार्षि- संस्कारों पर और प्रचारार्थ भी जाते रहे।

आर्य वीर दल—सभा की हीरक जयन्ती के अवसर पर दल का संगठन करने का निश्चय हुआ था। सौभाग्य की श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज ने इस दल का नेता कार किया। श्री स्वामी जी महाराज के नेतृत्व में दलने बड़ी है। दलपति पं० सत्यबन्धु जी नियत किए गए और मास्टर जी केन्द्राध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे। दल के शिक्षक ानों पर जाकर शाखाएँ स्थापित करते और व्यायाम सिखाते। २००३ में १२७ स्थानों पर दल की १६२ शाखाएँ और आर्य वीर हैं। दल के १० कार्यकर्त्ता हैं। इन्हों ने और रेवाड़ी के दंगा पीड़ित सहायता केन्द्रों में बड़ी रुचि से कार्य किया है।

ानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला शहर—

ीताराम जी मालिक फर्म मथुरादास पन्नालाल अम्बाला

शहर ने इस औषधालय के संचालन के लिए ५०००) दान दिए थे। तत्पश्चात् वे निरन्तर इसके लिए दान प्राप्त करके सभा को भेजते रहे हैं और इस समय सभा के पास इस औषधालय के हिसाब में २५५४८) उपस्थित है।

सभा की ओर से औषधालय की समिति के प्रधान श्री राय अमृतराय जी (सभा उपप्रधान) नियत हैं।

पं० रामचन्द्र जी वैद्य चिकित्सा का कार्य करते हैं

अम्बाला शहर निवासी जनता इस औषधालय से बड़ा लाभ उठा रही है।

दयानन्द दलितोद्धार सभा—प्रधान—ला० रोशनलाल जी स्पोर्टस लिमिटिड, तथा मन्त्री—पं० रामस्वरूप जी पाराशर हैं, इस सभा की ओर से १३ प्रचारक कार्य करते हैं।

पाठशालाएं—भिन्न २ स्थानों पर ६ पाठशालाएँ चल रही हैं जिनमें १० अध्यापक कार्य करते हैं और ४८१ विद्यार्थी शिक्षा

इस वर्ष टौनी देवी जिला कांगड़ा का मिडिल स्कूल सभा के प्रबन्ध में ले लिया गया है, जिसमें ८ अध्यापक २५६ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं।

औषधि वितरण—चीचियां जिला कांगड़ा में एक औषधालय सेठ दीवानचन्द जी वर्मानी लायलपुर के दान से ... हुआ है। जिससे इस वर्ष १००६६ रोगियों ने लाभ उठाया। धालय के अध्यक्ष वैद्य पं० विद्यारत्न जी आयुर्वेदालंकार भाइयों में बड़ी लगन से काम करते हैं और यह औषधालय समाज के प्रचार का एक अच्छा साधन है।

कूप जामकी जिला स्यालकोट में दलित भाइयों के ... को दूर करने के लिये एक कूआं लगवाया गया और चौ... कांगड़ा में एक प्याऊ लगवाई गई।

नालागढ़ रियासत में हरिजन भाइयों के पानी के ... करने के लिये एक मुकद्दमा लड़ना पड़ा, जिसमें सभा ... मिली। इसके लिए ला० हेमराज जी तथा चौ० रूपचन्द जी लाहौर और ला० प्राणनाथ जी वकील रोपड़ तथा ला०

वकील नालागढ़ धन्यवाद के पात्र हैं; जिन्होंने निःशुल्क कानूनी सहायता दी।

आश्रम—दलित जाति के बालकों को दस्तकारी सिखाने के लिए छात्र वृत्ति दी जाती है। और एक आश्रम स्थापित किया हुआ है जिस में १६ बालक आश्रय पा रहे हैं। गुरुदत्त भवन में दर्जी का काम सिखाने का प्रबन्ध किया हुआ है। रंगाई छपाई सीखने वाले बालकों का प्रबन्ध यथा स्थान किया हुआ है।

शिक्षा समिति—इस सभा से सम्बन्धित यूनिवर्सिटी की शिक्षा देने वाली आर्य शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा के प्रचार के लिये आर्य शिक्षा समिति बड़ा कार्य कर रही है और हिन्दी प्रचार के लिये भी प्रयत्न करती है।

सं० २००३ में निम्न लिखित संस्थाएं इस से सम्बन्धित थीं—

स्कूल	बालक	बालिकाए	योग
हाई स्कूल	१३	१०	२३
मिडल स्कूल्स	४	३५	३६
प्राइमरी ,,	३	४५	४८
योग	२०	६०	११०

समिति के निरीक्षक पं० जयदेव जी विद्यालङ्कार ने इस वर्ष . का निरीक्षण किया। वे निरीक्षण के अतिरिक्त कथा और ां के द्वारा स्थान स्थान पर वैदिक धर्म का प्रचार भी करते

र्मशिक्षा परीक्षा—इन परीक्षाओं में निम्न श्रेणियों के बालिकायें सम्मिलित हुए और उत्तीर्ण हुए—

क्षा	श्रेणी	सम्मिलित	उत्तीर्ण
शिका	V	११४७	१०४६
कारी	VIII	६००	३६१
नी	X	१०७	५६

न पाठशालाओं और स्कूलों में धर्मशिक्षा का प्रबन्ध नहीं र्मिक पुस्तकों का पढ़ाना प्रचलित कराया गया है।

हिन्दी प्रचार—बालकों के स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा पर बल देने का यत्न किया गया। आर्य हाई स्कूल स्यालकोट, लुधियाना और डी० ए वी० हाई स्कूल मिन्टगुमरी ने तो आठवीं श्रेणी तक हिन्दी पढ़ने वालों के लिए माध्यम ही हिन्दी कर दिया है।

वसीयतें—इस वर्ष सभा को गुरुकुल कांगड़ी के लिये निम्न वसीयतें मिली—

(१) रामेश्वर बाजपेयी उन्नाव
(२) नारायणदास मैना अलीगढ़
(३) गुलजारी लाल लाहौर

प्रथम दो के सम्बन्ध में कानूनी कार्यवाही की जा रही है।

सं० ३ के सम्बन्ध में ला० गुलजारीलाल के वारिसों के साथ अदालत में समझौता कर लिया गया है। जिस के अनुसार सभा को ३ य भाग मिलेगा। कुछ नकद धन के अतिरिक्त सारी सम्पत्ति मकानों के रूप में है। लाहौर नगर की गत ५ मासों से बिगड़ी हुई परि[illegible] के कारण सम्पत्ति का बटवारा नहीं हो सका। इन में से एक [illegible] जल भी गया है।

सत्यार्थ प्रकाश का मुकद्दमा—सत्यार्थ प्रकाश र[illegible] चमूपति जी कृत उर्दू अनुवाद संस्करण में से, चौदहवां समु[illegible] लवाने के लिए, कुछ मुसलमानों ने लाहौर की अदालत [illegible] मुक़द्दमा दायर कर दिया था। इसका अभी तक कोई निश्च[illegible] हुआ। (इतने में पंजाब विभाजन होगया)

चन्दूलाल इस्टेट—इस वर्ष चन्दूलाल इस्टेट की [illegible] अच्छी रही। कोई ऋण नहीं लिया। गत वर्ष भूमियां [illegible] लिये वसीयत सेवाराम से जो १०००) ऋण लिया गया [illegible] वापस किया गया।

२० नए वृक्ष फलदार तथा अन्य कई प्रकार के [illegible] वृक्ष लगाए गए

गत वर्ष के बजट की अपेक्षा आय ६८४॥) अधिक [illegible] ३६६=)॥। कम हुआ।

अधिष्ठाता—चौ० हरगोबिन्द जी।
प्रबन्ध कर्ता—ला० गेलाराम जी।
सहायक प्रबन्ध कर्ता—म० सोमदेव जी।

गोशाला बेट सोहणी—गोशाला में निम्न पशु रहे—

गाय	बछड़ी	बछड़े	योग
१	१	२	४

आय (दूध की) १६३≡)।
व्यय २१३॥)

चन्दुलाल इस्टेट के प्रबन्ध कर्ता ही गोशाला का भी प्रबन्ध करते रहे।

गुरुकुलबेट सोहनी—वर्षारम्भ में निम्न विद्यार्थी थे—

प्राज्ञ परीक्षार्थी	चतुर्थ श्रेणी	तृतीय श्रेणी
१	१	२

द्वितीय श्रेणी	प्रथम श्रेणी	योग
२	२	८

पं० वासुदेव जी अध्यापक का कार्य करते रहे।
वर्षान्त में बिगड़ी हुई साम्प्रदायिक स्थिति के कारण विद्यार्थी घर चले गए और अस्थायीरूप से गुरुकुल बन्द करना पड़ा।
.य समान रहा।

हीरक जयन्ती का कार्य-क्रम—सभा की हीरक जयन्ती आगामी पांच वर्षों के लिए जो कार्यक्रम निश्चित किया गया था अनुसार निम्न कार्य किया गया।

आर्य वीर दल—श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के में आर्य वीर दल के संगठन का कार्य आरम्भ कर दिया गया।

औषधालय स्थापन करना—आर्य समाज बीम्फल ने एक ..य स्थापित किया हुआ था। धनाभाव के कारण स्थानिक ..ओं को कठिनाई थी, २५) मासिक की सहायता दे कर इस ..लय को अपनाया गया।

ग्राम प्रचार—आर्यसमाज किला सोभासिंह के पुरुषार्थी ग्राम प्रचार के कार्य में बड़ी रुचि रखते हैं। उनकी प्रार्थना पर

वहाँ प्रचार का केंद्र स्थापित किया गया। उपदेशक, भजनीक वहाँ नियत किये गये। इस केन्द्र के लिये १००) मासिक सभा ने स्वीकार किये। औषधालयों की स्थापना और ग्राम प्रचार के कार्य को विस्तार देने के लिए योजना बनाई जा रही थी और इस के लिए प्रारम्भिक स्कीम भी तय्यार की गई। किन्तु श्रावण मास में कलकत्ता और पूर्वी बंगाल में जो साम्प्रदायिक उपद्रव हुए, उसका प्रभाव पंजाब की परिस्थिति पर भी पड़ा और अवस्थाएं अनुकूल न रहीं। स्थान २ पर दफ़ा १४४ आदि प्रतिबन्ध लगने आरम्भ हो गए। पुनः माघ फाल्गुण मास में पंजाब का वातावरण भी विक्षुब्ध तथा अशान्त हो गया और पजाब तथा सीमा प्रान्त में दंगे आरम्भ हो गये जिस के भयकर परिणाम सब पर विदित हैं। इस कारण योजना स्कीम पूरी नहीं हो सकी।

सभा का शिक्षा-विभाग

(१) दयानन्द मथुरादास कालेज मोगा—यह
२० वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य कर रह
ए० और बी० एस० सी० के सब विषयों की शिक्षा के
तथा नैतिक शिक्षण का भी सुप्रबन्ध है।

चारों श्रेणियों के विद्यार्थियों की संख्या ५६१ हैं।
वर्ष की अपेक्षा लगभग २५ प्रतिशत वृद्धि, विद्यार्थियों की
है, जो कि कालेज की सर्वप्रियता को प्रकट करती है।

स्टाफ— कालेज में २२ प्रोफेसर हैं, एक
लैबोरेटरी असिस्टैंट और ३ लेखक हैं और सभी सु
और संतोष जनक कार्य करते हैं।

कालेज में एक विभाग के रूप में गर्ल्स कालेज
हुई है, और गत ३ वर्षों में ही इस में चारों श्रेणियां
एफ० ए० में १२ छात्राओं में से ११ उत्तीर्ण हुईं। लेडी
की अध्यक्षता में छात्राओं का होस्टल भी सुचारू रूप से च

कालेज का परीक्षा परिणाम इस वर्ष निम्न प्रकार रहा—

श्रेणी	परीक्षा में बैठे	उत्तीर्ण	कम्पार्टमेन्ट
एफ० ए०	६८	४७	१
एफ० एस० सी० (मैडीकल)	३४	२१	६
एफ० एस० सी० (नान मैडीकल)	३८	२८	२
बी० ए०	२१	५	५
बी० एस० सी०	६	२	२

तुलना करने पर अन्य कालेजों की अपेक्षा उपरोक्त परिणाम संतोष जनक रहा है ।

पुस्तकालय—पुस्तकालय के लिए विशाल भवन तय्यार हो गया है। इस में लगभग दस हजार पुस्तकें हैं। पुस्तकालय से सम्बद्ध वाचनालय में देश की प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाएं आती हैं।

साइंस विभाग—साइंस की शिक्षा सर्व प्रिय हो रही है और ग इन्टर मिडियट और बी० एस० सी० फ़िज़िक्स की लेबो- पहिले से लगभग दूनी कर दी गई है। इन्टर मीडियट बाय- रेटरी और बायलोजी म्यूज़ियम के भवन इस वर्ष बनवाए

[illegible]ालय—छात्रालय में दोनों विभागों में १८१ विद्यार्थी रहे। स के लिए ६० क्यूबिकल तथा ३१ शयनागार(डारमेटरीज़) ई हैं।

[illegible]ड़ाएं— कालेज की अपनी विस्तृत क्रीड़ाभूमि है। हाकी [illegible]रमिन्टन, टेनिस, वालीबाल कुश्ती इत्यादि खेलों का प्रबन्ध [illegible] की टीमों ने इन खेलों के यूनीवर्सिटी टूर्नामेन्टों में भी ।

वर्द्धिनी सभा—भिन्न २ विषयों पर वाद विवाद होते [illegible] कालेज के विद्यार्थियों ने उत्साह से भाग लिया। लिटरेरी [illegible]र से "आधार भूत अधिकार" "U. N. O. का भविष्य" [illegible]मोण के आर्थिक स्वरूप" विषयों पर व्याख्यान कराए।

धर्म शिक्षा—कालेज के विद्यार्थियों को यथा सम्भव वैदिक

धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों का परिचय कराया जाता है, इस के लिए कालेज के दैनिक कार्य में एक अन्तर रहता है।

कालेज की आवश्यकताएं निम्न प्रकार हैं—

(१) कालेज फण्ड की पूर्ति अर्थ २५०००)।

गर्ल्स कालेज के लिए भवन निर्माण इन्टरमिडियट और बी० एस० सी० के लिए व्याख्यान भवन।

---

(२) एम० डी० ए० एस० हाई स्कूल मोगा

स्थापना काल—सन् १६१६

छात्र संख्या

	दशम श्रेणी	नवम	आठवीं	सातवीं	छठी	पांचवीं
(सेकेंडरी डिपार्टमेंट)	८२	१११	८६	१२४	१५८	१३७

सर्व योग १०८४

प्रायमरी विभाग—	चतुर्थ श्रेणी	तृतीय	द्वितीय	प्रथम
	६७	१२०	११४	१३८

= सर्व योग ११७४।

इन में १२८ विशेष हिन्दी पाठी और ८८ संस्कृत पा[illegible] उर्दू पढ़ने वालों को धर्म शिक्षा अन्तर में हिन्दी पढ़ाई जाती[illegible] भग ५० प्रति शत छात्र थोड़ी बहुत हिन्दी जानते हैं।

दशम श्रेणी का परीक्षा परिणाम ८६ प्रतिशत रहा। [illegible] र्थियों ने यूनीवर्सिटी के वजीफे प्राप्त किये। वर्नाक्युलर फ[illegible] परिणाम शतप्रतिशत रहा और एक विद्यार्थी ने वजीफा लिय[illegible]

मोगा म्युनिसिपिल कमेटी के दोनों वजीफे इस स्कूल [illegible] र्थियों ने जीते।

स्कूल में २६ अध्यापक हैं। छात्रावास में ५६ छात्र [illegible] अतिरिक्त छोटी आयु के छात्रों के लिए एक पृथक छात्रावास [illegible] १४ छात्र हैं। छात्रावासों में संध्या हवन नित्य नियमानुसार [illegible]

आर्य धर्म-शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है। व्यायाम [illegible] की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

(३) डी० ए० वी० हाई स्कूल मिएटगुमरी

अध्यापक २१

विद्यार्थी संख्या ७१८

मैट्रिक का परीक्षा परिणाम ८६ प्रतिशत वर्नाक्युलर फाइनल ६५ प्रतिशत। स्कूल का अपना प्राइमरी विभाग भी है।

धर्म शिक्षा परीक्षा का परिणाम संतोष जनक रहा। ५२ में से ४८ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए।

धर्म शिक्षा की पढ़ाई के अतिरिक्त छात्रों में आर्य समाजिक वातावरण बनाए रखने के लिए आर्य कुमार सभा की स्थापना की हुई है। जिस में स्कूल के अध्यापक और छात्र बड़े उत्साह और रुचि से भाग लेते हैं।

स्कूल के पुस्तकालय में ६००० से ऊपर पुस्तकें हैं। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्कूल के खेलने के स्थान अपने हैं। छात्रों ने भिन्न २ टूर्नामेंटस में भाग लिया।

मार्च मास में स्कूल के प्रिन्सीपल लाला लालचन्द जी लम्बे पर चले गए उनके स्थान पर दीवान विद्याधर जी कार्य रहे।

स्कूल के अधिष्ठाता श्री चौधरी रूपचन्द जी एडवोकेट रहे।

---

(४) आर्य हाई स्कूल ओकाड़ा—इस स्कूल को स्थापित

र्ष समाप्त होते हैं।

पांचवीं से दसवीं तक की श्रेणियां हैं। १२ अध्यापक हैं।

स्कूल बिल्डिंग और छात्रावास किराए की इमारतों में हैं।

संख्या ४५० है।

ट्रिक का परीक्षा परिणाम ८७ प्रतिशत रहा।

द्यार्थियों में शारीरक उन्नति सदाचार शिक्षा के लिए सन्यासी और उपदेशक महानुभावों के व्याख्यान कराए गए।

कूल के अधिष्ठाता श्री चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट हैं।

घनश्यामदास जी, चौ० सुखराम जी, ला० धर्मचन्द जी

आदि महानुभाव लोकल कमेटी के रूप में प्रबन्ध में सहायता देते रहे।

स्कूलका पारितोषक वितरणोत्सव सफलता पूर्वक मनाया गया।

---

(५) आर्य हाई स्कूल पाकपटन—सन् १६४४ में इस की स्थापना की गई थी।

अधिष्ठाता ला० रामदत्त जी वकील मिण्टगुमरी हैं।

११ सज्जनों की एक स्थानिक परामर्श दात्री समिति बनी हुई है।

लोकल मैनेजर ला० रामलाल धवन एडवोकेट हैं।

स्कूल और छात्रावास दोनों किराए की इमारतों में हैं।

छात्रावास में ३० छात्र रहते हैं विद्यार्थियों की संख्या सैकेन्ड्री डिपार्ट मेंट में २०० तथा प्राइमरी विभाग में १६० है।

११ अध्यापक कार्य करते हैं।

स्कूल में हाकी की टीमें हैं। परन्तु अपना क्रीड़ा स्थान के कारण वांछित रूप से क्रीड़ा का प्रबन्ध नहीं हो सका। ट्रा में टूर्नामेंट में भी सम्मिलित हुई। स्कूल का स्काउट ग्रुप बड़ा कार्य कर रहा है।

धर्म शिक्षा और आर्य कुमार सभा द्वारा छात्रों में के लिए प्रेम उत्पन्न करने और उन्हें सभ्य नागरिक बनाने किया जाता है।

दसवीं श्रेणी परीक्षा परिणाम ८७ प्रतिशत रहा।

---

(६) रा० ब० डा० हरीराम आर्य हाई स्कूल जलालपुर

स्कूल के मैनेजर रायसाहब दीपचन्द जी हैं।

१० अध्यापक कार्य करते हैं।

विद्यार्थियों की संख्या २५१ है। इनमें से ६६ लड़के हिन्दी और ७ संस्कृत पढ़ने वाले हैं।

छात्रावास में २६ हिन्दू और दस मुसलमान छात्र हैं। दसवीं श्रेणी का परीक्षा परिणाम ८७½ प्रतिशत रहा।

वर्नाक्युलर फाइनल का परिणाम शत प्रतिशत रहा।

स्कूल आर्य समाज मन्दिर में तथा उस के साथ किराए के के मकानों में लगता है। जिसका किराया ५४) मासिक है।

क्रीड़ा स्थान के लिए ५ बीघा भूमि १० वर्ष के लिए १३६) वार्षिक पट्टे पर ली गई है।

---

(७) आर्य हाई स्कूल भलवाल—इसके अधिष्ठाता ला० सन्तलाल जी विद्यार्थी रहे।

विद्यार्थियों की संख्या लगभग ३७० रही।

दशम श्रेणी का परीक्षा परिणाम ८२ प्रतिशत रहा और वर्नाक्युलर फाइनल का ६० प्रतिशत रहा।

इस स्कूल के संचालन में स्थानिक आर्य भाइयों ने बड़े उत्साह और लगन से कार्य किया। स्वयं भी बड़ी आर्थिक सहायता दी। किन्तु [illegible]हुए साम्प्रदायिक उपद्रवों के परिणाम स्वरूप भलवाल की [illegible]न्दु जनता के वहां से चले जाने के कारण और वहां की अव-[illegible]ा देखते हुए आर्य समाज और स्थानिक प्रबन्ध समितिने [illegible] कर दिया है।

([illegible]८) आर्य हाई स्कूल गुरुदत्त भवन—स्कूल को स्थापित हुए [illegible]ाप्त होते हैं।

[illegible]के अधिष्ठाता ला० अर्जुनदेव जी एडवोकेट रहे।

[illegible]कूल में विद्यार्थियों की संख्या सेकेन्डरी डिपार्टमेन्ट में साढ़े [illegible] और प्राइमरी विभाग में डेढ़ सौ।

गुरुदत्त भवन, रावी रोड, मोहल्ला सत्थां को विशेषकर और आबादियों को साधारणतया इस स्कूल से बड़ी सुविधा और [illegible]भ मिलता था।

स्कूल में खेलों और व्यायाम का बड़ा उत्तम प्रबन्ध है। हाकी, फुटबाल, वालीबाल आदि की टीमें बहुत अच्छी हैं। इन टीमों ने कई टूर्नामेन्टों में भाग लिया है।

धार्मिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके लिये आर्य कुमार सभा भी स्थापित की हुई है। प्रति सप्ताह इसके अधिवेशन होते और विद्यार्थी गण बड़ी रुचि से उसमें भाग लेते हैं।

दशम श्रेणी का परीक्षा परिणाम ८६ प्रतिशत और वर्नाक्युलर फाइनल का ६७ प्रतिशत रहा।

नई शिक्षा संस्थाएं—(९) प्रथम जून ४६ से लुधियाना में आर्य कालेज की स्थापना की गई। इस में साइंस की शिक्षा विशेष रक्खी गई है। यूनिवर्सिटी ने स्वीकार कर लिया है। इसके प्रिंसीपल श्री हरगुलाल जी कालिया हैं।

स्थानिक कमेटी के प्रधान डा० गुज्जरमल जी वर्मा हैं।

(१०) फुल्लरवान में रायसाहब मय्याभान जी रिटायर्ड सेशनजज ने एक पब्लिक हाई स्कूल जारी किया हुआ था। उन्होंने इस वर्ष यह स्कूल सभा के सुपुर्द कर दिया और इसका नाम राय साहब म[illegible] आर्य हाई स्कूल रक्खा गया।

(११) दीनानगर में स्थानिक आर्य भाइयों ने एक आ[illegible] स्कूल की स्थापना की जो कि सभा की देख रेख में चल रहा है

(१२) थानेसर के आर्य भाइयों ने अपने यहां एक [illegible] स्कूल खोलकर सभा को अपनी देख रेख में लेने की प्रार्थना [illegible] स्कूल भी भली प्रकार चल रहा है।

उपरोक्त संस्थाओं की स्वीकृति (Recognition) [illegible] शिक्षा विभाग से मिल गई है। इनका आर्थिक उत्तरदायित्व [illegible] आर्य समाजों और लोकल कमेटियों पर है।

(१३) **आर्य शिक्षा मण्डल**—इसके अतिरिक्त आ[illegible] निधि सभा पंजाब ने जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की मुख्[illegible] के साथ मिलकर आर्य शिक्षा मण्डल का निर्माण किया है। [illegible] द्वारा सभा से सम्बद्ध समाजों के आधीन शिक्षणालयों तथा स[illegible] शिक्षणालयों को एक केन्द्रीय संगठन में संगठित करने का यत्न कि[illegible] जा रहा है।

इसके प्रधान रा० ब० दीवान बद्रीदास जी और प्रधानमन्त्री म० कृष्ण जी हैं। सम्बद्ध शिक्षणालयों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त सभा के ११ प्रतिनिधि हैं।

पीड़ित सहायता निधि—इस वर्ष मुसलिम लीग के अनिष्टकारी साम्प्रदायिक आन्दोलन के कारण आषाढ़ श्रावण मास से ही लगभग सारे देश में अशान्ति हो गई। सर्व प्रथम कलकत्ता और पूर्वी बंगाल इस आन्दोलन के शिकार बने। वहां की पीड़ित जनता की सहायता के लिये इस सभा ने सार्वदेशिक सभा के साथ मिलकर कार्य किया। सार्वदेशिक सभा की अपील के साथ इस सभा ने भी अपील प्रकाशित की। इस अपील पर सभा के कार्यालय में २७०००) प्राप्त हुआ। जिसमें से आर्यसमाज रिलीफ सोसाइटी कलकत्ता को १२०००) भेजा गया। सभा के उपदेशक पं० सच्चिदानन्द जी स्नातक ने वहां ... र सभा की ओर से कार्य किया।

...सके पश्चात् सीमा प्रान्त के हजारा जिले में उपद्रव हुआ। ...वसर पर सभा से सम्बन्धित आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) ...एडी ने पीड़ितों की सेवा का कार्य अपने हाथ में लिया और ...ी से उन्हों ने अपने पीड़ित भाई बहिनों की सहायता का कार्य ... वह उन्हीं का हिस्सा है।

साम्प्रदायिक उपद्रवों के इस प्रहार से पंजाब भी न बच सका ...र्च मास में यहां भी स्थान स्थान पर दंगे, आरम्भ हो गये। ...धन और जन की अपार हानि हुई। जो पंजाब अब तक दूसरों के संकट के समय अग्रसर होकर अपने देश के अन्य निवासी भाइयों की सहायता करता रहा। आज उसके अपने ...ीय बन्धुओं को संकट में देख कर कैसे अकर्मण्य रह सकता था। ...आर्य समाज तो सदैव दुखियों की सहायता करता रहा है। ...भ देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने पंजाब के संकट ग्रस्तों की सहा...ता के लिए अपील जारी की उसके साथ इस सभा ने भी अपील प्रकाशित की। यह निश्चय किया गया कि पृथक् सहायता केन्द्र न खोल कर अपने आर्य समाजों को ही केन्द्र बनाया जाए। तदनुसार

रावलपिण्डी, मीरपुर, रेवाड़ी, देहली, की आर्य समाजों में सहायता केन्द्र बनाए गये। पंजाब प्रान्त की प्रायः सभी मुख्य २ आर्य समाजें अपने अपने स्थान पर सहायता केन्द्र बन गईं और बड़ी लग्न और तत्परता से अपने संकट ग्रस्त भाइयों की सेवा का कार्य करती रहीं। स्थानिक तौर पर धन इकट्ठा करके व्यय करतीं रहीं। सभा के उपदेशक भी सहायता कार्य पर लगाए गये और उन्होंने भी अनथक लगन तथा धर्म भावना से कार्य किया।

आर्य वीर दल के कार्य कर्ताओं ने सहायता केन्द्रों में बड़ी संलग्नता से कार्य किया। विधर्मी बनाए गए भाई बहिनों को अपने धर्म में वापस लेने का कार्य भी एक सहायता का अंग है। इस सभा के कार्यालय में जो धन प्राप्त हुआ उसकी मात्रा १५०००) है। इस में से रावलपिण्डी केन्द्र को २०००) मुलतान १०००) मीरपुर को धन भेजा गया।

रावलपिण्डी और रेवाड़ी के केन्द्रों के लिए वस्त्र भी भेजे गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की
सं० २००४ की रिपोर्ट

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सं० २००४ की समाप्ति के साथ अपने कार्यकाल के ६३ वर्ष समाप्त कर चुकी है।

सं० २००३ के अन्त में पंजाब प्रान्त में राजनैतिक आधार पर साम्प्रदायिक झगड़े आरम्भ हो गए थे। उसका असर सभा के कार्य क्षेत्र पर भी पड़ा। और लाहौर नगर की अवस्था विशेष रूप से अशान्त होने के कारण सभा के साधारण कार्य संचालन में भी रुकावट पैदा हुई। इसीलिये सभा का प्रतिवर्ष मई मास के अन्त (ज्येष्ठ मास) में होने वाला वार्षिक साधारण अधिवेशन लाहौर में न होकर २६-२७ जुलाई १९४७ को जालन्धर नगर दोआबा कालेज में किया गया। इस में श्री म० कृष्ण जी सर्व सम्मति से सभा के प्रधान चुने गए और उन्हीं को शेष अधिकारी तथा अंतरंग सभा और विद्या सभा के सदस्य चुनने का अधिकार भी दे दिया। उस अधिकार से श्री प्रधान ने २८ जुलाई को जो अधिकारी और सदस्य निर्वाचित किए उन नावली निम्न प्रकार है—

अधिकारी	अन्तरंग सभा के सदस्य
प्रधान—	
श्री विश्वम्भरनाथ जी	ला० चरनदास जी पुरी
ला० ब० बद्रीदास जी	ला० दिलीपचन्द जी
सेठ रामनारायण वरमानी	सेठ वृन्दावन जी
मन्त्री—श्री भीमसेन जी विद्यालंकार	ला० रामदत्त जी वकील
	ला० देवराज एम० ए०
कोषाध्यक्ष—ला० नरोतमदास जी	श्रीमान् निरंजननाथ जी
पुस्तकाध्यक्ष—पं० देवराज जी विद्यालंकार	

दोनों सभाओं के प्रतिष्ठित सदस्य–	अन्तरंग सभा के सदस्य—
पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य	म० चिरंजीलाल 'प्रेम'
प० यशःपाल जी	ला० नन्दलाल हैडमास्टर
पं० ज्ञानचन्द जी	पं० कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार
राय अमृतराय जी	पं० शिवदत्तजी सिद्धांतशिरोमणि
ला० नारायणदत्त जी	ला० मनोहरलाल शहीद
पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	ला० बालमुकन्द जी आर्य
पं० प्रियव्रत जी	वैद्य कुन्दनलाल जी

विद्या सभा के सदस्य

ला० नारायणदास कपूर, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० सत्यदेव जी लुधियाना, पं० दीनदयालु शास्त्री, प्रो० मानकचन्द जी, बावा मिलखासिंह जी, ला० मूलराज जी, ला० ज्ञानचन्द जी एम० ए०, श्रीमती चन्द्रावती जी, प्रो० हरिदत्त जी, पं० उदयवीर जी, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी।

जालन्धर में हुए अधिवेशन में परिस्थिति को देखते हुए इस बात पर भी विचार परिवर्तन हुआ कि सभा का मुख्य कार्यालय (Head Office) कहां पर रखा जाए। अधिकांश प्रतिनिधियों की विचार धारा यही थी कि सभा को प्रत्येक अवस्था में लाहौर में ही अपना केन्द्र स्थान रखना चाहिए और पाकिस्तान में रह कर भी यथा पूर्व प्रचार कार्य जारी रखना चाहिए। कुछ एक सदस्य इस विचार के भी थे कि पश्चिमी पंजाब के लिए प्रतिनिधि सभा की एक दूसरी उप सभा बना दी जाए। परन्तु यह विचारधारा स्वीकृत नहीं हुई और सभा ने निश्चय किया कि राजनैतिक दृष्टि से पंजाब का विभाजन हो जाने पर भी वैदिक संस्कृति तथा धर्म के प्रचार की दृष्टि से सभा का का कार्य क्षेत्र अक्षुण्ण है और पूर्वी तथा पश्चिमी पंजाब के लिए सभा का संगठन एक है।

सभा के मुख्य कार्यालय के प्रश्न का निश्चय करने के लिए साधारण सभा ने अंतरंग सभा को अधिकार सौंप दिया। जालंधर से वापिस जा कर तुरन्त अन्तरंग सभा का नोटस जारी किया गया

और ५ अगस्त को गुरुदत्त भवन में अन्तरंग सभा का एक अधिवेशन हुआ। उसमें सभा कार्यालय लाहौर से जालन्धर परिवर्तित करना स्वीकार किया गया। ऐसा करने में विचार धारा यह थी कि जिस प्रकार विदेशी धर्म प्रचार सस्थाओं को भारत अथवा अन्य देशों में अन्य देशों में अपने धर्म का प्रचार करते हुए अपने देश की सरकार के सहारे पर अन्य देशों में धर्म प्रचार को स्वतन्त्रता और सुरक्षा प्राप्त है उसी प्रकार हिन्दुस्तान को प्रजा रहने पर सभा को पाकिस्तान में धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता और सम्पत्ति की सुरक्षा प्राप्त होगी। इस लिए साधारण सभा की विचार धारा को दृष्टि में रखते हुए सभा की अचल सम्पत्ति के स्थानान्तरित करने के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही करने की आवश्यकता न समझी गई और ६ अगस्त से सभा का मुख्य कार्यालय जालन्धर परिवर्तित होने की सूचना नियमानुसार रजिस्ट्रार जायन्ट स्टाक कम्पनी को देकर तथा सभा की लाहौर स्थित इमारतों की आग और झगड़ों से होने वाली हानि का बीमा कराने की कार्यवाही को पूर्ण करके सभा के कार्यालय अध्यक्ष श्री युगलकिशोर जी १० अगस्त को कुछ आवश्यक कागजात ले कर जालन्धर आए और कार्यालय स्थापित करके ११ अगस्त की रात को लाहौर और १२ अगस्त की प्रातः को गुरुदत्त भवन वापस पहुँचे। किन्तु ११ अगस्त को ही लाहौर में छुरेबाजी, हत्या काण्ड और अग्निकांड प्रारम्भ हो गए थे। सब कार्य अव्यवस्थित हो गया और लाहौर नगर की अवस्था क्षण प्रति क्षण भयंकर होती चली गई। सभा प्रधान श्री म० कृष्ण जी २ अगस्त को सार्वदेशिक सभा की बैठक में सम्मिलित होने के लिए देहली आ गए थे। १३-१४ अगस्त को बड़ी कठिनाई से श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी उपप्रधान अपने स्थान लोयर माल से श्री म० कृष्ण जी के निवास स्थान निस्वत रोड़ पर पहुँचे। श्री ला० अर्जुनदेव जी एडवोकेट १३ अगस्त की प्रातःकाल धर्मान्ध यवनों द्वारा अपने मकान के निकट छुरे के हमले से जखमी हो गए और उन्हें तत्काल श्री बालकराम मैडिकल कालिज हस्पताल पहुँचाया गया। परन्तु दुर्भाग्यवश उन जखमों के कारण वे वहीं १४ अगस्त की प्रातःकाल इस असार संसार से चल बसे। उस अन्तिम समय में सभा मन्त्री भीमसेनजी उनकी मृत्यु शय्या के पास उपस्थित थे। नर्स द्वारा इन्जैक्शन

लगाने पर भी कुछ न हो सका। देखते २ प्राण पखेरू उड़ गये। सभा मन्त्री ने उनके दाह संस्कार के लिए व्यवस्था करने का यत्न किया और अनेकों कठिनाइयों के बावजूद श्री विश्वनाथ जी एम० ए० सुपुत्र शहीद श्री राजपाल जी की सहायता से उस समय यथा सम्भव वैदिक विधि से उनका दाहकर्म कराया गया।

सभा के कोषाध्यक्ष श्री नोतनदास जी के मकान को आग लगा दी गई, और वे दुष्टों द्वारा हमला करने का प्रयत्न करने पर भी, सौभाग्य से बाल २ बच गए और अमृतधारा भवन पहुँच सके। टैलीफोन ठीक कार्य न करते थे, यातायात का कोई साधन न रहा। ऐसी अवस्था में सभा के अधिकारियों का एक दूसरे से मिल कर विचार करना तो एक ओर रहा, बात चीत का कोई भी साधन न रहा। १३ अगस्त दोपहर के समय सभा मन्त्री भीमसेन जी के मकान में आग लगा दिए जाने पर वह बच कर बड़ी कठिनाई से सपरिवार डी० ए० वी० कालेज के होस्टल में पहुँचे। और वहां टैलीफोन पर गुरुदत्त भवन से सम्बन्ध जोड़ने का यत्न किया। बड़ी कठिनाई से सभा कार्यालयाध्यक्ष से फोन पर बातचीत हुई। उस दिन लाहौर नगर में सर्वत्र अराजकता और हाहाकार फैला हुआ था। इस स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए यही उचित समझा गया कि प्राणों की रक्षा के लिए गुरुदत्त भवन निवासियों को रिलीफ कैंप में आ जाना चाहिए। सभा मन्त्री भीमसेन जी ने डा० गुरबख्शराय के साथ उधर जाने वाली ट्रक पर जाकर गुरुदत्त भवन में घिरे हुए कार्य-कर्त्ताओं को लारी द्वारा लाने की कोशिश की, परन्तु लारी सीधी किला लछमनसिंह के स्त्रियों, बच्चों को लेने चली गई। स्थानाभाव से गुरुदत्तभवन निवासी कोई भी सज्जन इस लारी में न लाया जा सका। पुनः डा० गुरुबख्शराय जी रिलीफ कैंप से ट्रक को लेकर गुरुदत्त भवन पहुंचे और उनकी सहायता से बड़ी कठिनाई के साथ श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महाराज और श्री युगलकिशोर जी, विद्यालय के अध्यापक महानुभावों, विद्यार्थियों, सेवकों और गुरुदत्त भवन के अन्य निवासियों सहित रिलीफकैंप में पहुंच पाए। वहां से १७-१८ अगस्त को इन सब को अमृतसर पहुँचाया गया, उनमें से २५ अगस्त को कुछ लोग जालन्धर पहुंच गये। सभा मन्त्री १६ अगस्त को अपने परिवार के

साथ अमृतसर पहुँचे और उन्हें दो मास तक रुकना पड़ा। यातायात के साधनों की दुर्लभता तथा शरणार्थियों की भीड़ के कारण रास्ते रुके होने से कहीं न जा सके।

११ अगस्त के पश्चात् जो अवस्थाएं लाहौर नगर तथा अन्य पाकिस्तानी इलाके में पैदा हो गई थीं उन्होंने किसी भी आर्य हिन्दु मात्र का उधर रहना असम्भव बना दिया था। इस कारण वहां से केन्द्र उठाना पड़ा और सभा की जो संस्थाएँ लाहौर नगर में अथवा उस इलाके में थीं, बन्द करनी पड़ीं।

गुरुदत्त भवन निवासियों के आने के साथ ही गुरुदत्त भवन की आबादी में कत्ले आम और अग्निकांड आरम्भ हो गया। व्यक्तियों के प्राण बचा लेने के बाद, गुरुदत्त भवन से सभा का पुस्तकालय और रिकार्ड आदि समस्त सामान निकालने के लिए प्रयत्न किया गया परन्तु ट्रक और मिलिटरी के सिपाही न मिलने के कारण सफलता न हो सकी। गुरुदत्त भवन मुसलमानों से घिरा हुआ था। सामने चौपाला और भाटी दरवाजे का मुसलमान प्रधान इलाका, उत्तर पश्चिम में टकसाली दरवाजा, अराईं बिल्डिंग, बूचड़खाना और दक्षिण पूर्व में बलालगंज, दातागंजबख्श, और भाटी दरवाजे का वह इलाका जिस में प्राय: गूजर और कसाई आदि पेशा के मुसलमान रहते थे। ऐसे इलाके से गुरुदत्त भवन निवासी ३०-४० व्यक्तियों का निकल आना ही सौभाग्य की बात थी। वहां से पुस्तकें रिकार्ड, सामान आदि निकालना मिलटरी की सहायता के बिना नितांत असम्भव था। १६ अगस्त को धर्मशाला को आग लगाई गई और गुरुदत्त भवन को लूट लिया गया। इस के पश्चात् भी प्रत्येक सम्भव उपाय और साधनों द्वारा प्रयत्न किया गया परन्तु किसी प्रकार भी यह कार्य सिद्ध नहीं हो सका। श्रीमती सीतादेवी जी तथा अपने एक और व्यक्ति की रिपोर्ट है कि गुरुदत्त भवन में पुस्तकालय की पुस्तकें, सभा का रिकार्ड, विद्यालय और हाई स्कूल का सामान और वहां के निवासियों का निजी सामान आदि कोई भी वस्तु अवशेष नहीं है। और सब जगह चूल्हे बने हुए हैं और मुस्लिम शरणार्थी वहां पर ठहरे हुए हैं।

इन दिनों की स्थिति का असली चित्र सभा प्रधान श्री म०

कृष्ण जी के सभा मंत्री भीमसेन जी के नाम लिखे निम्नलिखित पत्रों में अंकित शब्दों से निर्दिष्ट किया जाना उचित प्रतीत होता है। इससे मालूम हो जायगा कि किन विकट परिस्थितियों में सभा के अधिकारियों को कार्य करना पड़ा—

प्रिय पण्डित जी, नमस्ते !

आपका १-६-४७ का पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। सभा का कार्यालय स्थायी रूप से गुरुकुल कांगड़ी में खोल दिया गया है। मैंने पण्डित यशःपाल को लिख दिया है कि वह कार्ड छपवा कर सब आर्य समाजों को इस बात की सूचना दे दें और उनकी वर्तमान स्थिति जानने का प्रयत्न करें। यह भी लिख दिया है कि कुछ एक उपदेशक रख कर शेष सब को लिख दें कि प्रान्त की वर्तमान परिस्थिति के कारण सभा इस समय उनकी सेवाओं से लाभ नहीं उठा सकती। इस समय सभा की सारी आय बन्द है और फिर कठिनाई यह है कि इस समय किसी बैंक से भी धन नहीं मिल सकता।

पश्चिमी पंजाब तो समाप्त हुआ। पूर्वीय पंजाब में भी प्रचार नहीं हो सकता जब तक कि शान्ति न हो। इस समय किसी आर्य समाज का उत्सव नहीं हो रहा, जनता की मनोवृत्ति इस समय उपदेश सुनने की नहीं। इस समय शान्त होकर ही बैठना पड़ेगा। गुरुदत्त भवन के विषय में जो भी सूचना इस समय तक मिली हैं वह यही हैं कि उपदेशक विद्यालय और स्कूल के ताले तोड़े गए हैं, किन्तु गुरुदत्त भवन सुरक्षित है। आपने लिखा है कि मि० चन्द्रा से मिल कर वैदिक पुस्तकालय तथा सभा के रजिस्टर का गुरुकुल अथवा जालन्धर लाने का प्रबन्ध किया जाय। इस समय इसमें सफलता की आशा नहीं। क्योंकि राज की सारी शक्ति लोगों को पश्चिमी पंजाब से लाने पर लगी हुई है और सरकार का कोई कर्मचारी किसी और तरफ ध्यान देने को तैयार नहीं ! ला० रामचन्द तो कई दिनों से यहां हैं। ला० जुगलकिशोर भी गुरुकुल से होकर यहां आ पहुंच गए हैं। यहां से वह अपने घर गए हैं।

वहां से होकर वह गुरुकुल जाएँगे। पण्डित विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल में हैं। पं० ठाकुरदत्त शर्मा और ला० नोतनदास (देहरादून) में हैं। ला० नोतनदास ने मुझे लिखा था कि सभा के अधिकारियों

को शीघ्र ही हरिद्वार में एकत्र होकर अपने भविष्य का निश्चय करना चाहिए। मैंने उन्हें उत्तर दिया कि इस समय यह सम्भव नहीं। रेल की यात्रा सुरक्षित नहीं। इसलिए यदि कोई सभा रखी जाए तो कोई सज्जन पहुंच न सकेंगे। अब तो केवल इतना ही हो सकता है कि यदि पता मालूम हो तो पत्र-व्यवहार द्वारा निश्चय कर लिया जाय। आपके भी प्रेस तथा घर के जलने का समाचार तो मुझे मिल गया था। अब आपको यह सूचना देता हूँ कि लाहौर में मेरा मकान लूट लिया गया है और उसमें कोई वस्तु नहीं रह गई है। आज आपके पत्र से यह मालूम हुआ कि आप १५-१०-४७ तक अमृतसर में रहेंगे। किन्तु मुझे यह सूचना मिली थी कि आप श्रीगोबिन्दपुर चले गए हैं। यह पत्र आपको अमृतसर के पते पर लिख रहा हूँ।

दिल्ली की स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं है। यहां भी गड़बड़ है और इसलिये (कर्फ्यु) लगा हुआ है। दिल्ली से अमृतसर तक सब नगरों में (कर्फ्यु) है। ऐसी अवस्था में क्या काम हो सकता है। पत्र मिलता रहे तो बस !

आपका

कृष्ण

प्रिय पण्डित जी, नमस्ते !

आपका ७-६-४७ का दस्ती पत्र मिला। परसों मैं श्री स्वामी वेदानन्द जी को सुविस्तर पत्र लिख चुका हूँ। पत्र आपके लिए भी था। आशा है कि आपने पढ़ लिया होगा। आप ने लिखा है कि 'केन्द्रीय सरकार की सहायता से गुरुदत्त भवन लाहौर से वैदिक पुस्तकालय की पुस्तकें और सभा के कार्यालय की फाइलें लाने का यत्न किया जाए। मैंने यत्न किया है किन्तु यहां कोई नहीं सुनता। केन्द्रीय सरकार का यह काम भी नहीं है, यह काम तो पूर्वीय पंजाब की सरकार का है। इस लिए उचित यह है कि आप जालन्धर जाएं। डा० गोपीचन्द भार्गव, चौधरी लहरीसिंह अथवा म० पृथ्वीसिंह आजाद से मिलकर गुरुदत्त भवन का सामान लाने का यत्न करें। यहां से कुछ सज्जन अपना २ सामान लेने लाहौर गए थे उन्हें वहां के राज्य कर्मचारियों ने सामान लाने नहीं दिया। कुछ लोग भारत इन्श्योरेन्स कम्पनी का रिकार्ड लेने वहां गए थे। उनमें से तीन मार दिए गए। दो

घायल हो गए और शेष अपनी जान बचा कर भाग आए। ट्रेडर्स बैंक के ला० शिवराम भल्ला लाहौर गए थे, किन्तु खाली हाथ वहां से लौटे।

यह आप समझ लीजिए देहली से कोई सहायता नहीं मिलेगी। जो कुछ भी होगा पूर्वी पंजाब सरकार की सहायता से ही होगा। आप जालन्धर जाकर सभा के कार्यालय के लिए कोई कोठी किराए पर लें।

जहां तक सभा के कार्यालय का सम्बन्ध है, मुझे कार्यालय के जालन्धर रखे जाने में कोई आपत्ति नहीं है। वस्तुतः सभा का निश्चय भी यही है कि कार्यालय जालन्धर में हो। और जबतक सभा अपना यह निश्चय न बदले तबतक कार्यालय जालन्धर में ही रहेगा। मैंने केवल सुरक्षित होने के भाव से कार्यालय के स्थाई रूप से गुरुकुल में खुलने की आज्ञा दे दी थी। मैंने पण्डित यशपाल को लिख दिया है कि वह जालन्धर पहुँच जाएं और वहां कार्यालय खोल दें। कल पण्डित यशपाल जी का पत्र आया कि वे तीन सितम्बर से ज्वर में ग्रस्त हैं। अब उनका बुखार हलका हो रहा है। इस से अनुमान किया जा सकता है कि उन्हें जालन्धर पहुँचने में कुछ दिन लगेंगे। बारह दिन हुए महाशय युगलकिशोर १-२ दिन के लिए अपने घर गए थे, जिस दिन वह गए उसी दिन देहली में कर्फ्यू लग गया था। इस समय तक वे नहीं लौटे। जब भी वे देहली पहुँचेंगे मैं उन्हें जालन्धर भेज दूंगा। यदि किसी और लेखक का पता आप को मालूम हो तो उसे जालन्धर बुला लें। आप सभा के मन्त्री हैं। सब काम आप को करना है। मेरा काम तो केवल निरीक्षण है, इस लिये आप सभा का काम चलावें और जो कुछ भी उचित हो करें। मैंने किसी विषय में परामर्श देना होगा तो आप को लिख दूँगा। जिन बैंकों से सभा का हिसाब है उन्हें लिखकर सभा हिसाब जालन्धर मंगवा लें। लाला नोतनदास देहरादून में हैं, उन से कुछ पूछना हो तो पत्र द्वारा पूछलें। सभा के उपप्रधान रायबहादुर बद्रीदास जालंधर में हैं। किसी विषय में आज्ञा लेनी हो तो उन से लेलिया करें। सारांश यह है कि आप को किसी भी विषय में मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं है। मैंने आज फिर पण्डित यशपाल जी को लिख दिया हैं।

आपका कृष्ण

२६ अगस्त को सभा मन्त्री भीमसेन जी की आज्ञानुसार सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री सभा प्रधान जी से आवश्यक परामर्श करने के लिए देहली गए परन्तु उधर के हालात भी बड़े खराब थे. पुनः ईस्ट पंजाब रेलवेकी मुसाफर गाड़ियोंका यातायात बन्द होगया। ऐसी परिस्थितियों में सभा का कार्यालय सभा प्रधान जी की आज्ञानुसार अस्थाई रूप से गुरुकुल कांगड़ी में रखागया। पुनः अधिष्ठाता वेद प्रचार पं० यशःपाल जी और कार्यालयाध्यक्ष श्री युगलकिशोर जी मालगाड़ी द्वारा,२२ अक्टूबर को जालन्धर पहुंचे और सभा कार्यालय का कार्य नियमानुसार श्री रा० ब० बद्रीदास जी सभा उपप्रधान की देख रेख में आरम्भ किया गया। तत्पश्चात् सभा प्रधान म० कृष्ण जी, कार्यकर्ता प्रधान श्री विश्वम्भरनाथ जी और सभा मन्त्री भीमसेन जी ने पंजाब का भ्रमण आरम्भ कर दिया। रेलों के न चलने तथा यातायात का कोई अन्य साधन उपलब्ध न होने से सभा के सदस्यों का परस्पर मिल सकना कठिन था। सभाकी स्थिति पर विचार करने के लिए २३ नवम्बर को सदस्यों की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए देहली में अंतरंग सभा और विद्या सभा के अधिवेशन बुलाए गए और लगभग ३० सदस्य उपस्थित हुए।

यद्यपि सभा का लगभग सारा नकद धन श्री कोशाध्यक्ष जी ने भारत की सीमा में परिवर्तित करा दिया था परन्तु बैंकों से धन प्राप्त होने में भी बड़ी कठिनाई थी और धन के बिना सभा का कार्य चलने में भारी रुकावट हो गई थी। श्री कोषाध्यक्ष जी ने यत्न करके कुछ धन उपलब्ध किया और शनैः शनैः धन की कठिनाई भी दूर हो गई।

जिन आर्य भाइयों के इस उपद्रव में मारे जाने की सूचना सभा को प्राप्त हुई है उन की नामावली निम्न प्रकार है—

(१) ला० अर्जुनदेव जी बगाही एडवोकेट लाहौर—यह वर्षों तक सभा की अन्तरंग सदस्य और स्कूलों के अधिष्ठाता रहे हैं।

(२) मलिक परमानन्द जी खन्ना—प्रधान आर्य समाज क्वेटा परिवार सहित।

(३) मास्टर इन्द्रजीत जी—प्रधान आर्य समाज बूड़ेवाला (मुलतान)

(४) ला० लालचन्द जी—मन्त्री आर्य समाज शर्कपुर(शेखूपुरा)

(५) ला० दुर्गादत्त जी वकील—पूर्व प्रधान आर्य समाज लायलपुर।

(६) श्री जगन्नाथ जी वकील—मंत्री आर्य समाज राजनपुर (डेरा गाजीखां)।

(७) ला० भगतराम जी—आर्य समाज मियानी(शाहपुर)अपने दोनों पुत्रों—श्री सत्यपाल जी तथा श्री प्रह्लाद जी सहित।

(८) श्री चिरञ्जी लाल जी सेठी—सदस्य आर्य समाज रावल-पिण्डी शहर।

(९) श्री रामलाल जी आर्य—सदस्य, आर्य समाज गुरुदत्त भवन, लाहौर अपने ज्येष्ठ भ्राता सहित।

(१०) डा० काशीराम जी—पूर्व प्रधान, आर्य समाज ब्लाक नंबर १२ सरगोधा।

(११) म० रामशरनदास जी—मोहल्ला सत्थां, सभासद् आर्य समाज लाहौर अपनी धर्म पत्नी सहित।

(१२) श्री महता सत्यदेव जी—अकाउण्टेण्ट सेण्ट्रल बैंक मोहल्ला सत्थां के सुपुत्र श्री..........सभासद् आर्य समाज गुरु-दत्त भवन लाहौर अपनी धर्म पत्नी सहित।

(१३) श्री रघुवीर जी साहनी—सुपुत्र लाला रामलाल जी साहनी कृपाराम मदर्स लाहौर।

सभा ने अपने इन भाइयों के वियोग पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किए।

सभा का कार्य बाकायदा चालू होने पर सब से पूर्व दो मुख्य कार्य समझे गए। एक तो पीड़ित भाइयों की सहायता का कार्य और दूसरा पूर्वी पंजाब की आर्य समाजों के पुनर्संगठन का कार्य। क्यों कि उपद्रवों के कारण देश की जो परिस्थिति हो गई थी; उस के प्रभाव से पूर्वी पंजाब का वातावरण भी सुसंगठित और निरापद नहीं रह

सका था। इधर ऐसा अनुभव होने लगा कि साधारण जनता और पीड़ित भाइयों में असीम कष्ट और उजड़ी हुइ हालत में नैतिक विश्वास में कमी आ रही है। सभा जैसी धर्म प्रचार संस्था और आर्य समाज जैसे पवित्र आंदोलन के संचालकों के लिए सर्व प्रथम यही कर्त्तव्य था कि वे भगवान की उपासना और वेदों के उपदेश, यज्ञ और सत्संगों आदि द्वारा लोगों को नैतिक पतन से बचाएं; ताकि इस के और भीषण परिणाम न निकलें। चुनांचि सभा की आर्थिक स्थिति को दृष्टि में रखते हुए जिन प्रचारकों को कुछ समय के लिए अवैतनिक अवकाश पर रखा गया था अथवा जो स्वयं अनेक असुविधाओं के कारण कार्य पर नहीं आ रहे थे, शनै २ थोड़े समय में ही उन्हें कार्य पर बुला लिया गया; और पूर्वी पंजाब भर में तथा देहली तक उन को वेदप्रचार कार्य पर बांट दिया गया। पूर्वी पंजाब की समाजों के सगठन के लिए दो दो चार २ जिलों की समाजों के अधिकारियों और प्रतिनिधियों के जिला सम्मेलन कराए गए।

कुरुक्षेत्र में सब से बड़ा शरणार्थी कैम्प है। वहां प्रचार का केन्द्र स्थापित करने के लिए सभा मंत्री भीमसेन जी देहली से ५ दिसम्बर को अम्बाला आए और वहां से आर्यसमाज के वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री राय अमृतराय जी के साथ और अम्बाला वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष पं० मुनीश्वरदेवजी को साथ लेकर कुरुक्षेत्र पहुंचे। वहां के कैम्प कमाण्डर महोदय से आर्य समाज का प्रचार केन्द्र खोलने के लिए निवेदन किया गया। प्रथम तो वे सहमत न हुए। परन्तु अंत में उन्हों ने लोगों की नैतिकता को उन्नत कर और उन की भलाई की दृष्टि से हमारी प्रार्थना मान ली और वहां पर प्रचार का केन्द्र स्थापित कर के उस केन्द्र को धन आदि की सहायता पहुंचाने के लिए जालन्धर सभा कार्यालय को निर्देश दिए। इस केन्द्र में दो साल तक बड़ा उपयोगी और सफल प्रचार कार्य हुआ है शरणार्थियों में यज्ञ, संध्या, कथा ट्रैक्टों द्वारा विशेष कार्य हुआ।

परमेश्वर की अपार दया से धीरे २ स्थिति काबू में आती आती गई और लोगों में नैतिक विश्वास और धर्म की भावना पुनः जागृत हुई और एक बड़ा भारी संकट टल गया।

पूर्वी पंजाब की समाजें कुछेक मुख्य २ समाजों को छोड़ कर प्रायः शिथिल अवस्था में थीं। पश्चिमी पञ्जाब की आर्य समाजों के अधिकांश संकट ग्रस्त भाई इधर आए। उनकी यथायोग्य सेवा और सहायता करने में भी अपना भाग पूरा न कर सके। प्रभुकी देन है कि पश्चिमीय पंजाब के आर्य भाइयों में आर्य समाज की एक विशेष लगन है और ऋषि के संदेश की एक ज्वाला अपने हृदय में लिए हुए हैं। उन्हों ने जहां अपने घोर शारीरिक परिश्रम से अपनी जीविका का प्रश्न हल किया। वहां उन्होंने अपने पूर्वीय पंजाब आर्य समाज के सदस्यों की भी शिथिलता दूर की। पूर्वी पञ्जाब की समाजों को उन्हों ने ऐसा सहारा दिया कि उन में जगृति उत्पन्न हो गई। समाजों के उत्सव भी आशातीत सफलता के साथ हुए और प्रचार कार्य अपनी साधारण स्थिति पर आ गया।

पश्चिमी पंजाब से आये हुए भाइयों के कष्ट को देखते हुए सभा ने यथाशक्ति और यथा सम्भव इन की सेवा सहायता करने का निश्चय किया। सार्वदेशिक सभा ने भी इस कार्य में सहयोग देना मान लिया और सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब दोनों की तरफ से सम्मिलत रूप में यह कार्य आरम्भ किया गया। आरम्भ में आर्य हाई स्कूल गुरुदत्त भवन लाहौर के हैडमास्टर ला० नन्दलाल जी एम० ए० को इस कार्य का चार्ज दिया गया। उन्होंने देहली तथा पजाब के मुख्य २ रिलीफ कैंपों में बस रहे आर्य शरणार्थियों की सूची तैयार कराई और आर्य समाजों का सहयोग भी इस कार्य में लिया। दिसम्बर का महीना आरम्भ हो गया था; और शीत ऋतु आ रही थी। अतः सर्व प्रथम रजाइयां बांटने की तजवीज की गई। इसके लिए प्रधान श्री रा. ब. हरी दास जी के प्रयत्न से सरकार से कन्ट्रोल रेट का कपड़ा प्राप्त हो गया और सारे पंजाब के मुख्य २ रिलीफ कैंपों में रजाइयां बांटी गईं। देहली का प्रबन्ध आर्य समाज दीवान हाल के द्वारा सार्वदेशिक सभा ने वहां पर कर दिया। इसके उपरांत ऋतु बदलने पर कमीजों पाजामों और दुपट्टों आदि के लिए सादा कपड़ा भी बांटा गया। पुनः ला० नन्दलाल जी हाई स्कूल जालन्धर छावनी के हैडमास्टर नियुक्त हो गये और यह कार्य सभा कार्यालय के ही सुपुर्द किया गया जो पहले ही इस कार्य में

सहयोग दे रहा था। पीड़ित जनता में नैतिक विश्वास और धार्मिक भावना को सुदृढ़ रखने के लिये सन्ध्योपासन विधि, सत्यार्थ प्रकाश, ऋषिवचनामृत, संस्कार विधि, और आर्य उद्देश्य रत्न माला पुस्तकें शरणार्थी जनता में बांटी गई। और हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये तथा सिखाने के लिये हिन्दी की प्रथम पुस्तिकाएं भी केन्द्रों में बांटी गई। इस कार्य में श्रीमती परोपकारिणी सभा ने बड़ा सहयोग दिया। इसके लिये उक्त सभा के मन्त्री श्री हरिबिलाश जी शारदा विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं। पुनः लोगों के मिलने जुलने और लिखने से ऐसी आवश्यकता अनुभव हुई कि पश्चिमी पंजाब से आये कुछ भाइयों को साधारण वस्त्रों, चारपाइयों और भोजन पकाने के लिए बर्तनों की आवश्यकता है। सभा ने इस आवश्यकता पूर्ति का भी प्रबन्ध किया और प्रचार अधिष्ठाता पं० यशःपाल जी की देख रेख में यह कार्य आरम्भ किया गया। अम्बाला, कुरुक्षेत्र, लुधियाना, रोहतक आदि स्थानों पर कार्यकर रहे प्रमुख आर्य भाइयों की सहायता से (ताकि कोई अधिकारी व्यक्ति इसका अनुचित लाभ न उठासकें और केवल सहायता के पात्र व्यक्तियों को ही सहायता मिल सके) बर्तन, वस्त्र औषधि आदि बांटे गए। इस कार्य में श्री राजा रामसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला छावनी ने बड़ा परिश्रम किया। श्री मनोहर लाल जी शहीद वकील सोनीपत, श्री मनोहर लाल जी आर्य पानीपत ने भी बड़ा सहयोग दिया। सहायता कार्य इस समय तक निरन्तर जारी है। सभा प्रधान श्री म० कृष्ण जी की घोषणा के अनुसार सहायता के पात्र व्यक्तियों के प्रार्थनापत्र आ रहे हैं और सार्वदेशिक सभा के पास भी बहुत से प्रार्थनापत्र पहुंचे हैं। उन प्रार्थना पत्रों के सम्बंध में उचित छान बीन करके नकद सहायता भी भेजी जा रही है ताकि लोग अपनी आवश्यकता अनुसार वस्तुएं क्रय कर लें। क्योंकि कार्यालय के लिए सभा के केन्द्र स्थान से वस्तुए पहुंचाना कठिन हो गया था और इस में व्यय भी अधिक होता है। यही यत्न किया गया है कि अधिक से अधिक संख्या में और सहायता के पात्र व्यक्तियों को ही सहायता पहुंच ई जाय। अम्बाला जिला और कुरुक्षेत्र में सहायता कार्य के सम्बन्ध में सब से अधिक परिश्रम और सहयोग श्री राय

अमृतराय जी ने दिया है। उन्होंने अपने पास से भी सहायता पहुंचाने का यत्न किया है और पीड़ित भाइयोंमें समय २ पर सहायता पहुंचाने के लिये उनके पुत्र श्री अर्जुनदेव जी स्नातक, पुत्र वधू (श्रीमती उषादेवीजी) आदि परिवारके सभी व्यक्ति दौड़धूप करते रहे। गिरे हुए स्वास्थ्य और इस वृद्धावस्था में भी श्री राय साहिब जी ने जो कष्ट उठाया है उसके लिए हम सभी उनके आभारी हैं।

पाकिस्तान में सभा की सम्पत्ति—पाकिस्तान में सामूहिक रूपसे जो क्षति हुई है। उसमें सबसे अधिक क्षति आर्यसमाज गुरुकुल विभाग को पहुँची है। अनेकों संस्थाए वहां रह गईं हैं। आर्यसमाजों के मन्दिर पुत्री पाठशालाओं और आर्यस्कूलों की बिल्डिगस, अनाथालय विभिन्न संस्थाओं का नकद धन जो वहां रह गया है उसका पूर्ण हिसाब प्राप्त होना तो कठिन ही हैं। जून जुलाई के महीनों में आर्य समाजों को सभा की ओर से आदेश दिया गया था कि वह अपना नकद धन हिन्दुस्तान की सीमा में तबदील करा लें। अथवा सभा को भेजदें। परन्तु खेद है कि आर्य समाजों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इस समय प्रथम तो कष्ट पीड़ित यत्र तत्र बिखरे हुए भाइयों का पता लगाना ही कठिन है। इस के लिए सभा निरंतर प्रयत्न करती रही है। कितनी ही बार भारत भर के लगभग सब हिन्दी अंग्रेजी और उर्दू के समाचार पत्रों में घोषणा की जाती रही। 'आर्य' पत्र द्वारा अनेक बार आर्य समाजों और आर्य भाइयों से प्रार्थना की गई कि जिस २ आर्य भाई को इस विषय में कुछ पता लगा हो उसकी सूचना सभा को दे। भारतवर्ष की आर्य समाजों को विज्ञप्ति पत्रिकाएं भी भेजी गईं। परन्तु इन प्रयत्नों के बावजूद भी बहुत थोड़ी सफलता मिली। ज्यों २ पता चलता गया आर्य भाइयों से अपने २ स्थान की आर्य समाजों औरउसकी संस्थाओं की सम्पत्तिका विवरण मांगा गया। ताकि सरकार को मांग भेजी जा सके। इसमें भी बड़ी कठिनाई हुई। परन्तु सभा कार्यालय के रिकार्ड के आधार पर (क्योंकि सभा कार्यालयाध्यक्ष ने सभा के सब रजिस्टर दस्तवेजात आदि गुरुकुल भिजवा दिए थे) तथा जो सूचनाएं सभाको प्राप्त हुईं उनके और स्मरण शक्तिके आधार पर सरकारके पास (Claim) मांग व दावाकी पहली किश्त भेज दी गई

और ज्यों २ सूचना प्राप्त होती है (Supplementry Claim) शेष मांगोंका केस भेजा जा रहा है। परन्तु अवस्था यह है कि अब भी आर्य भाइयोंसे पूरी जानकारी प्राप्त नहीं होती अथवा वे बैंकों और डाकखानों की रसीदें पास बुकें आदि सभाको नहीं भेजते। जब इनसे यह प्रार्थना की जाती है कि उन की समाज की अमानत सभा के पास धन जमा रहने के लिए बैंकों और डाकखानों आदि से सभा के नाम धन प्राप्ति का अधिकार पत्र लिखकर भेज देवें तो इस पर भी उचित कार्यवाही नहीं होती। जो विवरण प्राप्त हुआ है उस से विदित होता है कि कितनी ही समाजों का रुपया व्यक्तियों के पास है। इन सब अवस्थाओं को दिखलाते हुए सभा पश्चिमी पंजाब की आर्य समाजों के अधिकारियों सभासदों कार्यकर्ताओं और आर्य मात्र से यह प्रार्थना करना चाहती है कि वे सभा में अपनी चल और अचल सम्पत्ति के सम्बन्ध में पूरी २ सूचना भिजवाएं। बैंकों डाकखानों आदि में जमा धन को प्राप्त करने का अधिकारपत्र सभा को लिख भेजें। बैंकों और डाकखानों की रसीदें, पासबुकें आदि आवश्यक कागजात सभा के पास भेज देवें ताकि सभा उस धन को प्राप्त कर के उन की अमानत में जमा रख सके। जो धन पाकिस्तान से परिवर्तित नहीं हो सका; उसे परिवर्तित कराने की कार्य वाही की जा सके। जिन व्यक्तियों के पास धन जमा है उन्हें सभा के पास भेजने की प्रेरणा की जा सके। और इस प्रकार समाजोंको यथासम्भव अवशिष्ट आर्थिक हानिसे बचाया जा सके। सभी भिन्न २ नगरों में बस रहे, पश्चिमी पंजाब के आर्य भाइयों के पास अपने कार्य कर्त्ता भेजने का विचार रखती है। ताकि वह अधिकारियों से मिलकर उपरोक्त कार्यवाही पूर्ण कराने का यत्न करे। सभा ने ऐसे कार्य कर्ताओं को सहयोग देने के लिये भी प्रार्थना की है। सभाने सरकार को यह भी लिखा है कि वह संस्थाओंका धन प्राप्त करने में हमें सुविधा दे अथवा स्वयं प्राप्त करके अधिकृत संस्थाओं अथवा व्यक्तियों को सौंप दे। पंजाब सरकार के चीफ सैक्रेटरी के एक पत्र से विदित होता है कि सरकार ने इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया है। जायदादोंका इस समय तक जो दावा किया गया है उसकी सूची कार्यालय में उपस्थित है।

अन्य विवरण—पाकिस्तान में किसी आर्य हिन्दु मात्र का रहना असम्भव हो जाने के कारण सभा को अपनी संस्थाएं डी० ए० हाई स्कूल मिण्टगुमरी, आर्य हाई स्कूल ओकाड़ा, पाकपटन, रायसाहिब मैय्याभान, आर्य हाई स्कूल फुल्लरवान, राय बहादुर डा० हरिराम आर्य हाई स्कूल जलालपुर कीकना, आर्य हाइ स्कूल गुरुदत्त भवन बंद कर देने पड़े। सभा को पानीपत में सरकार से हाली मुस्लिम हाई स्कूल की बिल्डिंग आदि मिल जाने पर डी० ए० बी० हाई स्कूल मिण्टगुमरी के बदले में आर्य हाई स्कूल खोल दिया गया है। यह प्रसन्नता की बात है कि पानीपत के आर्य भाइयों ने उसका आर्थिक भार स्वयं उठा लिया है। रा० ब० डा० हरिराम आर्य हाई स्कूल जलालपुर कीकना की एक पुष्कल धन राशि सभा के पास है। रा० स० मैय्याभान आर्य हाई स्कूल फुल्लरवान की भी कुछ राशि मौजूद है। सभा इनके प्रयोग के लिए अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा में हैं।

पंजाब वैदिक पुस्तकालय—वैदिक पुस्तकालय की कोई पुस्तक इधर नहीं आ सकी। सारा पुस्तकालय पाकिस्तान में ही रह गया है। और पुस्तकालय में अनेकों अलभ्य २ पुस्तकें थीं। अब सभा पुस्तकालय के पुनः स्थापन के लिए योजना बना रही है।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय—लाहौर से चले आने के पश्चात् विद्यालय इस समय तक बन्द है।

दलितोद्धार सभा—दलितोद्धार सभा के मन्त्री प० रामस्वरूप जी पाराशरी १० अगस्त १९४७ को शरणार्थी कैम्पों के सम्बन्ध में केंद्रीय सरकार द्वारा वांछित सूचना संग्रह करने के लिए वहां कैम्प में गए थे। वह बड़ी कठिनाई से १४, १५ अगस्त को उधर से लौट सके। अवस्थाएं अव्यवस्थित होने से अपने घर पर बरेली चले गए और कुछ दिन बाद वहां बीमार हो गए। इस समय तक वह कार्य पर नहीं आए। दलितोद्धार सभा के प्रधान श्री ला० रोशनलाल जी स्पोर्ट्स लिमिटड वाले लाहौर से पर्याप्त हानि उठा कर अब झांसी चले गए हैं। इस प्रकार दलितोद्धार सभा का कार्य पुनः संचालित

और व्यवस्थित नहीं हो सका। जो कुछ कार्य अगस्त के बाद हुआ है वह वेद प्रचार विभाग की देख रेखमें होता रहा है। सं० २००३ के अन्त और २००४ के आरम्भ में अवस्थाएं ठीक न रहने और आर्थिक कष्ट होने पर लगभग ५००० हजार रुपये सभाकी ओर से पेशगी दिया गया था। उसकी प्राप्ति का भी कोई उपाय नहीं हो सका।

पंजाब आर्य शिक्षा समिति—समिति के मंत्री श्री लाला मूलराज जी बी० ए० बी० टी० स्थानान्तर हो कर देहली चले गए और कोई व्यवस्था न बन सकने के कारण कुछ समय तक उसका कार्य स्थगित रहा। परन्तु समिति के प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी और मन्त्री श्री ला० मूलराज के प्रयत्नों से तीन अप्रैल १९४८ से समिति के कार्य को फिर से चालू कर दिया गया है।

गुरुकुल बेट सोहनी—इस की समस्त सम्पत्ति पाकिस्तान में रह जाने के कारण इसका का कार्य सर्वथा स्थगित है। गुरुकुल बेट सोहनी, गोशाला तथा चन्दुलाल स्टेट की सारी सम्पत्ति जो अचल सम्पत्ति के रूप में थी; लगभग तीन लाख के थी, वह पाकिस्तान में छुट गई है।

आर्य वीर दल—आषाढ़ २००४ तक आर्य वीर दल का कार्य अबाधित रूप से चलता रहा। प्रान्त की स्थिति गड़बड़ हो जाने पर कार्य करने में बड़ी कठिनाइयां उत्पन्न हुईं। परन्तु आर्य वीर दल के नेता श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की देख रेख में कार्य चलता रहा। वीर दल के कार्यकर्त्ताओं ने जहां तहां (रावलपिण्डी आदि स्थानों पर) लोगोंकी प्राण रक्षा में भी सहायता की। आठ मार्ग-शीर्ष को श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के त्यागपत्र देनेपर सभा को राष्ट्र की अवस्थाओं को दृष्टि में रखते हुए यह कार्य उस रूप में स्थगित करना पड़ा। और सभा ने आर्थिक उत्तरदायित्व न उठा सकने का निश्चय किया है। वीर दल के कार्यकर्त्ताओं की प्रेरणा पर श्री भीमसेन जी विद्यालंकार को दल का अधिष्ठाता नियुक्त किया है। और अधिष्ठाता जी ने श्री मास्टर श्रवण कुमार जी को यथा पूर्व दल पति नियुक्त किया। ४, ५ मास तक दलपति जी आर्य वीर दल

की शाखाओं का संगठन का कार्य करते रहे और अन्त में उन्हों ने भी कार्य छोड़ दिया। दल की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में उन्हें सफलता नहीं मिली। इस समय यह कार्य संगठित रूप में स्थगित हैं। परन्तु अनेक स्थानीय समाजों में स्थानीय आर्य वीर दल बने हुए हैं।

औषधालय स्थापन—हीरक जयन्ती कार्य क्रम में ग्राम प्रचार के केन्द्र स्थापित करने के लिये औषधालय जारी करना भी सम्मिलित था। बसधेड़ा जिला होशियारपुर में एक धर्मार्थ औषधालय लगभग दो वर्ष से चल रहा था। उसकी बिल्डिंग आदि सम्पत्ति वर्तमान में लगभग ४०,०००) की अनुमानित है। उस के संचालकों ने यह औषधालय सभा के आधीन करने की इच्छा प्रकट की और आषाढ़ २००४ से यह औषधालय सभा के आधीन कर लिया गया है। यह एक पौराणिक क्षेत्र है। इस के इर्द गिर्द १५-२० गांवों का घेरा है और नांगल प्रोजैक्ट के निकट है। होशियारपुर जिले के उत्तरीय भाग में प्रचार का केन्द्र स्थापित करने की धारणाओं से इसे सभा के आधीन कर लिया गया है।

वसीयतें—सभा को सं० २००३ में जो वसीयतें मिली थीं उन में से श्री गुलजारीलाल जी लहौर निवासी की वसीयत द्वारा प्राप्त सम्पत्ति तो पाकिस्तान में रह गई। श्री रामेश्वर वाजपेयी उन्नाव की वसीयत के सम्बन्ध में कार्यवाही हो रही है। ला० नारायणदास जी मैना जिला अलीगढ़ निवासी की वसीयत से साढ़े १२ हजार रुपया सभा को प्राप्त हो गया है जो गुरु कुल कांगड़ी के लाभार्थ है।

दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला—यह औषधालय श्री ला० सीताराम जी मालिक फर्म मथरादास पन्नालाल अम्बाला शहर की संरक्षता में श्री राय अमृतराय जी की देख रेख में सुचारू रूप से चल रहा है। पं० रामचन्द्र जी वैद्य शास्त्री इस औषधालय के अध्यक्ष हैं।

सभा कार्यालय—इस वर्ष भी सभा के सहायक मंत्री श्री मान् निरंजन नाथ जी नियत हुए थे। श्रावण मास तक लाहौर की नगर की स्थिति ठीक न होते हुए भी वे बड़ी तत्परता से कार्य करते

रहे। पुनः वह दो तीन मास जम्मू में घिरे रहे और बाद में उन्हें देहली रहना पड़ा। सभा का कार्य क्षेत्र कम हो जाने से स्वभावतः कार्यालय के स्टाफ में कमी करनी पड़ी। सभा के कार्यालय अध्यक्ष श्री युगलकिशोर जी हैं। कार्यालय की इस अव्यवस्थित अवस्था में जिस परिश्रम और योग्यता से उन्हों ने कार्यालय को व्यवस्थित किया है। वह सराहनीय है।

लेखराम स्मारक—श्री प्रेमदेवी होमकरण और आचार सुधार निधि, रामचन्द स्मारक बटाला आदि संस्थाओं द्वारा देश की अशान्ति और अव्यवस्थित परिस्थिति में इस वर्ष कोई कार्य नहीं हो सका।

श्री चमूपति साहित्य विभाग—सभा का समस्त पुस्तक भण्डार और काग़ज़ात आदि प्रकाशन सामग्री लाहौर में ही रह गई और इस समय इस विभाग द्वारा कार्य सम्पादन नहीं हो रहा।

अनुसन्धान विभाग—इस के अध्यक्ष श्री प्रियव्रत जी हैं। पं० भगवद्दत्तजी वेदालंकार उनकी देखरेख में गुरुकुल में इस विभागमें कार्य करते हैं। प० भगवद्दत्त जी ने इस वर्ष निम्न कार्य किया—

(१) वासना नाश (बलासुर वध) प्रथम भाग ६४ पृष्ठ फुलस्केप।

(२) वासना नाश (बालासुर वध) द्वितीय भाग ५० पृष्ठ फुलस्केप अपूर्ण।

(३) अर्क (आंतरिक अग्नि) १३ फुलस्केप।

(४) बालखिल्य १२ फुलस्केप।

(५) वेदों में स्वर महिमा २४ फुलस्केप।

(६) भक्त का भगवान पर आत्म समर्पण (दाश्वान) ७० फुलस्केप।

नोट—उपर्युक्त कार्यों में संख्या १ और ६ के कार्य सं० २००३ में भी किए गए थे। इस वार में यह कार्य पूर्ण किए गए है।

शिक्षा संस्थाएं—पूर्वी पंजाब में नव स्थापित आर्य हाई स्कूल पानीपत के अतिरिक्त आर्य हाई स्कूल दीनानगर, थानेसर

एम० डी० ए० एस० हाई स्कूल मोगा, आर्य कालिज लुधियाना और डी०एम० कालिज मोगा आदि संस्थाएं चल रही हैं। डी०एम० कालिज मोगा का वृत्तान्त निम्न प्रकार है—

इस वर्ष सरकार की आज्ञा से ग्रीष्म अवकाश के पश्चात् ४-५ मास कालिज बन्द रहा है ताकि शरणार्थी भाइयों के उपयोग में आ सके। यह कालिज २१ वर्ष से निरन्तर शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा महत्व पूर्ण कार्य कर रहा है। धार्मिक और नैतिक शिक्षण का भी डिग्री क्लासिज के साथ २ उत्तम प्रबन्ध है। कालिज में यथा पूर्व २२ प्रो० और नौ अन्य कार्यकर्ता हैं। आश्रम निवास का उत्तम प्रबन्ध है। पुस्तकालय में १० हजार के लगभग उत्तम पुस्तकें हैं। पुस्तकालय का भवन अपना है। वाचनालयमें अनेक पत्र पत्रिकाएं आती हैं। साइन्स की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है। और इस विभाग में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है। परीक्षा परिणाम सभी श्रेणियों का शतप्रतिशत रहा है। विद्यार्थी सभी उपयोगी क्रीड़ाओं में भाग लेते हैं। कालिज का कन्या विभाग भी जो अलग भवन में है बड़ी उत्तमता से कार्य कर रहा है। इस वर्ष कृषि विभाग खोलने और गणित, अर्थशास्त्र अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य विषयों में आनर्स श्रेणियां खोलने का यत्न किया जा रहा है। विद्यार्थियों की संख्या ५८८ है। इस वर्ष कुल व्यय ६८०३३॥)॥ हुआ है। परन्तु कालिज के अधिक समय तक बंद रहने के कारण ३६६७४।≡)॥ का घाटा उठाना पड़ा है। दानी महानुभावों को इसकी पूर्ति की ओर ध्यान देना चाहिए। कालिज के प्रिन्सीपल श्री राजेन्द्र कृष्णकुमार जी और अधिष्ठाता सभा मन्त्री श्री भीमसेन जी विद्यालंकार रहे हैं।

दीवानचन्द स्मारक हस्पताल— यह हस्पताल श्री ला० दीवानचन्द जी ठेकेदार देहली के दान से सैदपुर जिला जेहलम में चल रहा था। उपद्रवों में इसे छोड़ना पड़ा और इस के इन्चार्ज कविराज हंसराज जी वैद्य बड़ी कठिनाई से भारत की सीमा में पहुँच सके। कुछ दिन हस्पताल का कार्य बन्द रहा। परन्तु हस्पताल के अधिष्ठाता और आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता श्री ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली के उद्योग से देहली के निकट औचन्दी नामक

स्थान पर १५ मार्च १९४८ से पुनः स्थापन कर दिया गया है। लगभग ३३ मास में रोगियों की संख्या पौने चार हजार के लगभग पहुंच गई है कविराज हंसराज जी इस के अध्यक्ष हैं।

सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य—माच से जालन्धर कार्यालय से प्रकाशित हो रहा है। पुरानी ग्राहक सूची लाहौर रह गई है। अब नए सिरे से ग्राहक बनाए जा रहे हैं।

आय व्यय—वेद प्रचार चार आना दशांश तथा अन्य निधियों के आय व्यय का विवरण बजट में अंकित है, जो अवस्थाओं को देखते हुए संतोषजनक है। गत वर्षों के हिसाब के कागज लाहौर रह जाने के कारण बेलेंसशीट और आर्थिक स्थिति तैयार करने में बड़ी असुविधा हुई है। अंत में प्रभु से प्रार्थना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

सं० २००५ की रिपोर्ट

सभा के इतिहास में यह वर्ष (सं०२००५ दयानन्दाब्द १२४) महत्व पूर्ण रहा। १९४७ अगस्त के पंजाब विभाजन के बाद पंजाब में वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले आर्य समाज में आर्थिक क्षति और सामाजिक संगठन के छिन्न भिन्न होने के कारण गहरी निराशा छागई थी। सभा समाजों के प्रधान, मन्त्री, उपदेशक, धर्म पालन करने का सकल्प करने वाले आर्यसभ्यता के प्रचारक, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थ, सन्यासी,ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र आदि साधारण आर्य जनता किंकर्तव्यविमूढ़ हो, राजनैतिक सामाजिक परिवर्तनों की उथल पुथल में स्पष्ट मार्ग ढूढ़ने से हताश हो गई थी। पूर्वी पंजाब के आर्य सामाजिक वातावरणमें निराशा से पैदा हुआ क्रोध आवेश अनेक रूपों से प्रकट होता था। अनेक भाइयों ने सामूहिक रूप से आर्यसमाज को राजनीति में प्रविष्ट करा कर, इस गहरी निराशा को दूर करना चाहा। अनेकों ने व्यक्तिगत रूप से अपने आप को सामाजिक संगठन से पृथक् होकर व्यक्तिगत शक्ति प्राप्त करने का संकल्प किया। आर्य समाजों के अनेक मन्दिर पश्चिमी पजाब के शरणार्थियों के निवासस्थान बने। साप्ताहिक सत्सगों के वातावरण इन दुःखियों के आर्तनाद से और निराशावाद की आहों से परितप्त होने लगे। समाज मन्दिरों के सत्संगों तथा सत्संगियों में आशावाद का संचार करने के लिए अनेक प्रकार के यत्न किये गये। सम्मेलन किये गये। दैनिक कथाओं की प्रथा पर विशेष बल दिया गया। प्रारम्भ में इन यत्नों से कोई विशेष सफलता न हुई। कोरे मौखिक प्रचार का असर अस्थाई होता था। इस लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पीड़ितों की दुरवस्था तथा दुःख में सक्रिय सहानुभूति प्रकट करने के लिए पंजाब पीड़ित सहायता का कार्य भी प्रारम्भ किया गया। समाचारपत्रों द्वारा पीड़ित आर्य भाइयों को सहायता प्राप्तिके लिए सभा कार्यालय के साथ

पत्रव्यवहार करने की प्रेरणा की। अनेक उजड़े घरों के पीड़ित व्यक्तियों को वस्त्र, अन्न, रुपये द्वारा स्वावलम्बी होने के लिए सहायता दी गई, अनेक रोगियों, अगहीनों तथा असहाय विद्यार्थियों को सहारा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्वी पंजाब के वातावरण में निराशा के स्थान पर आशावाद का संचार होने लगा। शरणार्थियों तथा पूर्वी पंजाब के आर्य भाइयों ने मिल कर आर्यसमाज मन्दिरों में फिर से आत्मिक और धार्मिक उत्साह को प्रदीप्त किया। दैनिक और साप्ताहिक सत्संगों में रौनक बढ़ने लगी। आर्य जनता में स्वाध्याय और आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के सार्वभौम धार्मिक स्वरूप को मूर्त रूप देने वाले आर्यसमाज के दश नियमों की ओर आकर्षण पैदा होने लगा। आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलते हुए जिस सार्वभौम मानव धर्म के आदर्शवाद की ओर जनता का ध्यान खींचने के लिए भारी यत्न किया था। स्वदेश विदेश के राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक उथल पुथल के विनाशजनक परिणामों ने इसकी आवश्यकता को विचार-शील व्यक्तियों तथा साधारण जनता के सामने उत्कट रूप में प्रकट किया। पिछले ५० वर्षों से आर्यसमाज जिस आदर्शवाद का प्रचार कर रहा था, आज उसको व्यवहारवाद बनाने के लिये स्वदेश विदेश में अनुकूल वातावरण पैदा हो गया था। स्वदेश में नव निर्मित सर्वोदय समाज इसी वातावरण की उपज है। विदेशों का संयुक्तराष्ट्र सङ्घ आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की ओर संकेत कर रहा है। संसार के बड़े बड़े विद्वान मानव धर्म और सर्व तंत्र, सर्व भौम महाव्रतों का सहारा लेकर ही संसार में शान्ति स्थापना की ओर प्रवृत्त होना चाहते हैं। पंजाब विभाजन और बंगाल विभाजन को पैदा करने वाले पाकिस्तान हिन्दुस्तान के समुद्र मंथन से पैदा हुए इस सार्वभौम महाव्रतों पर आश्रित मानव धर्म की चाह रूपी अमृत की भूख ने, हमारे लिए कार्य करने का विस्तृत क्षेत्र खोल दिया। इस समय आर्य धर्म के वीर प्रचारकों के लिए घर, बाहर, ऊपर नीचे चारों तरफ अनुकूल वातावरण पैदा हो रहा है। सम्वत् २००५ वर्ष की समाप्ति पर हमें सन्तोष है कि हमारे हृदयों में निराशावाद के स्थान

पर आशावाद का संचार हो रहा है। परावलम्बी बन कर जीवन निर्वाह करने के स्थान पर स्वावलम्बी बनने की प्रवृत्ति पैदा हो रही है। मानव जीवन के सब क्षेत्र हमारे लिये खुले हुए हैं। उपस्थित प्रतिनिधियों की भारी संख्या इस उत्साह का जीवित जागृत प्रमाण है। पंजाब में इस वातावरण के पैदा करने में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने बड़ा भाग लिया है—प्रतिनिधि सभा की प्रतिनिधि रूप अन्तरंग सभा तथा विद्या सभा के सदस्य समय २ पर सभा के कार्य में सहयोग देते रहे।

कार्यालय—आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब सम्वत् २००५ की समाप्ति के पश्चात् अपने कार्यकाल के ६४ वर्ष समाप्त कर चुकी है। यह सभा जालन्धर नगर में स्थापित हुई। पुनः इसका कार्यालय लाहौर चला गया। शनैः २ एक विशाल वृक्ष की स्थिति प्राप्त की। लाहौर में गुरुदत्त भवन जैसे विशाल भवन में इसका कार्यालय था परन्तु समय की गति विचित्र है! आज वही कार्यालय पुनः आर्य समाजजालन्धर के एक कमरे में सीमित है।

सम्बन्धित आर्यसमाजें—सम्वत् २००३ तक इसके आधीन लगभग ११०० आर्य समाजें थीं। जिनमें से लगभग छः सौ आर्य समाजें पाकिस्तान में रह गईं और पूर्वी पंजाब में गत दो वर्षों में कुछ और नई समाजें स्थापित करके इस समय लगभग छः सौ आर्य समाजें सभा से सम्बन्धित हैं।

प्रतिनिधि सदस्य—सम्वत् २००४ के अन्त पर ९३ आर्य समाजों की ओर से २१३ प्रतिनिधि सभा के सदस्य थे। सम्वत् २००५ में इस संख्या में वृद्धि हुई और सम्वत २००५ के अन्त पर १०४ आर्य समाजों की ओर से २३६ प्रतिनिधि सभा के सदस्य हैं।

शोक समाचार—महान दुःख से लिखना पड़ता है कि इस वर्ष में हम से तीन प्रतिष्ठित प्रतिनिधि महानुभावों का सदैव के लिए वियोग हो गया।

(१) श्री स्वा० ब्रह्मानन्द जी महाराज—आप वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के उपदेशक और हरयाना मण्डल के अध्यक्ष

रहे हैं। आप श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रिय शिष्यों में से थे। १६२५ ई० में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर मथुरा में आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी से संन्यास ग्रहण किया। आपने सभा के वैतनिक उपदेशिक पद से त्याग पत्र देकर अवैतनिक रूप से समाज की सेवा आरम्भ की। आप इस बीच में गुरुकुल झज्झर के आचार्य पद को भी सुशोभित करते रहे। दिसम्बर १६४८ में गुरुकुल कांगड़ी में वृद्धावस्था के कारण स्वर्गवास हो गए।

(२) श्री ला० नोतनदास जी—लगभग तीस वर्षों तक सभा के कोषाध्यक्ष रहे। अर्थ विषय में आप निपुण और कुशल थे। इन के कोषाध्यक्ष काल में सभा का कोष निरन्तर वृद्धि पाता रहा। आप सभा के अतिरिक्त पं० ठाकुरदत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट तथा महात्मा खुशीराम ट्रस्ट आदि संस्थाओं के भी कोषाध्यक्ष थे। यह उनकी निस्वार्थ सेवा का ज्वलन्त प्रमाण है। वे जिस कार्य को अपने जिम्मे लेते थे उसे पूरे मनोयोग से निभाते थे। पाकिस्तान बनने पर लाहौर से आने के बाद दिनों दिन उनका स्वास्थ्य गिरता ही गया। अन्त में ११- -४६ को वे दिल्ली में स्वर्ग सिधार गए।

(३) श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी—श्री पण्डित जी अपने यौवन काल से ही समाज और सभा की सेवा में लग गए थे। और लगभग ४५ वर्ष निष्काम सेवा करते रहे। श्री पण्डित जी की अनुपम कार्य क्षमता, जीवन की सादगी, स्वभाव की सरलता, तपोमय जीवन और अर्थ शुचिता, प्रत्येक युवक के लिए आदर्श तथा अनुकरणीय रही है। वे सच्चे अर्थों में निष्काम कर्म योगी थे। प्रारम्भिक आयु में ही गहरी निस्वार्थ भावना को हृदय में लेकर पण्डित जी ने आर्य समाज की सेवा में पदार्पण किया और अपने जीवन के अन्तिम दिनों तक वे अपने अभीष्ट ध्येय की पूर्ति में सर्वतोभावेन लगे रहे। श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी ने विभिन्न स्थितियों में आर्यसमाज की सेवा की। वे सभा के प्रधान, उपप्रधान कोषाध्यक्ष और गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता भी रहे। श्री पण्डित जी अहंभाव की भावना से ऊपर उठे हुए थे। अपना यौवन, व्यवसाय और शारीरिक सुख आर्य समाज और सभा की सेवा में अर्पण करके भी उनमें कभी

अभिमान का भाव पैदा नहीं हुआ। मतभेद रखने वाले विरोधियों से प्रेम करना उनके जीवन का एक अनुपम पहलू था। सांसारिक दृष्टि से संन्यासी न होते हुए भी वे वास्तव में सच्चे अर्थों में संन्यासी थे। ऐसे आदर्श, तपोनिष्ठ तथा कर्मठ ब्राह्मण का वियोग एक ऐसी हानि है जिसकी पूर्ति कठिन ही है। हृदय गति बन्द होने से पहली और दूसरी अप्रैल की बीच की रात में श्री पण्डितजी ने अन्तिम श्वास लिया और इस असार संसार से बिदा हो गए।

सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन मई मास के अन्तिम सप्ताह के शनि, रवि को होने की प्रथा गत कई वर्षों से चली आती है। सन् १९४७ ई० में लाहौर के अशान्त वातावरण के कारण इस में परिवर्तन करना पड़ा। और सभा का अधिवेशन मई में लाहौर न कर जौलाई में जालन्धर में किया गया। इस वर्ष भी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन जौलाई में ही करने का निश्चय किया। जो ३१ जौलाई १ अगस्त १९४८ को गुरुकुल कांगड़ी में हुआ। इस अधिवेशन में श्री महाशय कृष्ण जी सर्व सम्मति से सभा के प्रधान निर्वाचित हुए और २००४ की भान्ति सभा के शेष अधिकारी तथा अन्तरंग सभा और विद्या सभा के सभी सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार भी उन्हीं को सौंपा गया। श्री प्रधान जी ने साधारण सभा प्रदत्त उस अधिकार से सम्वत् २००५-६ के लिए सभा के निम्न अधिकारी तथा अन्तरग और विद्या सभा के सदस्य नियत किए—

सभा के निर्वाचित अधिकारी

प्रधान—
श्री म० कृष्ण जी

उपप्रधान—
पं० विश्वम्भरनाथ जी
रायबहादुर बद्रीदास जी
ला० नारायणदत्त जी

मन्त्री—पं० भीमसेन जी

संयुक्त मन्त्री—
श्री निरजंननाथ जी

कोषाध्यक्ष—
ला० नोतनदास जी

पुस्तकाध्यक्ष—
ला० चरणदास जी पुरी

पंजाब प्रांतीय न्याय उपसभा—

(१) श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज।

ला० चरणदास जी पुरी एडवोकेट।

अन्तरंग सभा और विद्या सभा के सम्मिलित सदस्य

पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य
पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति
पं० ज्ञानचन्द जी
रा० सा० अमृतराय जी
पं० यशःपाल जी
पं० प्रियव्रत जी
पं० बुद्धदेव जी

अन्तरंग सदस्य

श्रीमान् निरञ्जननाथ जी
ला० मनोहरलाल 'शहीद'
ला० बालमुकुन्द जी आर्य
ला० देवराज चड्ढा एम० ए०
श्री राजारामसिंह जी
ला० रामदत्त जी वकील
सेठ वृन्दावन जी सोंधी
स्वा० वेदानन्द तीर्थ जी महाराज
वैद्य कुन्दनलाल जी
ला० नन्दलाल जी हैडमास्टर
ला० अनन्तराम जी
पं० शिवदत्तजी सिद्धान्त शिरोमणि
म० चिरंजीलाल जी प्रेम

विद्या सभा के सदस्य

डा० हरिप्रकाश जी
श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी
पं० दीनदयालु जी शास्त्री
प्रिंसिपल मानकचन्द खोसला
ला० नारायणदास कपूर
पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय
पं० मनोहरलाल विद्यालंकार
पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार
प्रो० वागीश्वर जी
आचार्या चन्द्रावती जी
ला० मूलराज बी० ए० बी० टी०
ला० नवनीतलाल जी
पं० सत्यदेव जी वेदालंकार

उप सभाएं तथा अंतरंग सभा ने कार्य संचालन में सुविधा के लिए विभिन्न विभागों के निम्न अधिष्ठाता तथा उप सभाएं नियत की।

वेद प्रचार, रामदेव स्मारक, आर्य धर्मार्थ हस्पताल बसधेड़ा। शुद्धि तथा जाति रक्षा, दलितोद्धार, विभागों के अधिष्ठाता—पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार।

छीना भूमि के अधिष्ठाता ला० दयाराम जी श्री गोविन्दपुर।

रामचन्द्र स्मारक बटहरा के अधिष्ठाता ला० अनन्तराम जी जम्मू।

श्री दीवानचन्द स्मारक संस्थाओं के अधिष्ठाता—ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली।

आर्य हाई स्कूल ज्वालापुर; आर्य हाई स्कूल मायापुर, आर्य हाई स्कूल थानेसर, आर्य हाई स्कूल पानीपत; आर्य हाई स्कूल दीना नगर के अधिष्ठाता पं० विश्वम्भरनाथ जी।

धनविनियोगिनी उपसभा के सदस्य—

पं० विश्वम्भरनाथ जी, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, ला० नरायणदत्त जी ठेकेदार, ला० नारायणदत्त जी कपूर, ला० नोतन दास जी, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, ला० चरणदास जी पुरी एडवोकेट।

डी० एम० कालेज मोगा तथा एम० डी० ए० एस० हाई स्कूल मोगा उपसभा—

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (प्रधान), रायबहादुर डा० मथुरादास जी (कार्यकर्ता प्रधान), मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (अधिष्ठाता), रायबहादुर बद्रीदास जी, पं० विश्वम्भरनाथ जी, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, पं० ज्ञानचन्द जी, प्रिंसिपल डी० एम० कालेज मोगा, चौ० गणपतराय जी मोगा, ला० चाननराम जी मोगा।

आर्य हाई स्कूल दीनानगर स्थानिक उपसमिति—

श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज (प्रधान), श्री अलखधारी जी एडवोकेट मैनेजर, श्री बखशी राम जी असिस्टेंट मैनेजर, श्री कर्मचन्द जी हैडमास्टर, ला० देवदत्त ओहरी, ला० देवराज महाजन, ला० देवराज बेरी, ला० भद्रसेन ओहरी, ला० देवराज अग्रवाल, सरदार रामसिंह जी, ला० सांझीराम जी सैक्रेटरी, ला० श्यामलाल जी ज्वाइण्ट सैक्रेटरी।

इन के अतिरिक्त शेष विभागों यथा "आर्य" साप्ताहिक श्री चमूपति साहित्य (पुस्तक प्रकाशन) तथा पीड़ित सहायता निधि आदि विभागों के अधिष्ठाता श्री सभा मन्त्री जी नियत हुए।

इसी प्रकार आर्य विद्या सभा ने भी गुरुकुलों के प्रबन्ध के लिए विभिन्न उपसमितियां निरीक्षक आदि नियत किए।

दुर्भाग्यवश श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी और ला० नोतनदास जी के स्वर्गवास के कारण अन्तरग सभा को पुनः उनकी स्थान पूर्ति करनी पड़ी। प० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, सभा के उपप्रधान नियत हुए और ला० चरणदास जी पुरी एडवोकेट जो पुस्तकाध्यक्ष भी हैं, कोषाध्यक्ष नियत हुए।

आर्य हाई स्कूल थानेसर के अधिष्ठाता डा० एम० डी० चौधरी अम्बाला आर्य हाई स्कूल ज्वालापुर के अधिष्ठाता—प० दीनदयालु जी शास्त्री एम० एल० ए० नियत हुए।

इसी प्रकार अन्य विभागों में भी पं० विश्वम्भरनाथ जी और ला० नोतनदास जी की स्थान पूर्ति की गई।

शिक्षा संस्थाओं का कार्य विभाग श्री रायबहादुर दीवान बद्री-दास जी के सुपुर्द किया गया और ला० नन्दलाल जी हैडमास्टर को इस कार्य निमित्त उन का सहायक नियत किया गया।

नवीन शिक्षा संस्थाएँ—सभा ने यूनिवर्सिटी शिक्षा-क्षेत्र में भी कार्य करने की जो नीति अपने साधारण अधिवेशन तिथि ६-५ ४४ के प्रस्ताव सं०...४...द्वारा अपनाई थी उसके अनुसार सभा के अधिकारी इस दिशा में भी प्रयत्नशील रहे, और निरन्तर सफलता प्राप्त करते गये। चुनाचे थोड़े समय में ही ओकाड़ा; पाकपटन, भल-वाल, जलालपुर कीकना, फुलरवान, गुरुदत्त भवन लाहौर, दीनानगर और थानेसर में आर्य हाई स्कूलों की स्थापना की गई। बटवारा के फलस्वरूप अन्तिम दो संस्थाओं को छोड़ कर यह सब नव स्थापित संस्थाएं पाकिस्तान में रह गईं। इस कार्य के अधिष्ठाता पण्डित विश्वम्बरनाथ जी थे। पं० जी अपनी स्वाभाविक अखुट कार्यक्षमता तथा सभा के काम में रुचि के कारण इधर और संस्थाएं स्थापित करके सभा के कार्य क्षेत्र को बढ़ाने में लग गए और आर्य हाई स्कूल माया-पुर तथा ज्वालापुर हाई स्कूल ज्वालापुर दो संस्थाएं इस वर्ष उनके प्रयत्न से स्थापित हुईं जिनका कार्य वृत्तान्त पृथक् अंकित है।

विशेष—इस वर्ष सभा का साधारण अधिवेशन सभा के ६५ वर्षों के इतिहास काल में सर्व प्रथम गुरुकुल कांगड़ी में रखा गया। ३१ जोलाई और प्रथम अगस्त १६४८ को गुरुकुल में हुआ। इस बार सभा के अधिवेशन की विधि में भी विशेषता रखी गई और सभा के संगठन नियमानुसार प्रतिवर्ष किए जाने वाला सभा का साधारण अधिवेशन जो पूर्व दो दिन करने की प्रथा चली आती थी, केवल एक दिन रक्खा गया और उस से पूर्व एक दिन आर्य सम्मेलन बुलाया गया। पाकिस्तान से आने के बाद छिन्न भिन्न अवस्थाओं में सभा के भविष्य पर भली भांति विचार करने के लिए इस सम्मेलन का बुलाया जाना आवश्यक समझा गया। इस सम्मेलन में उपस्थित आर्य भाइयों ने आर्य समाज की उन्नति और सभा के कार्यक्षेत्र को फिर से दृढ़ करने का के लिए अपने अपने सुझाव दिये और वेद प्रचार प्रणाली में परिवर्तन तथा उपदेशक विद्यालय को पुनः जारी करने की आवश्यकता प्रकट की। विचार विनिमय के पश्चात् निम्न सज्जनों की एक उपसमिति निश्चित की गई कि वह इन दोनों विषयों पर विचार करके अपनी रिपोर्ट अन्तरंग सभा में प्रस्तुत करे।

श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महारज (नियोजक), पं० विश्वंभर नाथ जी, प० भीमसेन जी, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालकार, पं० मुनीश्वर देव जी सिद्धान्तशिरोमणि, पं० ज्ञानचन्द जी।

इस उपसभा ने वेद प्रचार प्रणाली और उदेशक विद्यालय के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट भेजी वह २७ नवम्बर की अन्तरंग सभामें प्रस्तुत हुई। अंतरंग सभा ने उस रिपोर्ट को वेद प्रचार प्रणाली सम्बन्धी भाग स्वीकार कर लिया और उसके अनुसार इस वर्ष के शेष भाग में कार्य भी किया गया। तदनुसार ग्राम प्रचार के लिए सम्वत् २००६ के बजट में विशेष रूप से राशि रखी गई है। उपदेशक विद्यालय सम्बन्धी रिपोर्ट को अन्तरग सभा ने अपने कुछ विचारों के साथ उप सभा के पास पुनर्विचारार्थ वापिस भेजा। यत्न करने पर भी उस संबन्ध में अभी तक कोई रिपोर्ट नहीं प्राप्त हुई और इस संबंध

में सभा जो विचार करेगी तदनुसार कार्यवाही कर दी जायगी।

आर्य सम्मेलन में पंजाब की वर्तमान राजनीति से साम्प्रदायिकता तथा उससे उत्पन्न होने वाले संकट को दूर करने के लिए विचार करके कार्यसंचालन के लिए पूर्णाधिकार प्राप्त एक कार्यवाहक समिति निम्न महानुभावों की बनाई गई थी—

श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ जी महाराज, पं० सत्यदेव जी वेदालंकार लुधियाना, पं०बुद्धदेव जी विद्यालंकार, ला० मनोहरलाल जी 'शहीद' वैद्य कुन्दनलाल जी, ला० बालमुकुन्द जी आर्य, पं० ज्ञानचन्द जी।

इस समिति को अपने में और सदस्य सम्मिलित करने का अधिकार भी आर्य सम्मेलन में दिया गया था।

सभा का मुख्य कार्यालय (हैड आफिस)—

जालन्धर आने पर सभा के लिए उपयुक्त स्थान देने के लिए सरकार से प्रार्थना की गई थी। परन्तु कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिला। भागदौड़ करने पर टांडारोड पर द्वाबा हाई स्कूल के पीछे कुछ कच्चे पक्के मकान अलाट हुए। परन्तु पांच मास के निरन्तर प्रयत्न के पश्चात् तीन चार मकानों का अधूरा कब्जा मिला। इस के अतिरिक्त अभी तक सभा के नाम अलाट हुए किसी मकान का कब्जा सभा को नहीं मिला। गत साधारण सभा में सभा के कार्यालय के लिए स्थान का विषय पेश हुआ था तो यह आशा थी कि यह मकान सभा को को मिल जायेंगे तो जैसे-तैसे काम चल जायगा परन्तु। अब इस विषय में कोई आशा प्रतीत नहीं होती। सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री रायबहादुर बद्रीदासजी ने इस विषयमें डिस्ट्रिक्ट रिहैबिलिटेसन आफिसर जालन्धर को पत्र लिखा और डिप्टी कमिश्नर से भी मुलाकात की परन्तु कोई सफल परिणाम नहीं निकला। प्रधान मन्त्री महोदय को भी पत्र लिखा गया किन्तु सब यत्न बेकार रहे। इस समय सभा का कार्यालय आर्य समाज मन्दिर जालन्धर के एक कमरे में लगता है।

सभा का कार्यालय—श्रीमान् निरञ्जननाथ जी संयुक्त मन्त्री की देख रेख में भली प्रकार कार्य करता रहा। श्री युगल किशोर जी

सभा के कार्यालयाध्यक्ष है। सभा का रिकार्ड पाकिस्तान में रहजाने के कारण कार्य संचालन में कई प्रकार की दिक्कतें आ जाती हैं। श्रीमान् निरंजननाथजी का मैं सभा की ओरसे और अपनी ओरसे विशेष रूपेण विशेष धन्यवाद करता हूँ। उन्हों ने गत दो वर्षों में मेरे कार्य भार को बहुत कुछ हलका किए रखा है। सभाके कार्य में उनका प्रेम और रुचि अनुकरणीय है। वे वयोवृद्ध सज्जन हैं लेकिन देहलीमें अपने परिवार में रहने का सुख चैन छोड़कर वे प्रतिमास वे जालन्धर आकर लगभग आधा मास और कभी अधिक भी सभा कार्यालय के कार्य का संचालन करते हैं और सात आठ घंटे निरन्तर कार्यालय में बैठते हैं। गत पांच वर्षों से वे इस कार्य को निभा रहे हैं। हमारी इच्छा है कि उन्हें चिरायु प्राप्त हो और वे अपने गत जीवन की भान्ति आर्य समाज और सभा की सेवा में लगे रहें। सभा के कार्यालय के कार्यकर्ताओं की संख्या लाहौर में १२ थी, कार्यक्षेत्र घटजाने से अब एक तिहाई रह गई है। सभा के अकाऊंटैन्ट अपने निजू कारणों से त्याग पत्र दे कर चले गए हैं और नये कार्यकर्ता की नियुक्ति की गई है। कार्य की दृष्टि से सभा कार्यालय के तीन भाग हैं। अकाऊंटस, पत्र व्यवहार और सम्पत्ति रक्षा। इस वर्ष २५०० की आय रसीदें और ८१४ व्यय वौचर बनाए गए। ६२३६ सभा कार्यालय पत्र लिखे गये। पाकिस्तान में जो सम्पत्ति रह गई है उसका क्लेम तैयार करके सरकार को भेजा गया। यह कार्य इस वर्ष विशेष रूप से करना पड़ा। आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं का जो धन बैंकों डाकखानों या व्यक्तियों के पास है उस की प्राप्ति का यत्न भी किया गया। परन्तु बैंको की नीति डाकखानों की कार्य विधि और व्यक्तियों की मनोवृत्ति कुछ इस प्रकार की है कि धन की प्राप्ति में बड़ी कठिनाई हो रही है और सफलता नाम मात्र की हुई है। समाजों का हजारों रुपया खतरे में है और बहुत सा नष्ट भा हो चुका है। पाकिस्तान की समाजों के अधिकारियों और अकाऊंट्स के ओपरेटर्स से इस की सुरक्षा के लिये वांछित सहयोग नहीं मिलता। इस लिये आवश्यकता है कि प्रतिनिधि महानुभाव और आर्य भाई उन पर बल देकर प्रेरणा करें ताकि समाजों की धन राशि नष्ट न हो और कानूनी कार्यवाही करने के लिए बाधित न होना पड़े। सभा का निश्चय है कि समाजों का धन अमानत में सभा के

पास सुरक्षित रहेगा। उसे समाज के हितार्थ प्रयोग किया जा सकेगा सभा का अदालती कार्य श्री राय बहादुर दीवान बद्रीदास जी कार्य-कर्त्ता प्रधान और ला० चरणदास जी पुरी एडवोकेट सभा कोषाध्यक्ष तथा चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट के आदेशानुसार होता रहा।

पंजाब वैदिक पुस्तकालय—अभी तक सभा कार्यालय का कोई स्थान निश्चित न होने से पुस्तकालय का पुनःस्थापन नहीं किया जा सका। स्थान निश्चित होते ही इस विषय में प्रयत्न आरम्भ कर दिया जायगा।

अनुसंधान—यह विभाग इस वर्ष अंतरंग और विद्या सभा दोनों की सहमति से गुरुकुल कांगड़ी के आधीन कर दिया गया है।

लेखराम स्मारक आचार सुधार निधि—इस वर्ष लेखराम स्मारक निधि से पं० तुलसीराम जी की विधवा को सहायता देने के अतिरिक्त ट्रैक्ट प्रकाशन आदि कार्य नही हो सका। वर्तमान महगाई के समय में इतनी थोड़ी राशि से कोई उपयोगी मुद्रण और प्रकाशन हो सकना कठिन ही है।

चमूपति साहित्य विभाग—इस विभाग का पूर्व स्टाक लाहौर से नहीं आ सका था। इस वर्ष "शक्ति रहस्य" तथा सत्संग-पद्धति" नामक दो पुस्तकें क्रमशः एक हजार और दो हजारकी संख्या में छपवाई गई।

पंजाव आर्य शिक्षा समिति—आर्य शिक्षा समिति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं पृथक् रजिस्टर्ड संस्था। पाकिस्तान बनने के बाद इसकी स्थिति बड़ी डांवाडोल सी बनी रही। बैंकों से धन मिलने में कठिनाई होने के कारण आर्थिक कठिनाई भी बहुत हुई। प्रभु कृपा से इस वर्ष समिति अपने कार्य को फिर से चलाने के योग्य हो गई है इसके प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी थे। उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् ला० कृपाराम हैडमास्टर इस के कार्यकर्ता प्रधान हैं। और समिति के सुयोग्य प्राचीन मन्त्री श्री ला० मूलराज जी बी० ए० बी० टी० इसके प्रचीन मन्त्री हैं। श्री जयदेव जी विद्यालंकार निरीक्षक हैं। इन्होंने इस वर्ष ३४ स्कूलों का निरीक्षण किया।

दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला शहर

यह औषधालय राय० सीताराम जी मालिक फर्म मथुरादास पन्नालाल अम्बाला शहर की संरक्षता में सुचारु रूप से चल रहा है। इसके प्रबन्ध के लिए एक स्थानीय कमेटी नियत है। श्री राय अमृतराय जी इसके प्रधान हैं। श्री ला० सीताराम जी ने इस औषधालय का सुचारु संचालन एक प्रकार से अपने जीवन का ध्येय बनाया हुआ है। वे इसे आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने और वर्तित व्यय में घाटा न देने के लिए सभा को स्वेच्छा से पूर्ण सहयोग देते हैं। प० रामचन्द्र जी वैद्यशास्त्री इस औषधालय के सुयोग्य चिकित्सक हैं। इस से अम्बाला नगर की जनता बहुत लाभ उठा रही है।

आर्य पत्र—पाकिस्तान से आने के पश्चात् जालंधर में नये सिरे से मार्च १९४८ में डैक्लेरेशन लिया गया। सम्वत् २००५ के बजट में इसका ८००० व्यय का बजट रखा गया था। अनुमान यह था कि कम से कम इसके १००० ग्राहक बन जायेंगे; फिर भी सभा ने व्यय की पूर्ति के लिए अपने विभिन्न विभागों पर इसका २८००) का घाटा डालना स्वीकार किया था। परन्तु इस वर्ष घाटे की मात्रा ३३००) जा पहुँची और आर्य समाजों तथा आर्य भाइयों से सहयोग न मिलने के कारण अधिकारियों की इच्छा पूरी न हो सकी।

इसके निम्न विशेषांक निकाले गये—१. दीवाली अंक २. शिव-रात्री अक ३. आर्य समाज अंक।

आर्य पत्र का सम्पादन सभा मंत्री जी, श्री पं० कृष्णचन्द्र जी शास्त्री (जो कि उपदेशक विद्यालय के स्नातक भी हैं) के हाथों में था। ऐसा अनुभव हुआ है कि इसकी ग्राहक संख्या कम होने का मुख्य कारण इस पत्र को हिंदी भाषा में निकालना है जो कि पंजाब की आर्य समाजों और आर्य भाइयों के लिए गौरव का कारण नहीं। इस समय जब कि पंजाब में हिन्दी का प्रश्न बड़ी जटिल परिस्थित में है; पंजाब के आर्य भाइयों को इस पत्र को अपना कर क्रियात्मक रूप से हिन्दी प्रेम का परिचय देते हुए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

दीवान चन्द स्मारक औषधालय औचन्दी

देहली के प्रसिद्ध आर्य भाई दानवीर श्री ला० दीवानचन्द जी ठेकेदार (स्वर्गीय) ने अपने जन्मस्थान सैयदपुर जि० जेहलम में एक धर्मार्थ हस्पताल, जालंधर और कन्या पाठशाला स्थापित करने के लिए वसीयत की थी। अपने दान का उन्होंने एक ट्रस्ट बना दिया था। सय्यदपुर में हस्पताल खोलने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को सवा लाख रुपया दान मिला था। जिसमें से २५०००) हस्पताल की बिल्डिंग पर लगा कर एक लाख रुपया स्थिर निधि के रूप में रखा गया। जिसमें से इस समय लगभग ११५००) शेष हैं। हस्पताल की अपनी बिल्डिंग और सब औजार आदि सामान वहीं रह गया है।

लाला जी के इस स्मारक को स्थिर रखने के लिए १२ चैत्र २००४ को इस हस्पताल की पुनःस्थापना औचन्दी में (देहली के निकट) पं विश्वम्भरनाथ जी के कर कमलों द्वारा की गई। इस औषधालय द्वारा आस पास के बीस गावों के निवासी लाभ उठा रहे हैं। इस वर्ष १७५३६ रोगियों ने धर्मार्थ संस्था से लाभ उठाया है। इस औषधालय के इन्चार्ज कविराज डा० हंसराज जी वैद्य हैं। इस में चिकित्सालय के अध्यक्ष श्री ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार की आज्ञानुसार अधिकांश आयुर्वैदिक औषधियों का प्रयोग होता है। आवश्यकतानुसार अंग्रेजी दवाइयां भी बरती जाति हैं। क्यों कि चीर फाड़ के काम में उनकी विशेष आवश्यकता पड़ती हैं।

१००) व्यय करके चिकित्सालय में सीमिंट का फर्श लगवाया गया है। ५००) औषधालय के पुराने कमरे की मरम्मत पर व्यय हुए हैं। हस्पताल के कार्य कर्ताओं के लिये निवासस्थान की कमी है। आशा है इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये औचन्दी की जनता अवश्य सहयोग देगी।

पंजाब पीड़ित सहायता—पंजाब के बटवारे से पूर्व मार्च १९४७ में ही पञ्जाब और मध्य प्रान्त में सांप्रदायिक उपद्रव आरंभ हो गए थे। जिन में रावलपिंडी के इलाके का हत्याकाण्ड बहुत भयंकर था। उस समय सभा की अपील पर पीड़ित सहायता निधि के

लिए कुछ धन राशि एकत्र हुई थी। जिस में से रावलपिंडी, वाह, मीर पुर कैम्प के पीड़ितों की सहायता के लिए आर्थिक सहायता भेजी गई। फिर मुलतान लाहौर आदि भिन्न २ स्थानों पर उपद्रव आरम्भ हो गए और सभा की अपील पर दानी महानुभावों ने सहायता भेजना आरम्भ किया और उस फंड से सहायता होती रही। लाहौर से रिकार्ड न आ सकने के कारण उस धन के आय व्यय का पूर्ण विवरण देना सम्भव नहीं है। परन्तु २६-२७ जुलाई १६४७ को जालन्धर में हुए सभा के वार्षिक साधारण अधिवेशन में सभा का सम्वत् २००३ का कार्यवृत्तान्त प्रस्तुत हुआ था। उस से प्रकट होता है कि सभा के पास उस समय लगभग ११००० इस निधि में शेष था। तदन्तर १५ अगस्त १६४७ को पंजाब का बटवारा हो गया।

पंजाब के बटवारे के समय और उसके पश्चात् जो भीषण उपद्रव हुए उस नर संहार और हानि का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता। सहस्रों क्या लाखों व्यक्ति धर्मान्धता की बलीवेदी पर मौत के घाट उतार दिए गए। आर्थिक हानि का अनुमान ही क्या हो सकता है। अपने घरों से बे घर हुए उजड़ी हुई दशा और असहाय अवस्था में लोग इधर उधर भटकते फिर रहे थे। उस समय सरकार ने लोगों की सहायता करने का यत्न किया। परन्तु आय समाज भी चुप कैसे रह सकता था। यद्यपि आर्य समाज की ६०-७० प्रतिशत सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई है, वह स्वयं एक उजड़ी हुई दशा में था। जिन सार्बजनिक संस्थाओं को पंजाब के बटवारे से हानि पहुँची है उन में सब से भारी क्षति आर्य समाज की हुई है। इस दशा में भी आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने पीड़ित सहायता कार्य को हाथ में लेने का निश्चय किया और सार्वदेशिक सभा ने भी पञ्जाब पीड़ित सहायता निमित्त प्राप्त धन में से हमारा हाथ बटाया। इसके लिए यह उस की कृतज्ञ हैं।

पश्चिमी पंजाब से आए हुए आर्य भाई जहां भी विद्यमान थे उनका पता लगने पर अथवा उनकी मांग आने पर उन्हें यथाशक्ति और नियत मात्रा के अन्दर सहायता पहुंचाने का यत्न किया गया और यत्न करके दुःखी परिवारों का पता लगाया गया ताकि जो भाई

स्वयं सहायता के लिए नहीं कहना चाहते उन्हें सभा की ओर से स्वयं सहायता दी जाए। पूर्वी पंजाब की स्थानिक आर्य समाजों, सभा की अन्तरंग सभा के सदस्यों, सभा के उपदेशकों, अधिष्ठाता वेदप्रचार तथा सभा कार्यालय द्वारा सहायता पहुँचाई गई। आरम्भ में रजाइयां और गर्म वस्त्र, फिर रोगियों के लिए औषधियां, तत्पश्चात् आवश्यक घरेलू सामग्री बर्तन, चारपाई, वस्त्र, भोजन सामग्री आदि के रूप में सहायता की गई। विधवाओं, अनाथों, विद्यार्थियों, अछूतों, सभी की यथा सम्भव सेवा सहायता करने का यत्न किया गया। इस कार्य पर सभा ने कुल १००००) धन व्यय किया है जिससे लगभग दो हजार आर्य परिवारों की सहायता हुई है।

यूनिवर्सिटी शिक्षा संस्थाएँ डी० एम० कालिज मोगा

गत तेईस वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में कार्य कर रहा है और आर्य समाजों के प्रचार का एक अच्छा साधन है। इस कालिज के आधीन एक कन्याओं का कालिज भी चल रहा है। कालेज का परीक्षा परिणाम बहुत अच्छा रहा। जो कि युनिवर्सिटी में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रतिशत से बढ़ कर है।

कालेज में सैनिक शिक्षा का प्रबन्ध भी है। कालेज हिन्दी प्रचार के लिए बड़ा कार्य कर रहा है और इसके कुछ प्रोफ़ेसर हिन्दी में नये मौलिक ग्रन्थ लिखने का यत्न कर रहे हैं।

कालेज में विद्यार्थियों की संख्या ५६८ है। १७ प्रोफ़ेसर हैं। कालेज के पुस्तकालय में दस हजार पुस्तकें हैं। साइन्स की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है। इस वर्ष लेबरिटरी पर १२४४) व्यय हुए हैं।

एम० डी० ए० एस० हाई स्कूल मोगा—गत वर्षों से से यह स्कूल शिक्षा क्षेत्र में बहुत उत्तम कार्य कर रहा है। इस समय इसमें विद्यार्थियों की संख्या १२६४ है। तीस अध्यापक हैं। वर्नाक्यूलर फाइनल का परीक्षा परिणाम ६३ प्रतिशत तथा मैट्रिक का ६८ प्रतिशत रहा। धार्मिक शिक्षा और आर्य विचारों के प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। बोर्डिंग हाउस का उत्तम प्रबन्ध है। श्रेणियों की पढ़ाई के लिए दो कमरों की कमी है। दानी महानुभावों को इस आवश्यकता की पूर्ति करनी चाहिये।

आर्यहाई स्कूल पानीपत—हाली मुसलिम हाई स्कूल पानीपत की बिल्डिंग सभा ने अपने डी० ए० बी० हाई स्कूल मिंटगुमरी के स्थान पर सरकार से अलाट कर १ अप्रैल १९४८ से वहां आर्य हाई स्कूल स्थापित कर रखा है। इस के प्रबन्ध के लिए एक स्थानिक समिति नियत की हुई है जिस के प्रधान श्री धर्मसिंह जी एडवोकेट हैं। स्कूल में सेकण्डरी विभाग छात्रों की संख्या ९०० है। स्कूल के स्टाफ में २२ कार्य कर्त्ता हैं। हैडमास्टर श्री आनन्द जी चक्रवर्त्ती हैं।

१५ मई १९४८ को इन्सपैक्टर महोदय ने स्कूल का निरीक्षण किया और उन्होंने अपनी बड़ी उत्तम सम्मति प्रकट की।

मैट्रिक का परीक्षा परिणाम ८६ प्रतिशत रहा। शारीरिक उन्नति के लिए व्यायाम और खेलों का समुचित प्रबन्ध है।

धर्मशिक्षा के लिए पढ़ाई में अन्तर नियत है, और धार्मिक जीवन तथा चरित्रगठन के लिए आर्यकुमार सभा स्थापित है।

स्कूल में बैण्ड, स्काउट्स और कृषि शिक्षा का प्रबन्ध भी है।

बढ़ई और कपड़े सीने का कार्य सिखाने की व्यवस्था विचाराधीन है।

स्कूल का पारितोषिक वितरणोत्सव श्री चौधरी लहरीसिंह जी के सभापतित्व में सफलता पूर्वक मनाया गया।

आर्यहाई स्कूल दीनानगर—तीन वर्षों से यह स्कूल स्थापित है। इस वर्ष इस की छात्र संख्या ३२७ हो गई।

मैट्रिक का परीक्षा परिणाम ६८ प्रतिशत और वर्नेक्युलरफाइनल का शतप्रतिशत रहा।

शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।

साइन्स की शिक्षा का प्रबन्ध भी कर दिया गया है।

स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने पर विशेष बल दिया जाता है।

स्कूल के हैडमास्टर श्री के० सी० भरद्वाज हैं।

प्रबन्ध के लिए एक स्थानिक समिति नियत की हुई है, जिस के प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं।

हाई स्कूल ज्वालापुर—यह स्कूल पहले हरिद्वार यूनियन म्यूनिसिपैलटी के आधीन था सन् १९४८ में यह सभा के प्रबन्ध में

आ गया। विद्यार्थियों की संख्या १२० है। स्कूल के हैडमास्टर श्री अर्जुन देव जी हैं। अधिष्ठाता श्री पं० दीनदयालु जी शास्त्री एम० एल० ए० हैं। सम्प्रति छठी से आठवीं कक्षा तक की श्रेणियों में सब विषयों की शिक्षा दी जाती है। विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के अतिरिक्त शारीरिक विकास का भी यत्न किया जाता है।

स्थानिक प्रबन्ध के लिए एक परामर्श दात्री समिति है जिसके प्रधान श्री चौ० प्रतापसिंह जी हैं।

आर्य हाई स्कूल मायापुर—यह स्कूल श्री प० विश्वम्भर-नाथ जी के शुभ प्रयत्नों के फल स्वरूप सन् १६४८ में स्थापित किया श्री पं० दीनदयालु जी शास्त्री एम० एल० ए० इस के अधिष्ठाता और श्री काकाराम शर्मा मुख्याध्यापक हैं। स० २००५ वि० में इसके कार्य संचालन पर ७८३३ ।।-) व्यय हुआ है।

आर्य हाई स्कूल थानेसर—सन् १६४५ में यह स्कूल स्थापित हुआ।

स्कूल के वर्तमान हैडमास्टर ला० शोभाराम जी हैं।

स्थानिक प्रबन्ध के लिए एक उप समिति नियत है। स्कूल के सैक्रेटरी श्री रामप्रसाद जी तथा अधिष्ठाता श्री एम० डी० चौ० अम्बाला छावनी निवासी है।

मैट्रिक का परीक्षा परिणाम ६० प्रतिशत रहा।

धर्मशिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है।

आर्य कुमार सभा के अधिवेशन नियम पूर्वक होते हैं।

धर्म शिक्षा का निरीक्षण पंजाब आर्य शिक्षा समिति के निरीक्षक महोदय ने किया।

स्कूल का अपना भवन बनाने की आवश्यकता है। उसके लिये यत्न जारी।

विद्यार्थियों की संख्या २३०।

वेदप्रचार विभाग

पंजाब के विभाजन के पश्चात् जिलेवार इस सभा के आधीन ६०५ आर्यसमाजें हैं।

अमृतसर	२६	गुरदासपुर	४५	जालन्धर	२६	फिरोजपुर	२०
लुधियाना	१६	हुशियारपुर	१४	कांगड़ा	२३	अम्बाला	८४
करनाल	४६	रोहतक	५३	गुड़गावां	४४	हिसार	२४
देहली	३७	पटियाला	४१	कपूरथला	४	फरीदकोट	२
जींद	२२	नाभा	४	जम्मू-कश्मीर	३०	चम्बा	१
शिमला	१२	डिलहोर्जी	२	नई आर्यसमाजें	३३		

कुल=६१५

इस में कुछ संदेह नहीं कि पश्चिमी पंजाब की आर्यसमाजों में पूर्वी पञ्जाब की आर्यसमाजों की अपेक्षा अधिक प्रचार जागृति और उत्साह था वेदप्रचार तथा सभा के अन्य कार्यों के लिए वहा से धन भी अधिक प्राप्त होता था। अब इस बात का यत्न किया जा रहा है कि पूर्वी पंजाब की आर्यसमाजों में भी अधिक उत्साह और जागृति पैदा हो और जहां एक ओर शिथिल समाजों में नई जागृति पैदा की जाय वहां नई आर्यसमाजें स्थापित की जाएं। सभा के कार्य का क्षेत्र तो कम हो गया है, परन्तु कार्य कम नहीं हुआ। प्रत्युत ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य कुछ बढ़ ही गया है। उपदेशकों की संख्या में कमी नहीं की गई। इसके विपरीत उपदेशकों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। गत वर्ष के कार्य की रिपोर्ट देखने से यह प्रतीत होता है कि गत वर्ष उपदेशक महानुभावों ने आशातीत सफलता से कार्य किया है। कार्य की सुगमता के लिए हरियाना प्रांत तथा अम्बाला मण्डल का कार्य दो पृथक् योग्य उपदेशकों के आधीन कर दिया गया है जो कि अधिष्ठाता वेदप्रचार के निरीक्षण तथा उन की अनुमति से अपने २ मण्डलों में प्रचार का कार्य कर रहे हैं। पटियाला तथा ईस्ट पंजाब यूनियन का कुछ भाग अम्बाला मंडल के साथ और कुछ भाग हरियाना मण्डल के साथ है। हिमाचल प्रदेश में भी विशेष रूप से प्रचार का प्रबन्ध किया गया हैं।

अम्बाला मण्डल—अम्बाला मण्डल में जिला अम्बाला, जिला करनाल का कुछ भाग, पटियाला रियासत तथा शिमला पहाड़ की आर्यसमाजें सम्मिलित हैं। इस मण्डल के अध्यक्ष श्री पं० मुनी-

श्वरदेव जी सिद्धान्तशिरोमणि हैं ! इस मण्डल में सं० २००५ में पं० मुनीश्वरदेव जी, पं० हरदयालु जी, पं० रामदत्त जी, म० अमरसिंह जी, म० जगतराम जी, म० हरिश्चन्द्र जी, तेजभान जी, म० देवकीनन्दन जी, तथा म० भक्तराम जी कार्य करते रहे हैं। आवश्यकतानुसार मानसा निवासी श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज पर्याप्त सहायता देते रहे।

इस मण्डल के द्वारा इस वर्ष निम्न स्थानों पर प्रचार कराया गया। रोपड़, साबेपुर, बाकरपुर, कायथ, छछरौली, सीवन, जठलाना शाहाबाद, लण्डो, गुमटी, बागवाली, खरड़, नाभा, कसौली, सपाटू डिगशाई अनहेच, सोलन, कालका, नारग, बसी, स्यालवा माजरी, नवांशहर, मनीमाजरा, जगाधरी, जमनानगर, सामाना, ८न्दवाल, शर्कपुर, छप्पर, गढ़ी गोसाईं, थम्बड़, कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी, लालकुड़ती बाजार अम्बाला, कच्चा बाजार अम्बाला, रजमेंट बाजार अम्बाला, तुम्बी, सढ़ौरा, ठसका, सादकपुर, महमूदपुर, अलाहर; खारवन दादूपुर, खिजराबाद, बुड्ढा, लाडवा, बनूड़, देवरिया, अम्बाला शहर, धूरी, फतेपुर, कोराली, खरड़, मोरिण्डा, मंगलाई, नाहन, नालागढ़ पचकोहा, शाहाबा८, सरहिन्द, संगरुर, तेजासिंह की चौपाल।

(ख) इस मण्डल में निम्न प्रकार से संस्कार कराए गये। ३० विवाह संस्कार ४ मुण्डन, ३ उपनयन, ३ नामकरण।

निम्न स्थानों पर वेद परायण यज्ञ किए गए। १. अम्बाला २. सुफेदों ३. जगाधरी ४. तरावड़ी ५. कुरुक्षेत्र ६. भिवानी।

(घ) इस मण्डल में निम्न स्थानों पर उत्सव हुए। कैथल, अमलोह, इस्माइलाबाद, जगाधरी अम्बाला लालकुर्ती, अम्बाला कच्चा बाजार, अम्बावा कबाड़ी बाजार, पटियाला; शाहबाद, नाभा, सरहिन्द चमकौर, नारायणगढ़, बरोली, सोलन, कसौली, डगशाई, सपाटू, जटवाढ़, रादौर, सढ़ौरा, हलाहर, लाडवा, जमना नगर, छछरौली, तरावड़ी, कुरुक्षेत्र कैम्प, थम्बड़, बरनाला, भदौड़, घनौर, खरड़, मुस्तफाबाद, गूगलो, गढ़ी गुसांईं, बसी, कैथल गोशाला, ठोल, तंगोर, आदि।

(ङ) इस मण्डल के उपदेशकों ने अपने मण्डल के अतिरिक्त निम्न आर्यसमाजों के उत्सवों में भी सहयोग दिया। दीवान हाल देहली, हनुमान रोड़ देहली, पहाड़गंज देहली, लोधी रोड़ देहली, मोर सराय देहली, बिड़ला लाईन्ज देहली, सब्जी मण्डी देहली, सरसा, फगवाड़ा, सोनीपत, माजरा, गंगानगर, भठिण्डा, रामा इत्यादि।

(च) नवीन आर्यसमाजें—इस मण्डल द्वारा निम्न आर्य समाजें स्थापित हुईं।

धनाना, पो० औ० शाहजादपुर २. बाकरपुर, पो० औ० जगाधरी ३. बागवाली, पो० औ० जठलाना ४. शेरपुर, पो० औ० छछरौली ५. लोपों, पो० औ० छछरौली ६. डारपुर, पो० औ० छछरौली ७. महमूदपुर, पो० औ० सढ़ौरा ८. सादकपुर, पो० औ० साढ़ौरा ९. दफरपुर, पो० औ० साढ़ौरा।

(६) इस मण्डल द्वारा मेला कपाल मोचन के अवसर पर प्रचार का प्रबन्ध किया गया।

हरियाना वेद प्रचार मण्डल—हरियाना प्रान्त में रोहतक हिसार, देहली, जीन्द स्टेट, जिला करनाल का कुछ हिस्सा, पटियाला रियास्त का कुछ हिस्सा सम्मिलित है। इस के अध्यक्ष श्री पं० राम स्वरूप जी शांत हैं। इस मण्डल में २१ कार्यकर्त्ता कार्य करते रहे हैं। इस में उपदेशक भजनीक तथा ढोलकिये भी शामिल हैं।

इस मण्डल के द्वारा ११६ स्थानों पर प्रचार किया गया। इस मण्डल में ग्राम अधिक हैं। भजन मण्डलियां एक २ उपदेशक के साथ ग्राम २ में घूम कर प्रचार करती हैं।

इस मण्डल में निम्न उत्सव हुए—

१, अबोहर, २. बेबलपुर, ३. नारनौल ४. महेंद्रगढ़, ५. मोगा, ६. पलवल, ७. छोटी चहड़, ८. शहादरा देहली, ९. पीलूखेढ़ा १०. घरौंडा, ११ खेड़ी सुलतान, १२. खानपुर, (कन्या गुरुकुल) १३. खोतकलां, १४. गंगा टेड़ी, १५. पानीपत, १६. नाभा, १७. बधना, १८. डौला, १९. गुड़गावाँ, २०. रामा मण्डी २१. बरेटा, २२. बहादुरगढ़, २३ हसनपुर, २४. बिरलालइंज, २५. जींद शहर, २६. जैतो, २७. तल

बंडी साबो, २८. बादली, २९. हथीन, ३० बालू नगर, ३१. लुलोढ़, ३२. रायचन्द वाला, ३३. दीवानहाल देहली, ३४. बोहा, ३५. सिहोटी ३६. बसई, ३७. डबवाली ३८. भिवानी, ३९. इसराना, ४०. सालवन, ४१. मितरौल औरंगाबाद, ४२. मानसा, ४३. पीलीबंगा, ४४. पेगा, ४५. सिरसा, ४६. नरवाना, ४७. दनौदा, ४८. महम, ४९. माजरा, ५०. भटिण्डा, ५१. छलेवा, ५२. डौहला, ५३. भुसलाना, ५४. अलवर, ५५. भैंसवाल, ५६. पूनाहाना, ५७. हनुमान रोड़ नई देहली, ५८. महरौली, ५९. कैथल, ६०. रोहतक, ६१. कुरुक्षेत्र, ६२. रोहतक कन्या पाठशाला, ६३. श्री गंगा नगर, ६४. जनाधरी ६५. देहली-शाहदरा।

इस मंडल में निम्न संस्कार हुए—१० विवाह संस्कार। ५ मुन्डन, १० नाम करण, २०० यज्ञो पवीत।

नई आर्यसमाजें स्थापित हुईं—१. आर्य समाज प्रबुवाला (हिसार) २. पेगा (करनाल) ३. सूरतवाला खेड़ा [पटियाला] ४. मण्डी [पटियाल) ५. चूहड़पुर (करनाल)।

ज़िला जालन्धर

इस जिले में श्री नन्दलाल जी आर्य मिशनरी और श्री शमशेरसिंह जी भजनीक कार्य करते रहे। गत वर्ष निम्न स्थानों पर प्रचार कार्य हुआ।

जालन्धर शहर, जालन्धर छावनी, गोबिन्दगढ़ जालन्धर, पक्का बाग, गढ़ा कैम्प, नूर महल, फिल्लौर, करतारपुर, नवांशहर, बंगा, बस्ति गुजां, राहों, महतपुर, कोट बादलखां, तलवन, मलसीया, सुलतानपुर लोधी, आदमपुर, अपरा।

नोट—इस जिले में प्रचार की कुछ शिथिलता रही है। जिसे दूर करने का यत्न किया जा रहा है।

जिला गुड़गावां—इस जिले के अध्यक्ष श्री पं० पूर्णचन्द जी सिद्धांतभूषण हैं। सभा में इनकी नियुक्त वर्ष के मध्य में हुई है। इन्होंने निम्न स्थानों पर प्रचार किया।

१. गुड़गावां छावनी, २. बादशाहपुर, ३. सोहना, ४. घासेड़ा, ५. नूह, ६. मालब, ७. नगीना, ८. फ़िरोजपुर झिरका, ९. ठट्ठा,

बीवां, १०. दौलताबाद ११. साकरस, १२. जटिका, १२. माड़ीखेड़ा, १४. गढ़ा मुरली, १५. धामढ़ौज, १६. बीकानेर, १७ रिवाड़ी; १८. सुकराली, १६. पलवल, २०. ब्राह्मनीखेढ़ा २१. पिरथला २२. जाटोला, २३. वसई २४. धर्मपुरा २५. बड़वानी २६. शाहबाद इत्यादि ।

संस्कार—६ यज्ञोपवीत १. नाम करण ६ मुण्डन ४. विवाह ।

निम्न प्रकार से नई आर्य समाजें स्थापित की गई —

१. घासेड़ा, २. मालन ३. साकरत ४. बीवां ५. ब्राह्मणी खेड़ा ६. गढ़ीनोरली इत्यादि ।

इन जिलों के अतिरिक्त लुधियाना, फिरोजपुर, अमृतसर, गुरुदासपुर, तथा कांगड़ा के जिलों में अन्य उपदेशक प्रचार करते रहे। इस प्रकार से सं० २००५ में पूर्वी पञ्जाब के सब जिलों की आर्य समाजों में यथा शक्ति प्रचार का प्रबन्ध किया गया।

सं० २००५ में सभा में निम्न उपदेशक व भजनीक वैतनिक और अवैतनिक रूप में कार्य करते रहे

१. श्री स्वामी सुधानन्दजी महाराज २. श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी महाराज ३. श्री चिरंजीलाल जी प्रेम ४. श्री पं० रामस्वरूप जी पराशर ५. श्री पं० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार ६. श्री पं० पूर्णचन्द जी ७. श्री पं० मुनीश्वरदेवजी ८. श्री पं० शिवकुमारजी ६. श्री पं राम-स्वरूप जी शांत १०. प० गुरुदत्त जी ११. प० नन्दलाल जी १२. पं० हर दयालु जी १३. प० रामदत्त जी १४. पं० हरिदेव जी १५. पं० विद्याधर जी १६. पं० भरतसिंह जी १७. श्री मेहरचन्द जी १८. श्री बलराज १६. बृजलाल जी २० श्री आशानन्द जी २१ श्री तेजभान जी २२, श्री देवकीनन्दन जी २३ श्री हरिश्चन्द्र जी २४. श्री भक्तराम जी २५ श्री शमशेरसिंह जी २६. श्री अमरसिंह जी २७. श्री जगतराम जी २८. श्री नन्दलाल जी २६. श्री सुखदेव जी ३०. श्री सूरतराम जी ३१. श्री सत्यप्रिय जी ३२. श्री बालमुकुन्द जी ३३. श्री उदयसिंह जी ३४. श्री कवलसिंह जी ३५. श्री रत्नसिंह जी ३६. श्री रणधीरसिंह जी ६७, श्री ब्रह्मानन्द जी ३८. श्री दयाचन्द जी ३६. श्री भगवद्दत्त जी ४०. श्री लालचन्द जी ४१. श्री कन्हैयालाल जी ४२. श्री नत्थुराम जी ४३.

श्री स्वरूप सिंह जी ४४. श्री जसवन्तसिंह जी ४५. श्री शिवनारायण जी ४६. श्री सुखराम जी ४७. श्री बलवीरसिंह जी ४८. श्री कालूराम जी ४९. श्री स्वामी अभयानन्द जी।

श्री स्वामी आत्मानन्द जी, महाराज (जगाधरी), श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज, (खरड़) श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज, श्री म० कृष्ण जी सभा प्रधान, श्री पं० भीमसेन जी सभा मन्त्री, श्री निरंजननाथजी संयुक्त मन्त्री, श्री ला० नन्दलालजी एम० ए० श्री देवराज जी एम० ए०, श्री पं० ज्ञानचन्द जी बी० ए०, श्री युगल-किशोर जी, श्री आचार्य प्रियव्रत जी, श्री प्रो० सुखदेव जी, श्री राजा रामसिंह जी, श्री रामचन्द जी जिज्ञासु, ी मनोहरलाल जी एडवोकेट, श्री लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति, श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, श्री दीनानाथ जी सिद्धांतालंकार, श्री सोमदत्त जी विद्यालंकार, श्री हंसराज जी भजनोपदेशक, श्री पं० हरिशरण जी सिद्धांतालंकार, श्री पं० कृष्णचन्द्र जी शास्त्री सिद्धांतभूषण, पं० जयदेव जी विद्यालंकार, पं० रामचन्द्र जी मुन्शी फाजिल। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि श्री म० कृष्ण जी सभा प्रधान ने अपनी निर्बल स्वास्थ्य की दशा में भी आर्यसमाजों के उत्सवों में सम्मिलित होने की विशेष कृपा की है। कई बार तो रुग्ण होते हुए भी उन्होंने उत्सवों पर जाने की कृपा की। गत वर्ष उन्होंने आर्यसमाजों में पर्याप्त दौरा किया है उनके प्रभाव से वेद प्रचार निधि में अधिक धन भी प्राप्त हुआ है। उनके जाने से आर्यसमाजों में उत्साह और जागृति पैदा हुई है।

आर्थिक अवस्था—सभा की वेद प्रचार निधि में प्रति वर्ष प्रायः ३२ हजार के लगभग धन एकत्रित हुआ करता था। उपदेशकों के विशेष प्रयत्न से सं० २००३ में ६० हजार से ऊपर रुपया हुआ है। सं० २००४ में जब कि देश की आर्थिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी तथापि वेद प्रचार निधि के लिए लगभग २३ हजार रुपया एकत्रित हो गया था।

सं० २००५ में देश की अवस्था अभी सुधरी नहीं है। शरणा-

र्थियों का कहीं भी निश्चित ठिकाना नहीं बना है। कारोबार अभी पूरी तरह से उन्नत नहीं हुआ। लोग अपने आप को अनिश्चित अवस्था में अनुभव करते हैं। अच्छे दिनों में भी पूर्वी पंजाब से कभी १५, २० हजार से अधिक रुपया वेद प्रचार निधि में नहीं आया। परन्तु सं० २००५ में लगभग ४० हजार रुपया वेद प्रचार निधि में प्राप्त हुआ है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सभा के प्रति आर्यसमाजों की भक्ति कितनी गहरी है। इस धन के एकत्रित करने में सभा के उपदेशक महानुभावों ने अनथक परिश्रम किया है; इसके लिए वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

घाटा—पंजाब के विभाजन के पश्चात् ऐसा समझा जाता था कि सभा का कार्यक्षेत्र थोड़ा रह जायगा। और कुछ उपदेशक कम करने पड़ेंगे। परन्तु अनुभव ने यह बताया कि सभा का काम घटा नहीं है, परन्तु बढ़ा ही है। सभा ने उपदेशकों की संख्या में कोई कमी नहीं की। अब यह अनुभव किया जा रहा है कि आगामी वर्ष में उपदेशकों की संख्या में वृद्धि करनी पड़ेगी। आर्यसमाजों में प्रचार की मांग को वर्तमान उपदेशक पूरा नहीं कर सकते। पश्चिमी पंजाब के आर्य भाइयों के इधर आ जाने से पूर्वी पंजाब की आर्यसमाजों में भी बहुत जागृति पैदा हो रही है, और प्रचार की मांग बढ़ रही है। महगाई के कारण से और रेल व भाड़ा के बढ़ जाने से व्यय इतना अधिक बढ़ गया है कि ४० हजार रुपया के एकत्रित होने पर भी लगभग ८ हजार रुपये का सभा को वेद प्रचार निधि में घाटा रहा है। आर्यसमाजों का कर्त्तव्य है कि वे आगामी वर्ष में वेद प्रचार निधि के लिए अधिक से अधिक सहायता करें।

ग्राम प्रचार—सभा के वर्त्तमान मन्त्री श्री पं० भीमसेन जी कई वर्षों से ग्राम प्रचार के कार्य को अधिक विस्तृत करने के लिए बल देते आये हैं, परन्तु कई कारणों से इस कार्य को क्रियात्मिक रूप नहीं दिया जा सका। गतवर्ष के अन्त में छीना (गुरदासपुर) और अपरा (जालन्धर) इन दो ग्रामों में ग्राम प्रचार के केन्द्र खोल दिये गये हैं, और यह आशा की जाती है कि इसका अच्छा परिणाम निकलेगा। एक वर्ष के पश्चात् इसके सम्बन्ध में विशेष रूप से लिखा जा

सकेगा। सभा ने आर्य जनता की इच्छा के अनुसार ग्राम-प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया है। जिन उपदेशकों को इस कार्य पर लगाया गया है उन्हें कोई अन्यत्र प्रोग्राम नहीं दिया जायगा।

इस योजना के अनुसार ग्रामों की जनता में हिन्दी का प्रचार किया जायगा, और उन्हें अधिक से अधिक आर्यसमाज के सम्पर्क में लाने का यत्न किया जायगा।

कुरुक्षेत्र शरणार्थी कैम्प में प्रचार—सं० २००४ में कुरुक्षेत्र कैम्प सभा की तरफ़ से प्रचार का प्रबन्ध किया गया था। यह कैम्प भारतवर्ष में शरणार्थियों का सबसे बड़ा कैंप था। इसलिए यह आवश्यक समझा गया कि यहां प्रचार का प्रबन्ध किया जाय। श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में यह कार्य प्रारम्भ हुआ, चारों वेदों से यज्ञ किया गया, और उपदेशकों द्वारा प्रभावशाली प्रचार का प्रबन्ध भी किया गया। स० २००५ के प्रारम्भ में प्रचार कार्य बन्द करने का निश्चय किया गया। परन्तु शरणार्थी भाइयों के आग्रह पर सं० २००५ के अन्त तक प्रचार कार्य जारी रखा गया। कैम्प में आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव के सम्बन्ध में जो नगर-कीर्तन निकाला गया उसका कैम्प की जनता पर बहुत प्रभाव रहा। कैम्प प्रचार के कार्य में श्री स्वामी अभयानन्द जी, श्री प० मुनीश्वरदेव जी, श्री म० वृजलाल जी, श्री म० तेजभान जी तथा सभा के अन्य उपदेशकों से समय २ सहयोग लिया जाता रहा। इस प्रचार पर लगभग सभा ने पांच हज़ार रुपये का व्यय किया।

आर्यसमाजों के उत्सव—गत वर्ष इस सभा ने १६० आर्य समाजों के उत्सव कराये। आशा है इस वर्ष उत्सवों की संख्या २५० तक पहुंच सकेगी। शिथिल आर्यसमाजों में प्रचार द्वारा जागृति पैदा करने का यत्न किया जा रहा है और आर्यसमाजों को प्रेरणा की जा रही है कि वे अपने उत्सव अवश्य करें।

इस वर्ष निम्न आर्यसमाजों ने उत्सव किये।

उत्सव सं० २००५

नं०	नाम समाज	तिथि
१	करनाल	४ से ६ वैशाख
२	नारनौल	४ ,, ६ ,,
३	पटियाला	४ ,, ७ ,,
४	खिज़राबाद	७ ,, ९ ,,
५	महेन्द्रगढ़	९ ,, १० ,,
६	नवांशहर दोवा	११ ,, १३ ,,
७	साबुन वा० लुध्याना	,, ,, ,,
८	मोगा	,, ,, ,,
९	सरहिन्द	,, ,, ,,
१०	फगवाड़ा	,, ,, ,,
११	अम्बाला छावनी	,, ,, ,,
१२	छोटा चहड़	,, ,, ,,
१३	जण्डियाला गुरु	१८ ,, २० ,,
१४	शाहदरा देहली	,, ,,
१५	गु. कु. कुरुक्षेत्र	,, ,,
१६	इस्माइलाबाद	,, ,,
१७	नूरमहल	,, ,,
१८	बटाला	,, ,,
१९	जीन्दशहर	२१ ,, २८ ,,
२०	क.गु.कु.देहरादून	२५ ,, २७ ,,
२१	छछरौली	,, ,,
२२	कच्चाबाज़ार अम्बाला	२ से ४ ज्येष्ठ
२३	आदमपुर	,, ,,
२४	पीलूखेड़ा	,, ,,
२५	धर्मशाला	२ से ३२ ,,
२६	घरौंडा	९ से ११ ,,
२७	बस्ती गुज़ां	१६ से १८ ,,
३८	खेड़ी सुलतान	१६ से १८ ,,
२९	आर्यपुरा स.म.देहली	११ ,, ,, ,,
३०	जड़वाड़	२४ ,, २६ ,,
३१	धनौर	२८ ,, ३० ,,
३२	गन्दाना	१२ ,, १४ ,,
३३	चमकौर	३२ आषा. १, २ श्रा०
३४	खोत (हिसार)	३ से ५ भाद्रपद
३५	गंगा टेढ़ी	११ ,, १३ ,,
३६	सपाटू	२२ ,, २४ ,,
३७	सोलन	२६ ,, २८ ,,
३८	कसौली	२ से ४ आश्विन
३९	नारग	७ से १५ ,,
४०	शिमला	९ से ११ ,,
४१	पानीपत	९ से ११ ,,
४२	कुल्लू	९ से ११ ,,
४३	डिगशाई	१६ से १८ ,,
४४	नारायणगढ़	१६ से १८ ,,
४५	बीकानेर (रिवाड़ी)	१७ से १८ ,,
४६	साधु आ.(बजवाड़ा)	१९ से २५ ,,
४७	नाभा	२४ से २७ ,,
४८	गुड़गावां	३० आ. से १, २ का.
४९	शाहाबाद	३० आ से १, २ का.
५०	नाईवाला	३० आ. से १, २ का.
५१	रामा मण्डी	३ ,, ५ ,,
५२	तरावड़ी सुभाषमण्डी	२६ ,, ३ ,,
५३	बरेटा मण्डी	७ से ९ का.
५४	हसनपुर	८ से ३० ,,
५५	बहादुरगढ़	७ से ९ ,,
५६	अब्दुल्लापुर	१४ ,, १६ ,,
५७	कैनाल कालोनी	१४ ,, १५ ,,
५८	जोधपुर	१५ ,, १८ ,,
५९	बिड़ला लाइन देहली	,, ,, १९ ,,
६०	बसी धीमान सभा	१८ ,, १९ ,,

६१ जीन्द शहर २१ ,, २३ ,,
६२ लुलोढ़ २१ ,, २३ ,,
६३ पठानकोट २१ ,, २३ ,,
६४ कैथल गोशाला २३ से २५ ,,
६५ अमृतसर अ. वा. २८ से ३० का.
६६ कालका २८ से ३० ,,
६७ बादली ३०, १-२ मार्गशीर्ष
६८ मेला कपालमोचन २८ से २ मा.
६९ हथीन ४ से ,,
७० सोनीपत ५ से ७ ,,
७१ अबोहर ५ से ७ ,,
७२ जैतों २६ से २८ कार्तिक
७३ तलवण्डी साबो २७ से २८ ,,
७४ सामाना १२ से १४ मार्गशीर्ष
७५ दीवान हाल देहली १२ से १४ ,,
७६ बालूनगर ५ से ६ ,,
७७ रायचन्द वाला ५ ,, ७ ,,
७८ करतारपुर १९ से २१ ,,
७९ आर्य पुरा स.मं.दे. १९ से २१ ,,
८० बोहा १९ से २१ ,,
८१ बुजर्गवाल २३ से २५ ,,
८२ सिहोटी २६ से २८ ,,
८३ बसई २६ से २८ ,
८४ तुर्क्वा पो.विलासपुर २८ से ३० ,,
८५ राजपुरा पो.साढौरा १ से २ पौ.
८६ हरियाना १७ से १९ ,,
८७ रायकोट ७ से ९ ,,
८८ रादौर १५ से १७ ,,
८९ डबवाली २४ से २६ ,,
९० ठसका ५ से ७ ,,
९१ भिवानी २८ से ५ ,,
९२ जालंधर शहर १० से १२ ,,
९३ बीकानेर राजपूताना १० से १२ ,,
९४ साढौरा ९ से ११ ,,
९५ डेरा गोपीपुर २४ से २६ ,,
९६ गुगलो २५ से २७ ,,
९७ कुरुक्षेत्र कैम्प १२ से १४ जन०
९८ तरावड़ी ४ से ६ माघ
९९ प्रागपुर १६ से १८ ,,
१०० दौनी देवी २० से २५ ,,
१०१ इसराना २० से २२ ,,
१०२ नया बांस देहली २३ से २५ ,,
१०३ बरौली २८ से ३० ,,
१०४ थम्बड़ ३० से १ फा०
१०५ सालवन ३० से १-२ ,,
१०६ महतपुर ३० से १ फा.
१०७ मितनौल औरंगाबाद १ से ३ फा.
१०८ बरनाला ३० से २ ,,
१०९ पेगा ८ से १० ,,
११० मानसा ७ से ९ ,,
१११ सूरतगढ़ १३ से १५ ,,
११२ नरवाना १४ से १६ ,,
११३ सरसा १४ से १६ ,,
११४ मुकेरियां १४ से १६ ,,
११५ दनौदां कलां १७ से १९ ,,
११६ आचंदी १५ से १७ ,,
११७ भदौड़ १८ से २० ,,
११८ पहाड़गंज देहली २१ से २३ ,,
११९ मोगा २१ से २३ ,,
१२० महम २१ से २३ ,,
१२१ गदपुरी २१ से २३ ,,
१२२ फतहपुर २१ से २३ ,,
१२३ गु. कु. भैंसवाल २१ से २३ ,,
१२४ झोल २१ से २३ ,,
१२५ माजरा २४ से २६ ,,

१२६ सुलतानपुर लोधी २६ से २६, १ चैत्र
१२७ बाबल २७ से २६ फा.
१२८ अलाहर १ से ३ चैत्र
१२६ नरेला २६ से २ ,,
१३० गु. कु. मटिण्डू २८ से २६ फा. १ चैत्र
१३१ देहली कैंट २६ फा. से १-२ चै.
१३२ मोरसराय देहली २४ फा.से ३चै.
१३३ गु.कु. इन्द्रप्रस्थ २८,२६ फा.१चै.
१३४ पीली बंगा ७, ८, ६ चैत्र
१३५ लोधी रोड देहली ६ से ८ ,,
१३६ फ़ीरोज़पुर शहर ६ से ८ ,,
१३७ दा. ब. लुधियाना ६ से ८ ,,
१३८ पूना हाना ८ से १० ,,
१३६ अलेवा ४ से ६ ,,
१४० भुसलाना ८ से १० ,,
१४१ करोन्वाली (सरसा) ६ से ८ ,,
१४२ खाखन १० से १२ ,,
१४३ डौहला २५ से २७ फा.
१४४ खरड़ १३ से १५ चै.
१४५ कपूर्थला १३ से १५ ,,
१४६ अम्बाला छावनी १३ ,, १५ ,,
१४७ महरौली १३ से १५ ,,
१४८ हनूमान रोड नई देहली १३ से १६ ,,
१४६ ठोल १७ से १६ ,,
१५० मुस्तफाबाद १६ ,, १६ ,,
१५१ स. ब. लुधियाना २० ,, २२ ,,
१५२ कैथल २० ,, २२ ,,
१५३ नूरमहल २० ,, २२ ,,
१५४ इस्माइलाबाद २० ,, २२ ,,
१५५ रोहतक शहर २४ ,, २६ ,,
१५६ करनाल २७ ,, २६ ,,
१५७ श्री गंगानगर २८ ,, ३० ,,
१५८ शाहदरा देहली २७ ,, ३० ,,
१५६ लालकुर्ती अम्बाला २७ ,, २६ ,,
१६० करौल बाग़ देहली ५ ,, ६ ,,

सं० २००५ में स्थापित नई आर्यसमाजें

१. माडल बस्ती देहली।
२. हरिपुरा (अमृतसर)।
३. महरौली देहली।
४. गुमथला गढ़ तहसील कैथल (करनाल)
५. साकरस पो० माड़ी खेड़ा तहसील फीरोज़पुर झिरका ज़िला (गुड़गांव)
६. भदशाणी (होशियारपुर)
७. गढ़ामुरली पो० सोहाना जिला गुड़गांव
८. देहली कैण्ट
६. गुरुग्राम उर्फ गुड़गांव चौ० जमादार रिसालसिंह
१०. आर्य स० नारायण (देहली प्रांत)
११. बाजिदपुर (देहली प्रांत)
१२. पिगांवा तहसील फीरोजपुर झिरका (गुड़गावां)
१३. लड्डू घाटी पहाड़गंज देहली
१४.भूलनगर पो०नारनौल (पटियाला)
१५. धनाना पो० शाहज़ादपुर, अम्बाला
१६. बाकरपुर पो० जगाधरी
१७. बागवाली जठलाना

१८. शेरपुर पो० छछरौली	२६. बीवां
१६. लोपो पो० छछरौली	२७. ब्राह्मणी खेड़ा
२०. डारपुर पो० छछरौली	२८. गढ़ी नोरली
२१. महमूदपुर पो० सादौरा	२६. प्रभु वाला
२२. सादकपुर पो० सादौरा	३०. पेगा
२३ दफरपुर पो० सादौरा	३१. सूरत वाला खेड़ा
२४. घोसका	३२. मगढी
२५. मालन	३३. चूहड़पुर

शुद्धि:—पंजाब विभाजन के पश्चात् पंजाब प्रान्त से मुसलमान पाकिस्तान में चले गये। केवल जिला गुड़गावाँ में कुछ मेव रह गये। जोकि शुद्ध होकर आर्य धर्म में वापिस आना चाहते थे। उन्होंने ऐसी इच्छा भी प्रकट की बहुत से मेव पाकिस्तान से वापिस आ गये, और जिला गुड़गाँव में आकर रहने लग गये हैं। मेवों के बहुत से रीति-रिवाज हिन्दुओं से मिलते हैं उनकी इच्छा भी इस धर्म में वापिस आने की है। इसलिए सभा ने उनमें प्रचार के लिए २६ नवम्बर १६४८ से इस सभा के अत्यन्त अनुभवी उपदेशक श्री पं० पूर्णचन्द जी को इस कार्य के लिए नियत किया। मई १६४८ ने गुड़गाँव में श्री म० कृष्ण जी प्रधान सभा की अध्यक्षता में एक शुद्धि सम्मेलन भी किया गया। इसमें आर्य जनता के वयोवृद्ध नेता श्री ला० नारायणदत्त जी भी सम्मिलित हुए थे। वेद प्रचार तथा शुद्धि विभाग के अधिष्ठता श्री पं० यशःपाल तथा श्री प० ज्ञानचन्द जी भी इसमें सम्मलित हुए थे। श्री प० पूर्णचन्द जी ने इस कार्य के लिए जिला गुड़गाँवा के ३५ स्थानों पर दौरा किया और विशेष-तौर पर तहसील नूह और फीरोजपुर झिरका के देहातों में दौरा किया। वार्तालाप द्वारा मेवों में प्रचार करने का यत्न किया। मेवों में प्रचार करने के लिए और उन तक वेदों का पवित्र सन्देश पहुँचाने के लिए इस वर्ष और भी अधिक यत्न करने का विचार है। यह कार्य सुगम नहीं है। इसके लिए पर्याप्त यत्न तथा समय की आवश्यकता है।

दलितोद्धार सभा—इस सभा के अधीन कई वर्षों से दलितोद्धार विभाग पृथक रूप से चल रहा था। स्वराज्य के पश्चात् भारतीय सरकार तथा विशेष रूप से पंजाब सरकार ने दलितो के लिए

कानून द्वारा बहुत सुविधायें कर दी, साथ ही उनके लिये छात्र-वृत्तियां भी नियत कर दीं। इससे इस सभा का कार्य कुछ हलका हो गया। इस लिये अंतरंग सभा ने इसका पृथक अस्तित्व न रख कर इसे वेद प्रचार अधिष्ठाता के आधीन कर दिया। जो दलित भाई पश्चिमी पंजाब से यहां आये हैं और ग्रामों में बस गये हैं उनमें सिक्खों ने अपना प्रचार प्रारम्भ किया है। उन दलित भाइयों को अपने धर्म में स्थिर रहने और भारतीय राष्ट्र का सम्माननीय नागरिक बनाने का कार्य सिवाय आर्य समाज के और कोई नहीं कर सकता। सभा अपने उपदेशकों के द्वारा इस कार्य को सुचारु रूपेण कर रही है।

मुबारकपुर शरणार्थी कैंप में प्रचार—कुरुक्षेत्र शरणार्थी कैंप में प्रचार के अतिरिक्त सभा की तरफ से मुबारिकपुर शरणार्थी कैम्प में भी प्रचार किया गया। श्री स्वामी नरेशानन्द जी महाराज इस कैम्प में लगभग चार मास तक प्रचार कार्य करते रहे। उनके अतिरिक्त समय २ पर अन्य उपदेशक महानुभाव भी वहां प्रचारार्थ पधारते रहे। इन दोनों कैम्पों में लगभग १०००) की पुस्तकें तथा पम्फलैट प्रचार की दृष्टि से मुफ्त बांटे गये। इन दोनों कैम्पों में सभा की तरफ से रोगियों को मुफ्त दवाइयां देने की व्यवस्था भी थी।

औषधि वितरण द्वारा प्रचार—वेद प्रचार विभाग के आधीन दो औषधालय हैं। (१) बसधेड़ा जिला होशियारपुर (२) चीचियां जिला कांगड़ा इन दोनों हस्पतालों के द्वारा सं० २००५ में लगभग तीस हजार बीमारों को मुफ्त दवाइयां बांटी गई इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र कैम्प में श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी महाराज और श्री स्वामी अभयानन्द जी महाराज ने हजारों बीमारों को बिना मूल्य औषधि वितरण की। इसका जनता पर आर्य समाज के सम्बन्ध में अच्छा प्रभाव पड़ा।

साहित्य वितरण द्वारा प्रचार—कैम्पों के प्रचार के लिये इस सभा ने इस वर्ष, १. सत्संग पद्धति २. शक्ति रहस्य ३. ऋषि प्रवचनामृत यह तीन पुस्तकें प्रकाशित कीं। इसके अतिरिक्त परोपकारिणी सभा ने शरणार्थियों में बांटने के लिए दो हजार सत्यार्थ प्रकाश और एक हजार वर्णमाला भेजीं। यह सब पुस्तके शरणार्थियों में बांट दी गईं। जिसके द्वारा आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का

वेदप्रचार, जातिरक्षा, शुद्धि, ग्राम प्रचार इत्यादि विभागों का

सं० २००६ का कार्य विवरण

आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब पंजाब प्रान्त की आर्यसमाजों की शिरोमणि सभा है। तीन वर्ष पूर्व संयुक्त पंजाबमें इस सभा के अधीन लगभग १४०० आर्य समाजें थीं। पंजाब विभाजन के पश्चात् भी इस समय इससे सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ६०० के लगभग है। इस सभा में इस समय ६२ उपदेशक तथा भजनीक कार्य कर रहे हैं। कार्य की सुविधा को दृष्टि में रखते हुए प्रचार की दृष्टि से इस प्रान्त के भाग कर दिए गए हैं। १. रोहतक, २. हिसार, ३. देहली, ४. जींद स्टेट, तथा ५. करनाल का कुछ भाग मिला कर हरियाना मण्डल बनाया गया है। इस के अध्यक्ष श्री रामस्वरूप जी शान्त नियत हैं। इस मण्डल में २७ के लगभग उपदेशक तथा भजनीक कार्य कर रहे हैं। श्री रामस्वरूप जी शान्त अत्यन्त लग्न से काय कर रहे हैं। इन के कार्य करने की शैली बहुत उत्तम है। अम्बाला मण्डल के अध्यक्ष कई वर्षों से श्री पं० मुनीश्वर देव जी सिद्धान्त शिरोमणि हैं। ये अनुभवी विद्वान तथा उत्तम व्याख्याता हैं। इन की योग्यता से प्रभावित हो कर श्री भीमसेन जी सभा मन्त्री ने इन्हें आर्य का सहायक सम्पादक नियत किया है। इस कार्य को यह आशातीत योग्यता से कर रहे हैं। इस मण्डल में जिला अम्बाला, पटियाला, शिमला तथा करनाल का कुछ भाग है। पं० मुनीश्वर देव जी के आर्य के सहायक सम्पादक नियत होने पर श्री पं० हरदयालु जी को सभा ने इस मण्डल का अध्यक्ष नियत किया। पं० जी सभा के स । से पुराने उपदेशकों में से हैं। इनका आर्यसमाज के प्रति प्रेम तथा सभा के प्रति लग्न सराहनीय है। पं० हरदयालु जी बड़े उत्साह से इस मण्डल का कार्य कर रहे हैं। जिला गुड़गावां की अपनी पृथक् समस्याएँ है। प्रचार के अतिरिक्त इस जिले में शुद्धि के कार्य की भी आवश्यकता है। इस

लिये सभा ने इस मण्डल का अध्यक्ष श्री पं० पूर्णचन्द जी को नियत किया। वह लगभग दो वर्ष से बड़ी लग्न से कार्य कर रहे हैं। इन के प्रयत्न से इस जिले में नवीन उत्साह और जागृति पैदा होगई है। श्री स्वामी धर्मानन्द जी इन के सहायक हैं। श्री नन्दलाल जी ने जिला जालन्धर में तथा श्री स्वामी सुधानन्द जी महाराज तथा महाशय मेहरचन्द जी भजनीक ने जिला गुरदास पुर की आर्य समाजों में प्रचार किया। जिला लुधियाना के अध्यक्ष श्री पं० हरिदेव जी सिद्धांत भूषण हैं इन्हों ने इस वर्ष इस जिले में जो कार्य किया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। श्री भीमसेन जी सभा मन्त्री ने हिमाचल प्रदेश में प्रचार के लिए विशेष आयोजना बनाई। जिस के अध्यक्ष श्री पं० विद्याधर जी सि०भू० ने रियासत चम्बा में बड़ी लग्न से कार्य किया। यह मई से सितम्बर तक रियासत चम्बा में कार्य करते रहे। उस के पश्चात् सर्दी अधिक हो जाने के कारण उधर कार्य करना कठिन हो जाता है। इस अर्से पं० जी ने बहुत से पहाड़ी ग्रामों में प्रचार किया। हिमाचल प्रदेश के दूसरे भाग शिमला की पहाड़ियों में श्री रामस्वरूप पराशर कार्य करते रहे। आर्य समाज शिमला में दैनिक सत्संग स्वाध्याय आदि को उन्नत करने तथा वार्षिकोत्सव के लिये धन संग्रहादि कार्यों में भी सहयोग देते रहे।

मेला रामपुर बुशहर हिमाचल प्रदेश—शिमला के पहाड़ी देहाती इलाके में रामपुर बुशहर एक ग्राम है। यहां मास नवम्बर में एक बड़ा भारी मेला लगता है। अबभी नवम्बर से यहां मेला प्रारम्भ हुआ जो कि १४ नवम्बर तक रहा। इस मेले में प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता थी। अत: सभा ने श्री पं० रामस्वरूप जी पराशर और श्री बलराज जी भजनोपदेशक को प्रचार कार्य के लिए भेज दिया।

वहां प्रचार किया गया और पहाड़ी लोगों में पौराणिक रूढ़ियां पशुबली आदि छोड़ने को प्रेरणा की। जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। आर्य समाज के इस प्रचार से लोगों में पर्याप्त जागृति हुई।

लुधियाना मण्डल—आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से लुधियाना जिला बहुत पिछड़ा हुआ है। इस साल सभा ने इस जिले की ओर विशेष ध्यान दिया और श्री पं० हरिदेव जी सि०भू० को इसमें

प्रचारार्थ नियुक्त किया। इन्हों ने बड़ी संलग्नता से पैदल घूम २ कर भी गावों तथा शहर सब में प्रचार किया। और निम्न स्थानों पर प्रचार कार्य हुआ। इस प्रचार कार्य में समय २ पर सभा की ओर से कोई न कोई भजनोपदेशक भी उनके साथ कार्य करता रहा।

१. आर्यसमाज दाल बाजार लुधियाना २. साबुन बाजार लुधियाना ३. रेलवे कोलोनी लुधियाना ४. रायकोट ५. जगरावां ६. सिधवांबेट ७. बसियां ८. अक्षी ९. पखोवाल १०. लताला ११. अहमदगढ़ १२. बागड़ियां १३. मलोटा १४. साहनेवाल १५. दोराहा १६. खन्ना १७. पायल १८. समराला १९. माछीवाड़ा २०. सिहाला २१. हैड़ा २२. मालेरकोटला २३. अमरगढ़ २४. मैनी २५. धुलेर २६. भुनेर २६. वहलीलपुर २५. किलारायपुर इत्यादि।

नवीन समाजों की स्थापना—१. आर्य समाज माडल टाऊन २. रेलवे कालोनी लुधियाना ३. मलौट ४. सिहाला इत्यादि में नई आर्य समाजों की स्थापना की गई है। शेष कई स्थानों पर भी शीघ्र नई समाजों के बनने की आशा है।

उत्सव—आर्य समाज माछीवाड़ा का पहला वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिस में निम्न महानुभाव पधारे—

१. श्री पं० हरिदेव जी, पं० विद्याधर जी सि० भू०, पं० नन्दलाल जी मिश्नरी, महाशय शमशेरसिंह जी, पं० रामनाथ जी। उत्सव से पूर्व हरिदेव जी की कथा म० शमशेरसिंह जी के भजन तथा म० नन्दलाल जी का मैजिकलालटैन द्वारा प्रचार होता रहा हजारों की संख्या थी। उसकी सफलता का सेहरा डा० शंकरदास जी प्रधान, ला० मुन्शीराम जी तथा लाला अमृतसरिया मल जी के सिर ही है। जिन के अनथक प्रयत्नों से सारा कार्य सम्पन्न हुआ। और १०१) रुपये वेद प्रचार को प्राप्त हुऐ।

२. आर्य समाज समराला—यहां पर लगभग १० वर्ष से आर्यसमाज का कार्य शिथिल था। यही कारण है कि उनका उत्सव भी इस समय तक न हो सका था। किन्तु प्रचार से प्रभावित हो कर श्री पं० जगदेवलाल तथा इन्द्रचन्द्र जी ने आर्य समाज के कार्य को विशेष

उत्साह के साथ किया। और वार्षिक उत्सव भी बड़े समारोह से मनाया गया। जिस पर श्री पं० हरिदेव जी, श्री पं० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० नन्दलाल, म० सेवाराम जी, म० शमशेरसिंह जी तथा म० मेहरचन्द जी पधारे। उत्सव बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ। और २०१) रुपये वेदप्रचारार्थ प्राप्त हुए।

शुद्धि का कार्य—माछीवाड़ा में एक स्त्री को तीन बच्चों सहित शुद्ध किया और उसका विवाह भी एक युवकके साथ कर दिया। यह संस्कार पं० शान्तिप्रकाश जी तथा पं० हरिदेव जी ने करवाया। इस के अतिरिक्त समराला तथा मलोट में दो तीन सौ सांसियों को शुद्ध किया गया।

संस्कार—विवाह संस्कार तथा १ नामकरण संस्कार कराया गया।

अम्बाला मण्डल—अम्बाला मण्डल में श्री पं० मुनीश्वरदेव जी, पं० हरदयालु जी, श्री देवकीनन्दन जी, श्री जगतराम जी, श्री पं० ओंप्रकाश जी, तथा श्री सूरतराम जी ने प्रचार रूप में कार्य किया। इन के अतिरिक्त समय पर आवश्यकतानुसार केन्द्र से भी इस मण्डल में प्रचारार्थ उपदेशक पधारते रहे हैं।

निम्न संस्कार हुए—११. विवाह जिन से ३५७) के लगभग धन आया। ४. नामकरण, २०. जनेऊ, ३. मृतक।

निम्न स्थानों पर प्रचार हुआ—मोरिण्डा, बसी, शर्कपुर, फतेहपुर, कोटड़ा, बनाना, महबतपुर, सादौरा, गौनपुर, अम्बाला छा., नाभा बनूड़, शदौर, पंचकोड़ा, सनौर, समाना, लुधियाना, शाहाबाद, नारायनगढ़, बरोली, पंजासा, वूबका, काजसपुर, घरौंडा, खिजराबाद, चूहड़पुर, अपरा, जगाधरी, जमनानगर, माडल टाऊन इत्यादि अनेक-अनेक स्थानों पर प्रचार द्वारा लगभग २६६) प्राप्त हुए।

अपरा में यजुर्वेद पारायण महा यज्ञ पं० मुनीश्वरदेव जी की अध्यक्षता में हुआ तथा १५१) दान मिला।

जालन्धर शहर में पं० मुनीश्वरदेव जी की कथा हुई।

निम्न स्थानों पर नई समाजें बनीं—(१) मजाफत

पो० ऑ० विलासपुर, (२) फतहगढ़ पो० ऑ० खिजराबाद, (३) माडल टाऊन जगाधरी।

इसके अतिरिक्त श्री अमरसिंह जी की मण्डली और श्री जगतरामजी ने कर्णपुर, सूरतगढ़, रायसी नगर आदि में विशेष प्रचार किया और इस प्रचार से लगभग ३५०) सभा को प्राप्त हुआ।

२१-४-२००६ से ३०-११-२००६ तक निम्न स्थानों पर प्रचार हुआ—

कालका, मनीमाजरा, खरड़, स्मालवा माजरी, बर्णौदी, रोपड़, नालागढ़, थम्बड़, छछरौली, खारवन, चमकौर, सरहिन्द, कैथल, मेला कपालमोचन, छप्पर, तलाकौर, कोटला, मुस्तफाबाद, गुगलो, दराजपुरा, गढ़ीगुसाईं, कानड़ी, कोला, मोरथला, दादूपुर, सौदागर का माजरा, जयधर, बेगोमाजरा, ठरवा, खदरी, ठाकुरपुरा, बानूड़, राजपुरा, सढौरा, तालेवाला, पोन्टा, रादौर, गुग्टी, ठोल, खदरी, शरकपुर।

जिला गुड़गावां—इस जिले के अध्यक्ष श्री पं० पूर्णचन्द जी सिद्धान्तभूषण हैं। इन्होंने इस वर्ष जिला गुड़गावाँ में शुद्धि के कार्य के अतिरिक्त निम्न स्थानों पर प्रचार किया।

जिला गुड़गावाँ में प्रचार के अतिरिक्त अन्य जिलों की कई आर्यसमाजों के उत्सवों में भी सम्मिलित होते रहे।

लूखी, महेन्द्रगढ़, गुड़गावाँ छावनी, दौलताबाद बसई, वल्लभगढ़, गदपुरी, पलवल, सोहना, धर्मपुरा, तांबूड़, भोंडसी, भौड़ाकलां, रिवाड़ी, बीकानेर, फरुखनगर, फिरोजाबाद, जया, फतहपुर बलोच सुपपेड़, गढ़ी बाजीपुर, मालवा, नगीना, फिरोजपुर, बादशाहपुर, पीनगवां, आकड़ा, उज्जीना, मीतनौल, टीकरी, हथीन, काकड़ी खेड़ा, जाठका, घासेड़ा, गढ़ीमुरली, साकरस, बीके, हसनपुर, इसराना, भाड़ीखेड़ा, भाड़ीखेड़ा पीरतला।

जिला गुरदासपुर—इस जिले में लगातार लगभग चार मास तक श्री स्वामी सुधानन्द जी महाराज श्री महाशय मेहरचन्द जी भजनीक सहित प्रचार करते रहे। यत्न यह किया गया कि सब स्थानों

पर प्रचार हो जाय। शिथिल आर्यसमाजों को दृढ़ किया जाय और अन्य आर्यसमाजों में जागृति पैदा की जाय। जिन स्थानों में आर्य समाज मन्दिर नहीं हैं वहां पर भी प्रचार कराने का प्रयत्न किया गया।

बटाला, फतहगढ़, चूड़िया, धर्मकोट रन्धावा, डेरा बाबा नानक, तलवण्डीरामा, नरोट जयमलसिंह, गगरा, घरोटा, मीरथल, पन्डोरी, काला अफगान, तेजाकलाँ, वड़ालाबागढ़, भागोवाल, पठानकोट, सुजानपुर, कादियां, बुजुर्गवाल, छीना, सुधानियां, नौशहरा, बानसिंह, सुन्वेतगढ़, कोटला।

सं० २००६ में सभा में निम्न भजनीक और उपदेशक कार्य करते रहे:—

श्री पं० रामस्वरूप जी शान्त, पं० मुनीश्वरदेव जी, पं० शिवकुमार जी, पं० हरिदेव जी, पं० रामदत्त जी, पं० रामस्वरूप जी पाराशर, पं० विद्याधर जी, पं० नन्दलाल जी, पं० यश:पाल जी सिद्धान्तालंकार, पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० हरदयालु जी, पं० चिरंजीलाल जी प्रेम, पं० पूर्णचन्द्र जी, पं० निरंजनदेव जी, पं० विद्यारत्न जी वैद्य, म० देवकीनन्दन जी, म० हरिश्चन्द्र जी, म० आशानन्द जी, म० तेजभान जी, म० मेहरचन्द जी, म० रामनाथ जी, म० बृजलाल जी, म० बलराज जी, म० भक्तराम जी, म० शमशेरसिंह जी, म० अमरसिंह जी, म० भगतराम जी, म० चेतराम जी, म० हंसराज जी, म० ओंप्रकाश जी, म० सूरतराम जी, म० सेवाराम जी, ठाकुर उदयसिंह जी, म० सुखराम जी, म० कन्हैयाराम जी, म० यशवन्तसिंह जी, म० जयनारायण जी, म० बलवीरसिंह जी, म० कवलसिंह जी, म० रत्नसिंह जी, म० रणवीरसिंह जी, म० स्वरूपसिंह जी, म० शिवनारायण जी, म० लालचन्द जी, म० शिवलाल जी, म० कालूराम जी, म० गुलाबसिंह जी, म० प्यारेलाल जी, म० ब्रह्मानन्द स्वामी धर्मानन्द जी महाराज।

उपरोक्त महानुभावों के अतिरिक्त निम्न महानुभाव भी सभा के कार्य में सम्पूर्ण सहयोग देते रहे:—

श्री स्वामी आत्मानन्द जी, श्री स्वामी सुधानन्द जी, श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी, श्री स्वामी ज्ञानानन्द जी, श्री स्वामी धर्मानन्द जी, श्री महाशय कृष्ण जी सभा प्रधान, श्री पं०

भीमसेन जी सभा मन्त्री, श्री नन्दलाल जी एम० ए०, श्री पं० ज्ञानचन्द जी बी० ए०, श्री आचार्य प्रियव्रत जी, श्री प्रो० सुखदेव जी, श्री राजारामसिंह जी, श्री लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति, श्री पं० कृष्णचन्द जी शास्त्री, श्री पं० जयदेव जी विद्यालंकार।

ग्राम प्रचार—सभा के वर्तमान मन्त्री श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार गत कई वर्षों से ग्राम प्रचार के कार्य को अधिक विस्तृत करने के लिये बल देते आये हैं। परन्तु कई कारणों से इसे क्रियात्मक रूप न दिया जा सका। गत वर्ष के अन्तिम भाग में छीना जिला गुरदासपुर में ग्राम प्रचार का केन्द्र स्थापित किया गया। श्री पं० बनवारीलाल जी ने इस केन्द्र को सफल बनाने में अनथक परिश्रम किया। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी भी सहयोग देती रहीं। इस योजना के अधीन सुचानिगां छीना और नौशहरा में कन्या पाठशालाएँ स्थापित की गईं। इस वर्ष सम्वत् २००६ में २३ जनवरी को वसन्त के दिन छीना में एक भारी मेले का आयोजन किया गया जिस में आस पास के ग्रामों के अतिरिक्त भारी संख्या में बटाला, गुरदासपुर, धारीवाल तथा पठानकोट के आर्य नर-नारी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर श्री पं० भीमसेन जी सभा मन्त्री तथा श्री पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार अधिष्ठाता वेदप्रचार भी सम्मिलित हुए। ऋषि लंगर लगाया गया, जिसमें हजारों व्यक्तियों ने भोजन किया। इस शुभ अवसर पर सभा मन्त्री श्री भीमसेन जी विद्यालंकार ने इस भूमि के दानी स्वर्गीय सरदार सुचेतसिंह जी की पुण्यस्मृति में सुचेतसिंह धर्मार्थ औषधालय की स्थापना की घोषणा करदी। स्वल्प काल में ही यह औषधालय सर्वप्रिय बन गया और इसमें बीमारों की सख्या दिनों दिन बढ़ रही है। आशा है यह हस्पताल ग्राम प्रचार के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

घाटा—पंजाब विभाजन के पश्चात् सभा का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ गया है। शरणार्थियों के भिन्न२ स्थानों पर बसने से प्रायः प्रत्येक स्थान पर सभासदों की संख्या में वृद्धि हो गई है। समाजों की कार्य क्षमता तथा प्रगति आगे से अधिक हो गई है। प्रचार की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है। बहुत से स्थानों पर नई आर्य समाजें

स्थापित हो रही हैं उपदेशकों की संख्या में वृद्धि की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। विभाजन से पूर्व पूर्वी पंजाब से लगभग १५०००) एकत्रित होते थे। परन्तु सं० २००५ में उपदेशक महानुभावों के प्रयत्न तथा आर्यसमाजों के सक्रिय सहयोग द्वारा ४०,०००) एकत्रित हो गया था और यह पूर्ण आशा थी कि सं० २००६ में लगभग ५००००) एकत्रित हो जायेंगे।

सं० २००६ में निम्न स्थानों में प्रचार हुआ

जिन दिनों में उत्सव नहीं होते उन दिनों में उपदेशक महानुभाव अपने २ मण्डलों में प्रचार का कार्य करते हैं। इस वर्ष जिन स्थानों पर प्रचार हुआ। उनकी सूची जिले अनुसार निम्न प्रकार दी जाती है।

जिला अम्बाला, शिमला—बरौली, बरनाला, चूहड़पुर छछरौली, छप्पर, दादूपुर, फतेहगढ़, गुमटी, गूगलो, धूरी, जतोग, खरड़, कोटड़ाग्राम, कालका, कुराली, खिजराबाद, खो ग्राम, खारवन, कायत मण्डी, खदरी, बण्डी, लेदी, मोरिण्डा, माडलटाऊन (जगाधरी) मनीमाजरा, मुस्तफाबाद, माहिलपुर; नागल, नारायणगढ़, नालागढ़, पंजासा, बरोली, पंचकोहा, पौंटासाहिब, रादौर, रोपड़, शर्कपुर, शेरपुर साढ़ौरा, समौली, स्यालबामाजरी, ठसका, थम्बड़, ताजेवाला, तारादेवी, टूटू, तंगौर, ठाकुरपुरा, वेगोमाजरा, फतेहपुर, कोटड़ा, धनाना, अहवतपुर, गोन्दपुर, अम्बाला छावनी, बूबका, फाजलपुर इत्यादि ५६ स्थानों पर प्रचार हुआ

जिला लुधियाना—भैनी, भ्रष्ठी, धुलेर, भुनेर, जगरावां, खन्ना, खरड़, अच्छरवाल, कांखवाल, दाल बाजार लुधियाना, सा० ब० लुधियाना, जवाहर कैम्प, माडल टाऊन, माछीवाड़ा, परवोवा, समराला, साहनेवाल, सिहाला, ढेहो इत्यादि १८ स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला अमृतसर—बुताला, चुभाल, चण्डीदेवी, फतयाबाद, जण्डियाला गुरु, खलचियां, खेमकरण, मजीठा, नुशहरा पन्नवां, नूरदी, श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर, तरनतारन इत्यादि १२ स्थानों पर प्रचार हुआ।

पटियाला, जींद, नाभा—भटिण्डा, बनूड़, भुच्चो मण्डी, भुसलाना, बसी पठाना, धूरी, दुराहा, फरीदकोट, जीन्द शहर, जैतो, कनीना, कोटकपूरा, कपूरथला, मालेरकोटला, माहूराना कोठी, जरवाना नाभा, पटियाला, पायल, रामामण्डी, रत्नाकगर, राजपुरा, सनौर, सामाना संगरूर, सरहिन्द, सुफीदो सुलतानपुर, अहेलीमण्डी इत्यादि २६ स्थानों पर प्रचार हुआ।

देहली प्रान्त—आदली, बगीची रघुनाथ, लोधीरोड़ देहली, करोलबाग देहली, हनुमान रोड़ देहली, पहाड़गंज देहली, लड्डू घाटी देहली, आर्यनगर पहाड़गंज, भंगी कालोनी देहली, मोर सराय देहली, आर्यपुरा सब्जी मण्डी, औचन्दी, मुड़का, महरौली, माडल बस्ती, नांगलोई नजफगढ़, सादतपुर, शाहिबाबाद, भरियापुर, सोहनगंज देहली, मोतीबाग आदर्श नगर, कोटलांदे, न्यूइन्डस्ट्रीयल नजफरोड़ देहली इत्यादि २४ स्थानों पर प्रचार हुआ।

हिसार—भिवानी, डबवाली, हिसार, उकलानामण्डी, हरियावास, नांगल, दयानन्द भवन, इत्यादि ७ स्थानों पर प्रचार हुआ।

हुशियारपुर—गढ़शंकर, हुशियारपुर, मुकेरियां, जैतों, सहाना कलां, सधोल, भरगेई इत्यादि ७ स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला गुड़गावां—बसई, बलभगढ़, बीकानेर, बादशाहपुर दौलताबाद, फरीदाबाद, फतेहपुरबिलोच, फिरोजपुर झिरका, फरुखनगर, गुड़गावां, गदपुरी, हसनपुर, हथीन, जसा, मोखली, मालब, नगीना, पलवल, पृथला, रेवाड़ी, सीहनी, सुनेपड़, साणरपुर, ओहना साकरस, तावड़, बाहमणीखेड़ा, मितनौर; साकरस, अकेड़ा माजीखेड़ा, उज्झीना इत्यादि ३१ स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला फिरोजपुर—फिरोजपुर छावनी, धर्मकोट, कैनाल-कैलोनी फिरोजपुर शहर, बस्ती टैकांवाली, गिद्दड़वाहा, मुक्तसर, मलोट-मण्डी, मोगा, मलवण्डी, जीरा इत्यादि स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला रोहतक—रोहतक, कलानौर, महम, माडीचेड़ा, सोनीपत, बहादुरगढ़, काहनौर, लाती इत्यादि स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला करनाल—घरौंडा, गुमथलागढ़, हलाहर, इस्माइलाबाद, करनाल, कैथल, खेड़ी, लाडवा, पानीपत, रथ्या, शाहाबाद, सम्भालखां मण्डी, ढोल, उमरी उंयाना इत्यादि १५ स्थानों पर प्रचार हुआ।

गुरदासपुर—भागोवाल, बुर्जग, छीना, चोथा, धर्मकोट रधावा डेरा बाबानानक, फतेहगढ़, चूड़ियां, गुरदासपुर, घरोटा, कालाअफगाना कोटली, सूरतमनी, मोरथला, नरोट जैमलसिंह, पठानकोट, पण्डोरी, सुजानपुर, सुचानियां, तलवण्डी, रामा, तेजा कलां, बडाला, बांगर, सन्तपुरा गुरदासपुर इत्यादि २१ स्थानों पर प्रचार हुआ।

जिला जालन्धर—बस्ती गुंजा, बंगा, बस्ती नवाबेल, गढ़ कैम्प, गांधी कैम्प, जालन्धर छावनी, जालन्धर शहर, गोबिन्दगढ़ जालन्धर, डनकर्क लाइन जालन्धर, कोटबादलखां, फतहपुर, नवांशहर द्वाबा, फिलौर, राहों, रुड़की कलां, तलवन, करतारपुर, बस्तीशेख, इत्यादि १८ स्थानों पर प्रचार हुआ।

पंजाब प्रान्त से बाहिर—नगला, भिवानी, पीला बंगा, रायसीनगर, रामथल, संगरी मण्डी, श्रीगंगा नगर, कर्णपुर, सूरतगढ़, गाजियाबाद, मथुरा, सहारनपुर, गंगोह इत्यादि १९ स्थानों पर प्रचार हुआ।

सं० २००६ में निम्न आर्य समाजें स्थापित हुईं

१. मोतीबाग आदर्श नगर देहली २. लोको इन्जनशैड बठिण्डा ३. नागल पो० औ० लोहारू (हिसार) ४. माडल टाऊन जगाधरी ५. लाली रोहतक ६. मुंढेका पो० औ० बहादुरगढ़ ७. साकरस (गुड़गावां) ८. काड़ी खेड़ा (गुड़गावां) ९. हरियावास पो० औ० कैरूं (हिसार) १०. लड्डू घाटी देहली ११. दयानन्द भवन हिसार १२. कलानौर (रोहतक) १३. माड़ी अटेती (नाभा) १४. साहिबाबाद (देहली) १५. कोटकलां (देहली) १६. आकेड़ा (गुड़गावां) १७. माडलटाऊन लुधियाना १८. माजी खेड़ा, (गुड़गावां) १९. माड़ीखेड़ा (गुड़गावां) २०. अधीना (गुड़गावां) २१. मुरथला पो० औ० कोसली (रोहतक) २२. हैबो (लुधियाना) २३. लिहाला (लुधियाना) २४. दादूपुर जटाना

(अम्बाला) २५. न्यू इन्डस्ट्रीयल एरिया नजफरोड़ देहली २६. ब्राह्मणी-खेड़ा तहसील पलवल जिला गुड़गावां।

हरियाना वेदप्रचार मण्डल का सं० २००६ का वार्षिक विवरण

निम्नलिखित स्थानों पर प्रचार किया गया—

उकलाना, मालपुरा, बिशोहा, लूखी, कनीना, महेन्द्रगढ़, मिर्चपुर, सवाना, दनौदा, रायचन्दवाला, सालवन, खेड़ी सुलतान, चुडाली, सीसौठ कुचराना, कटवाड़, जाजनपुर, बालूनगर, भुसलाना, खेड़ी, अन्तपुरा, गंगट हेड़ी, सोहा, भिवानी, लंढा, धासेड़ा, नरवाना, जींद शहर, संगरूर, निरजन, ईकस, नई दिल्ली, नाभा, इसराना, बघौली, तालोपुर, कुभां, अलेवा, पीलीबगां, भटिण्डा, जुलानी, गौंदा, नया बास, छिनौली, बरौरा, पीपली, माण्डी, सिहौटी, खानपुर, महम, धनाना, भुरथला, बीभगैल, औचन्दी, नागल, बरसौला, खोत, भिटमरा, सिसापा, कारम, मुलापुरा, सीसौद, बिचतडी, कभावला, कैथल, शाहाबाद, धुरी, बोहा, सुरतेवाला, बामला, सफीदूं, साकरस, मवाना, बरेठा, मुण्डा, किराड़ी, खेड़ी आशरा, गढ़ीमुर्ली, बादशाहपुर, तलवंडी साबो, वजीरपुर, गुड़गांव, खोत, बिरला लाईन्स, खानपुर, बीवां, सोनीपत, नांहना, फरमाना, उकलाना, न्यू दिल्ली, बादली, संगरिया मण्डी, बालन्द, कान्हौर, डबवास माजरा, कुतबपुर, लाहिली, नागल, झोझू, सुदकान, नांगलोई, कटेरन, गोदर, मंचूरी, भंगारका, वाडरा, कुशलीपुर, समैपुर ब्राह्मनी, उजूहा, सफीदू, बल्लभगढ़, बागडू, ततिरीकला, पूठरकलां तिगांव, बदरपुर, वढेरा, ताजेपुर, बुखारपुर, बटीना, नाहड़, कुहरावड़, गोरया, नीमौठ, नरायणा, कसौली, पानीपत, झुग्गयावाली, खुई खेड़ा, समालखा, जाखल, देवल, प्रभुवाला, जींद जकशन, दीवान हाल, नगीना, जाजवान, कदवाला, समावाला, करनी खेड़न, हीरावाली, साहूआना बीकानेर, करावड़ा, कुचराना, सिरसा, फीरोजपुर झिरका, घासेड़ा, बिरला लाईन्स पहाड़ गज, नरेला, मुबारिकपुर, हसनपुर, बसी, सिहौरी, मडौरी, मंडौरा, रोहणा, सबा खेड़ा मितरौल, सूरतगढ़, इसरानां, कतलूपुर, तीमारपुर, सदर बाजार, करौल बाग, मालब, उजीजा, डबवाली, बीलीवगां, उकलाना, बगीची रघुनाथ, हरयापुर,

झाडौला, माजरा, निजामपुर गटै, धवेरा, सोहडा, कंटेला, रोहतक, मवाना, काकडौल, सर्गत, मटिंएडू, ग्राम मटिएडू, अबोहर, तिखड़ा, वायडौदा, खरल, गंगानगर, रामा मण्डी, पूना हाना, शाहदरा पलवल, हलालपुर, खोड़ी, हिसार, मानसा, नारायणा पहाड़ गंज, घाघड़िया, वधाना, कापैड़ा ।

निम्नलिखित उत्सवों पर प्रचार किया--

बिशोहा, लूखी, महेन्द्रगढ़, हरिजन (Couf'ase), वीझौल, क० गु० खानपुर, पानीपत, जींद जक्शन, नगीना, शम्शाबाद यू० पी०, बीकानेर गुड़गांव, फीरोजपुर झिरका, घासेड़ा, विरलालाईन्स, गोशाला अबोहर, गोशाला कैथल, शाहाबाद, धुरी, भिवानी, बरैटा, सूरेवाला, दीवान हाल, वजीरपुर, गुड़गांव, साकरस, वीवां, कंझावला, सोनीपत, हनूमान रोड, नागलोई, भगारका, हसनपुर, वसई, नरेला, मालबन, मितरोल, इसराना, मालव, उजीना, नरवाना, वीली वगां, हववाली, सूरतगढ़, सिरसा, उकलाना, मंडौरी, औचन्दी, वल्लभगढ़, दरयापुर, जींद शहर कथा, रोहतक, गौंद्र, काकडौद, मवानाकलां, खेड़ी आसरा, गु० कु० मटिएडू, अबोहर, बोधका, निखड़ा, लडडू घाटी, गंगानगर, रामा मण्डी, शाहदरा दिल्ली, पलवल, अलेवा, पहाड़ गंज, भानसा, नरायणा, खेड़ी सुलतान, तलवण्डी सावो ।

निम्नलिखित नवीन समाजें स्थापित कीं--

भुरथला, नाहड़, कुरहावड़, लायली रोहतक, गोरया, नीमोठ, काकडौद (हिसार), पिनरावा (गुड़गांव), उजीना.

निम्नलिखित समाजों का पुनः संचालन कराया--

कोसली, घोघडिया, वोल, वीवां, साकरस, बसी (गुड़गांव)

आर्य पत्र के १० ग्राहक बनाये ।

निम्नलिखित संस्कार कराये—

(१) यज्ञोपवीत २५०, नये आर्य बनाये, (२) विवाह-संस्कार २० (३) कर्णवेध १, (४) नामकरण १, (५) मुण्डन १, (६) अन्त्येष्टी २ ।

सं० २००६ में निम्न आर्य समाजों ने उत्सव किए

सम्वत् २००५ में इस सभा के वेद प्रचार विभाग द्वारा १६० उत्सव कराये गये। परन्तु सं० २००६ में १६० उत्सव हुए। इस वर्ष निम्न आर्य समाजों ने उत्सव किया।

सं०	नाम समाज	वेदप्रचार प्राप्त धन	तिथि
१	गुरुकुल कांगड़ी		१ से ४ वै.
२	कन्या मिडलस्कूल रोहतक		४ से ५ ”
३	खन्ना	२००)	३ से ५ ”
४	फगवाड़ा	१००)	१० से १२ ”
५	पक्का बाग जालन्धर	७५)	१० से १२ ”
६	बटाला	१२०)	१० से १२ ”
७	जगाधरी	२५१)	१० से १२ ”
८	सरहिन्द	१८०)	१७ से १६ ”
६	छछरौली	१००)	१७ से १६ ”
१०	गुरुग्राम (गुड़गावां)	१००)	१७ से १६ ”
११	झझर	३०)	१७ से १६ ”
१२	खेमकरण	२००)	१७ से १६ ”
१३	तन्दवाल	८०)	२१ से २३ ”
१४	विशोहा	७०)	२३ से २४ ”
१५	लाडवा	१००)	२४ से २६ ”
१६	साहनेवाल	१२५)	२४ से २६ ”
१७	फतेहपुर	१०१)	२४ से २६ ”
१८	लूखी	१५०)	२५ से २६ ”
१६	नारगा	७५)	२६ से २६ ”
२०	बुड्ढा	६०)	२७ से २६ ”
२१	महेन्द्रगढ़	१५०)	२८ से २६ ”
२२	चिन्तपुरनी	२५)	३१ से १-२ ज्ये
२३	खेड़ी सुलतान		७ से ६ ”
२४	पटियाला	४५०)	७ से ६ ”
२५	माजरी श्यालका	३०)	७ से ६ ”

२६	कटड़ा सफ़ेद अमृतसर		१४ से १६ ज्येष्ठ
२७	बणोन्दी पो० ऑ० शाहजादपुर	५१)	१७ से १६ ”
२८	घासेड़ा		१८ से १६ ”
२६	जाजनपुर		२१ से २३ ”
३०	खेड़ा सुलतान	८०)	८ से १० ”
३१	धनाना	७१)	११ से १३ आषाढ़
३२	बीन्झल (पानीपत)	१००)	२१ से २३ आ.
३३	चम्बा	१००)	११ से १३ भा.
३४	झिगशाई	६०)	१८ से २० ”
३५	डलहौजी सदर	१००)	१६ से २२ ”
३६	सपाटू	३०)	२१ से २२ ”
३७	सोलन	६०)	२५ से २७ ”
३८	कसौली	२००)	१ से ३ आश्विन
३६	पानीपत	५००)	१ से ३ ”
४०	सम्मालखा	१००)	४ से ६ ”
४१	बीकानेर (रेवाड़ी)	७५)	४ से ५ ”
४२	लखनपाल धनी पिण्ड	१५)	८ से १० ”
४३	शिमला	५००)	८ से १० ”
४४	जींद जंकशन	१०१)	८ से १० ”
४५	नगीना	१५०)	१३ से १५ ”
४६	नाभा	१६०)	१४ से १७ ”
४७	चमकौर	५०)	१४ से १६ ”
४८	बीकानेर राज्य	३००)	१३ से १६ ”
४६	फतेहगढ़ चूड़िया	१२५)	२२ से २४ ”
५०	फिरोजपुर झिरका	१६५)	२६ से ३१ ”
५१	नवां शहर द्वाबा	२५०)	२६ से ३१ ”
५२	माछीवाड़ा	१०१)	२६ से ३१ ”
५३	घासेड़ी	१००)	१ से ३ ”
५४	रुड़की	५०)	४ से ७ ”
५५	बिरला लाइन देहली	२००)	४ से ७ ”

५६	कैनाल कालोनी	१००)	५ से ७ आश्वि०
५७	धर्मशाला	४०)	५ से ७ ,,
५८	फिरोजपुर छावनी	२००)	१२ से २४ ,,
५९	कालका	२५०)	१२ से १४ ,,
६०	गढ़शंकर	१२५)	१२ से १४ ,,
६१	गोशाला कैथल	१५०)	१२ से १४ ,,
६२	गोशाला अबोहर	१५१)	११ से १३ ,,
६३	किंगजवे कैम्प देहली	१५)	१२ से १४ ,,
६४	कच्चा बाजार अम्बाला छावनी	२५०)	१९ से २१ ,,
६५	भिवानी	५०१)	१९ से २१ ,,
६६	शाहाबाद	२००)	१८ से २० ,,
६७	करतारपुर	२५०)	१९ से २१ ,,
६८	मेला कपाल मोचन		१६ से २० ,,
६९	धुरी	१५०)	२० से २२ ,,
७०	गंगोह	१००)	२२ से २४ ,,
७१	अमृतसर	४००)	२६ से २८ कार्तिक
७२	बरेटा	१५०)	२६ से २८ ,,
७३	सुजानपुर	२२५)	२६ से २८ ,,
७४	बंगा	६०)	३ से ५ मघर
७५	मजीठा	७५)	३ से ५ ,,
७६	पठानकोट	४००)	३ से ५ ,,
७७	तलवण्डी साबो	७५)	१ से ३ ,,
७८	सूरेवाला	१०१)	३ से ५ ,,
७९	दीवानहाल देहली	६५०)	१० से १२ ,,
८०	गुड़गावां छावनी	२००)	१० से १२ ,,
८१	कन्या गुरुकुल खानपुर		१० से १२ ,,
८२	साकरस	१५७)	११ से १३ ,,
८३	कंझावला	२८)	१६ से १८ ,,
८४	बीरां	१२३)	१५ से १७ ,,
८५	कोटला	६०)	१४ से १६ ,,

८६	सोनीपत	२०१)	१७ से १६ मघर
८७	गढी गोसाईं	३०)	१८ से २० ,,
८८	मातव		१८ से २० ,,
८९	ठोल	२२५)	१८ से २० ,,
९०	तंगेर	७०)	२१ से २३ ,,
९१	मोरथला	६०)	२१ से २३ ,,
९२	हनूमान रोड नई देहली	४००)	२४ से २७ ,,
९३	दादू पुर (अम्बाला)	५८)	२५ से २७ ,,
९४	सौदागर माजरा	३०)	२८ मार्गशीर्ष
९५	खिजराबाद	५०)	३ से ६ पौष
९६	रायकोट	१७५)	९ से ११ ,,
९७	जालन्धर शहर	१०००)	९ से ११ ,,
९८	लोपो	४५)	२ से १० ,,
९९	नांगल	१०३)	१६ से १७ ,,
१००	रेहमा	२२)	२९ से १-२ पौ.
१०१	समरा	२०१)	१६ से १७ ,,
१०२	नागलोई	१८१)	२३ से २४ ,,
१०३	कन्या मिडल स्कूल रोहतक		२४ से २५ ,,
१०४	छप्पर	७०)	५, ६, ७ ,,
१०५	नगलर	४०)	११ से १३ माघ
१०६	सुचेतसिंह मेला		११ ,,
१०७	बसई	१७३)	१३ से १५ ,,
१०८	बालन्द	४०)	१७ से १९ ,,
१०९	मितकैल औरंगाबाद	१००)	१६ से १८ ,,
११०	सालवन	१५०)	१९ से २१ ,,
१११	प्रागपुर	७५)	१५ से १६ ,,
११२	गरली	१२५)	१७ से २० ,,
११३	महतपुर	१००)	२२ से २४ ,,
११४	क. स. मोगा	६०)	२२ से २४ ,,
११५	इसराना	१३५)	२३ से २५ ,,

११६	गदपुरी	४४)	२२ से २३	”
११७	मालव	११०)	२२ से २४	”
११८	झीना	१००)	२५ से २७	”
११९	शर्कपुर	५८)	२५ से २७	”
१२०	कतलूपुर	६०)	२६ से २८	”
१२१	पोरस लोही	३५)	२८ से २९	”
१२२	ठाकुरपुरा	८०)	२६ से २८	”
१२३	टौनीदेवी	५०)	२९ से ३०-१ फा.	
१२४	जींद	१०१)	२५ से १ फा.	
१२५	लोधीरोड़ देहली	२९०)	२६ से १	”
१२६	वल्लभगढ़	१५०)	३० से १-२	”
१२७	पीलीवंगा	१२६)	२९ से ३०-१	”
१२८	सूरतगढ़		२ से ४	”
१२९	फगवाड़ा	१२५)	२९ से ३०-१	”
१३०	ओचन्दी	१२५)	२९ से ३०-१	”
१३१	नरवाना	५००)	३, ४, ५	”
१३२	जफरपुर	१०१)	३ से ६	”
१३३	जण्डियाला	१५०)	६ से ८	”
१३४	डबवाली	१७०)	६ से ८	”
१३५	उकलाना	२५०)	६ से ८	”
१३६	सरसा	२००)	६ से ८	”
१३७	हरियाना	११०)	६ से ८	”
१३८	लकसर	१००)	१२ से १४	”
१३९	नारायणगढ़	१००)	१३ से १५	”
१४०	नयाबांस देहली	१००)	१३ से १५	”
१४१	गुरुकुल भैंसवाल		१४ से १६	”
१४२	अटेली मण्डी		१३ से १५	”
१४३	रोहतक शहर	५०)	१३ से १५	”
१४४	काकड़ोद	४०)	१३ से १५	”
१४५	खेड़ी आतर	४०)	१४ से १६	”
१४६	पुड़का		१५ से १६	”

१४७	नरेला	४६)	१३ से १५ ,,
१४८	हसनपुर	७१)	६ से ११ माघ
१४६	मदाना कलां	३०)	३ से ४ फा.
१५०	गुरुकुल कांगड़ी		१६ से २३ ,,
१५१	कादियां	२५)	२१ से २३ ,,
१५२	सिहोरी	१६२)	६ से ११ ,,
१५३	हसनपुर यज्ञ	२०२)	१४ से २० ,,
१५४	गोंदर	१००)	१८ से २० ,,
१५५	दर्यापुर	१००)	६ से ७ ,,
१५६	हलाहर	६०)	४ से ६ मार्च
१५७	गुरुकुल मटिण्डू	१५०)	२३ से २५ फा.
१५८	अबोहर	२००)	२३ से २५ ,,
१५६	इस्माइलागढ़	१००)	२३ से २५ ,,
१६०	चिन्तपूरनी	४०)	२३ से २५ ,,
१६१	जोधका	१००)	२३ से १५ ,,
१६२	निरपुरा	१०१)	२४ से २६ ,,
१६३	दा. बा. लुधियाना	४२०)	४ से ६ चैत्र
१६४	लड्डू घाटी देहली	१२५)	४ से ६ ,,
१६५	छछरौली	७५)	४ से ६ ,,
१६६	लालकुर्ती अम्बाला	२५०)	४ से ६ ,,
१६७	पूनाहाना	५१)	४ से ८ ,,
१६८	दादूपरजायन	६५)	२७ से २६ फा.
१७६	महरौली	२१)	२७ से २६ ,,
१७०	कपूरथला	१५०)	१२ से १४ ,,
१७१	पहाड़ गंज देहली	२००)	११ से १३ ,,
१७२	ताजेवाला	१०४)	७ से ६ ,,
१७३	साहने वाल	१०५)	७ से ६ ,,
१७४	संगरूर	१०५)	१२ से १४ ,,
१७५	श्रीगंगानगर	४००)	१२ से १४ ,,
१७६	अलेवा	१००)	१७ से १६ ,

१७७	खारबन	१००)	११ से १२	,,
१७८	शाहदरा देहली	१५०)	१८ से २०	,,
१७९	खरड़	१५०)	१८ से २०	,,
१८०	बनूड़	१००)	१८ से २०	,,
१८१	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	५५)	१८ से २०	,,
१८२	पलवल	१२५)	१९ से २०	,,
१८३	दुराहा	२५)	२५ से २७	,,
१८४	बस्ती टैंकावाली	१००)	२५ से २७	,,
१८५	हिसार	१११)	२५ से २७	,,
१८६	मानसा	२५०)	२५ से २७	,,
१८७	सुलतानपुर	१६०)	२५ से २७	,,
१८८	नारायण	५०)	२५ से २७	,,
१८९	साधु आश्रम बजवाड़ा	५०)	१० से ११	,,
१९०	बलपुरगढ़	१००)	१७ से १८	,,

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब कार्यालय

सं० २००६ का कार्य वृत्तान्त

परम पिता परमात्मा की अपार दया से विक्रमी सम्वत् २००६ (दयानन्दाब्द १२५) निर्विघ्न समाप्त हो गया है, इस वर्ष की समाप्ति के साथ सभा के जीवन के ६५ वर्ष पूर्ण हो गए हैं।

इस वर्ष १२४ आर्यसमाजों की ओर से २७७ प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित थे।

सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन १६, १७ जुलाई १६४६ को गुरुकुल कांगड़ी में हुआ। जिसमें सर्व सम्मति से निम्न अधिकारी चुने गये :—

श्री म० कृष्ण जी प्रधान, श्री रा० ब० बद्रीदास जी उपप्रधान, श्रीयुत चरणदास जी पुरी उपप्रधान, श्रीयुत नारायणदत्त जी ठेकेदार उपप्रधान, श्रीयुत भीमसेन जी विद्यालंकार मन्त्री, श्री दीवान रामशरणदास जी लुधियाना कोषाध्यक्ष, श्री स्वा० वेदानन्द जी तीर्थ पुस्तकाध्यक्ष।

नोट—श्री दीवान रामशरणदास जी ने स्वास्थ्य शैथिल्य के कारण कोषाध्यक्ष पद का चार्ज नहीं सम्भाला। अतः अन्तरंग सभा ने अपने १४ अगस्त १६४६ के अधिवेशन में श्री दिवाकर जी खोसला बी० ए०, असिस्टैंट मैनेजर, लक्ष्मी इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड देहली को कोषाध्यक्ष नियत किया। जो इस समय बड़ी योग्यता से अपना कार्य कर रहे हैं। सभा को इस प्रकार इस वर्ष एक सुयोग्य और युवक कार्य-कर्त्ता की सेवाएं उपलब्ध हो गई हैं।

निम्न महानुभाव अन्तरंग सभा के लिए समुदाय प्रतिनिधि चुने गये—

श्रीयुत मनोहर जी विद्यालंकार देहली, श्रीयुत केशवचन्द्र जी अमृतसर, मास्टर शिवचरणदास जी देहली, श्रीयुत देवराज जी चड्ढा एम० ए० देहली, मास्टर बद्रीप्रसाद जी जींद, वैद्य कुन्दनलाल जी

लुधियाना, श्री राजारामसिंह जी अम्बाला, पं० पारब्रह्म जी परमार्थी, पं० शिवदत्त जी सिद्धान्त शिरोमणि।

विद्या सभा के अपने पदाधिकार से होने वाले सदस्यों के अतिरिक्त विद्या सभा तथा अन्तरग सभा के शेष सदस्यों के निर्वाचन का अधिकार श्री सभा प्रधान जी को दिया गया और उन्होंने निम्न सदस्य नियत किये।

अन्तरंग सभा—पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० ज्ञानचन्द जी, पं० यशःपाल जी, श्री निरंजनाथ जी, डा० एम० डी० चौधरी, सेठ वृन्दावन जी सोंधी, श्रीयुत रामदत्त जी वकील, श्रीयुत नन्दलाल जी हैडमास्टर।

विद्या सभा—पं० ज्ञानचन्द जी, पं० बुद्धदेव जी, प्रो० वागेश्वर जी, प० वेदव्रत जी, डा० भद्रसेन जी, श्रीमती चन्द्रप्रभादेवी जी, श्री नारायणदास कपूर, पं० यशःपाल जी, श्रीयुत मूलराज जी बी० ए० बी० टी०, पं० विश्वनाथ जी वेदोपाध्याय, पं० मनोहर जी विद्यालंकार, प्रिन्सिपल मानकचन्द जी खोसला, पं० सत्यदेव जी देहली, पं० दीनदयालु जी शास्त्री एम० एल० ए०, डा० रामरखामल जी, श्री नन्दलाल जी हैडमास्टर।

अन्तरंग सभा ने विभिन्न विभागों के कार्य संचालन के लिए निम्न उपसभाएँ और अधिष्ठाता नियत किए:—

(क) छीना भूमि :—अधिष्ठाता श्री० दयाराम जी श्रीहरिगोबिन्दपुर

(ख) रामचन्द स्मारक जम्मू :—अधिष्ठाता श्रीयुत अनन्तराम जी जम्मू

(ग) दीवानचन्द स्मारक :—अधिष्ठाता ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली

(घ) वेदप्रचार, शुद्धि तथा जाति रक्षा और दलितोद्धार, आर्य धर्मार्थ हस्पताल बसधेड़ा, श्री रामदेव स्मारक } अधिष्ठाता पं० यशःपाल जी सिद्धान्तालंकार

(ङ) आर्य हाई स्कूल मायापुर, ज्वालापुर हाईस्कूल ज्वालापुर } अधिष्ठाता पं० दीनदयालु जी शास्त्री एम. एल. ए.

(च) आर्य हाई स्कूल थानेसर :—अधिष्ठाता डा० एम० डी० चौधरी
(छ) आर्य हाई स्कूल पानीपत :—अधिष्ठाता श्रीयुत रामदत्त जी वकील
(ज) चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग
"आर्य" पत्र साप्ताहिक
आर्य हाई स्कूल दीनानगर
} अधिष्ठाता सभा मन्त्री श्री भीमसेन जी विद्यालंकार

झ. डी. एम. कालेज तथा M. D. A. S. हाई स्कूल मोगा : प्रबन्ध उप सभा—श्री प्रधान जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, रा० ब० डा० मथुरादास जी (कार्यकर्त्ता प्रधान), मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (अधिष्ठाता), रा० ब० बद्रीदास जी, प० विश्वम्भरनाथ जी, पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य, प० ज्ञानचन्द जी, प्रिंसिपल डी. एम. कालेज मोगा, ला० रामजी दास जी मोगा, चौ० गणपतिराम जी मोगा, ला० चाननराम जी मोगा।

ञ. धनविनियोगिनी उपसभा—श्रीयुत चरणदास जी पुरी एडवोकेट, पं० ठाकुरदत्तजी शर्मा वैद्य, श्रीयुत नारायणदत्त जी ठेकेदार, श्रीयुत नारायनदास जी कपूर, पं० ज्ञानचन्द जी शर्मा, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, सभा कोषाध्यक्ष।

ट. न्याय उपसभा—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज (रावलपिंडी वाले), प्रिंसिपल राजेन्द्र कृष्ण कुमार जी।

शोक समाचार—इस वर्ष आर्य समाज के पुराने कार्यकर्त्ता श्री ला० हरदयालु जी चोपड़ा बी. ए. का देहावसान हो गया। ऐसे वयोवृद्ध और अनुभवी महानुभाव का वियोग एक भारी क्षति है। अन्तरंग सभा ने उनके वियोग पर दुःख का प्रस्ताव स्वीकार किया।

सभा मुख्य कार्यालय—कार्यालय का कार्य सभा मंत्री जी की देख रेख में चलता रहा। और श्री रा० ब० बद्रीदास जी सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान के रूप में कार्य करते रहे। और सभा को हर प्रकार से उनका संरक्षण तथा परामर्श प्राप्त हुआ। इसके लिये सभा उनकी आभारी है

गत छः सात वर्षों से श्रीमान् निरञ्जननाथ जी सभा के संयुक्त मंत्री के रूप में कार्य करते चले आ रहे थे और अपनी इस वृद्धावस्था में भी वे दिन में कई घण्टे कार्यालय में बैठकर कार्य करते रहे। और वे देहली से जालन्धर जाते रहे। इस वर्ष उन्हें देहली में सभा का एक विशेष कार्य सौंपा गया। पाकिस्तान में छुटी हुई आर्य समाजों के धन की प्राप्ति के सम्बन्ध में जो कार्यवाही चल रही थी उसके लिए भी सभा कोषाध्यक्ष जी की इच्छानुसार कार्यालय के जायदाद निरीक्षक श्री रामचन्द्र जी को कुछ समय के लिए देहली में रखा गया है। यह कार्य बड़ा आवश्यक और परिश्रम साध्य है। मान्यवर श्रीमान् निरंजन नाथ जी इसका निरीक्षण करते रहे और यथावश्यकता स्वयं भी लोगों से मिलते और धन प्राप्ति का यत्न करते हैं। उनकी इस कृपा और प्रेम के लिये मैं उनका हृदय से आभार मानता हूँ।

कार्यालय के अध्यक्ष श्री युगलकिशोर जी सभा के स्थिर कार्य-कर्त्ता हैं। इनके कार्यालय में आठ कार्यकर्त्ता और हैं। वेद प्रचार कार्यालय से लिखे गए पत्रों के अतिरिक्त इस वर्ष सभा कार्यालय से ७६२८ पत्र लिखे गए, १२६३ आय की रसीदें जारी हुई तथा ८६८ व्यय के वौचर बने।

सम्पत्ति रक्षा, विभिन्न मुकद्दमों और कार्यालयके कार्य के अति-रिक्त पाकिस्तान में रह गई आर्य समाजों और संस्थाओं के धन की प्राप्ति के प्रयत्न के परिणाम स्वरूप लगभग पचास हज़ार रुपया सभा को प्राप्त हो चुका है जो अमानत रूप में सभा कोष में जमा है।

१६ जुलाई १६४६ की साधारण सभा ने निश्चय किया था कि सभा का हैड आफिस स्थिर रूप से अम्बाला छावनी में रखा जाय और इसके लिये सरकार से स्थान प्राप्त किया जाय तथा सभा की लाहौर की भूमि के बदले में यहीं स्थान प्राप्त किया जाय। तदनु-सार यत्न किया गया परन्तु अभी तक सरकार से कोई स्थान सभा को प्राप्त नहीं हुआ।

हैड क्वार्टर का निश्चय होते समय अम्बाला के प्रतिनिधि महानुभावों ने स्थान का प्रबन्ध करने का आश्वासन दिया था। परन्तु इसमें सफलता नहीं हुई। अतः अन्तरंग सभा ने सम्प्रति सभा कार्या-

लय के जालन्धर में ही कार्य करते रहने की सम्मति निश्चित की। इस सम्बन्ध में श्री सभा प्रधान जी ने एक घोषणा भी आर्य पत्र में प्रकाशित कर दी थी। अब यह विषय पुनः विचार के लिए सभा में रखा गया है।

पंजाब वैदिक पुस्तकालय—स्थानाभाव और अन्य परिस्थितियों के कारण इसके पुनः स्थापन की अभी तक कोई आयोजना नहीं बन सकी।

लेखराम स्मारक—इस निधि से श्री पं० तुलसीराम जी की विधवा श्रीमती जी के जीवनकाल तक के लिए सहायता देने अतिरिक्त आर्य पत्र के प्रकाशन के लिए ४८२) दिए गए।

'आर्य' पत्र साप्ताहिक—साधारण सभा ने साप्ताहिक आर्य पत्र जारी करने की स्वीकृत दी थी। यद्यपि इसमें सभा को पर्याप्त आर्थिक घाटा सहन करना पड़ता है। परन्तु केवल प्रचार की दृष्टि से सभा इसे चलाने का यत्न करती रहती है। आवश्यक है कि आर्य समाजें और आर्य भाई इसे स्वयं अपनाएँ और दूसरों से भी इसका ग्राहक बनने की प्रेरणा करें। हिन्दी का पत्र होने से देवियों में विशेष रूप से इसकी खपत हो सकती है। इस वर्ष हमने यत्न किया है कि कम से कम घाटा हो और हम बजट में स्वीकृत घाटे की राशि से घाटा न बढ़ने दें। परन्तु इसके स्थिर प्रकाशन के लिए इसे स्वावलम्बी बनाना आवश्यक है। अतः मैं सब प्रतिनिधि महानुभावों और आर्य जगत को प्रेरणा करता हूँ कि वे इस दिशा में सफल उद्योग करें। इस समय इसके ६०० के लगभग ग्राहक हैं। आय-व्यय बजट में अङ्कित है। इसके सम्पादक सभा मन्त्री और सहायक सम्पादक पं० मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्त शिरोमणि रहे।

इस वर्ष इसके तीन विशेषाङ्क दीपावली, शिवबोधाङ्क तथा गुरुकुलांक प्रकाशित हुए।

श्री चमूपति साहित्य विभाग—गत वर्ष सत्संग पद्धति तथा शक्ति रहस्य नामक पुस्तकें प्रकाशित कराई गई थीं। इस वर्ष कोई विशेष पुस्तक अथवा ट्रैक्ट प्रकाशित नहीं हो सके, सभा ने इस

वर्ष "वैदिक दैनन्दिनी" अर्थात् डायरी छपने की स्वीकृति दी थी। जो २००० की संख्या में प्रकाशित कराई गई और प्रथम प्रयास होने के कारण तथा उसकी खपत और प्रचार के विचार से उसे लागत मूल्य से कुछ कम मूल्य लेकर एक आर्य सज्जन को बिक्री के लिए सब प्रतियां दे दी गई हैं। इस प्रकार सभा को आय की अपेक्षा १३८) कम मिले जो अन्तरंग सभा की आज्ञा से मुफ्त प्रचार पर डाले गए।

पंजाब आर्य शिक्षा समिति—शनैः शनैः यह संस्था पाकिस्तान जन्य कठिनाइयों को पार करती जा रही है और पूर्वी पंजाब में इसके साथ सम्बन्धित संस्थाएँ बढ़ती जा रही हैं आर्य संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा के निरीक्षण का कार्य इसके निरीक्षक श्री प० जयदेव जी करते हैं। सम्वत् २००६ में समिति के प्रधान श्री ला० मूलराज जी बी० ए० बी० टी० और मन्त्री श्री ला० कृपाराम जी एम० ए० रिटायर्ड हैडमास्टर रहे।

दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला शहर—श्री ला० सीताराम जी मालिक फर्म मथुरादास, पन्नालाल अम्बाला शहर इस औषधालय की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उन्हीं के प्रयत्न से इस संस्था के स्थिर कोष के रूप में लगभग २६०००) की राशि जमा है। सभा की ओर से इसके इञ्चार्ज श्री राय अमृतराय जी नियत थे। उनका देहान्त हो जाने के कारण श्री सभा मन्त्री जी (जो अम्बाला में ही रहते हैं) के परामर्श से श्री ला० सीताराम जी देख-भाल करते रहे। यह संस्था अम्बाला शहर में बहुत प्रिय है और इसके द्वारा भारी संख्या में रोगी लाभ उठाते हैं। श्री पं० रामचन्द्र जी वैद्य शास्त्री सुयोग्य चिकित्सक हैं जो इस औषधालय के इञ्चार्ज हैं। इस औषधालय की सत्ता को स्थिर और अधिक लाभप्रद बनाने के लिए उसके विधि-विधान में परिवर्तन की आवश्यकता उन्हें अनुभव हो रही है, जो विचाराधीन है।

दीवानचन्द स्मारक हस्पताल औचन्दी—स्वर्गीय श्री ला० दीवानचन्द जी ठेकेदार के दान से यह संस्था चली है। श्री ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार इसके अधिष्ठाता हैं और कविराज हंसराज वैद्य इसके इञ्चार्ज हैं। इस औषधालय से १५७८५ रोगियों

ने लाभ उठाया। यह औषधालय आस पास के इलाके में ग्राम प्रचार का बड़ा उपयोगी केन्द्र बन रहा है। आय व्यय बजट में अंकित है।

आर्य धर्मार्थ हस्पताल छीना—सरदार सुचेतसिंह छीना निवासी अपनी सम्पत्ति की वसीयत वेद प्रचारार्थ सभा के नाम कर गए थे। तदनुसार छीना भूमि की जो आय होती है, वह वेद प्रचार पर व्ययकी जाती है। गत दो वर्षोंसे सभा यत्न करती रही है कि छीना को ग्राम प्रचार का केन्द्र बनाया जाए। गत वर्ष श्री हरिदेव जी को छीना के आस पास के ग्रामों में पाठशालाएँ खोल कर लोगों को हिन्दी सिखाने के लिए नियत किया गया था, इससे उनको ग्रामीण जनता को धर्म सम्बन्धी बातें बताने का भी अवसर मिलता था। इस वर्ष वसन्त पंचमी के दिन छीना में ग्राम प्रचार केन्द्र के रूप में एक धर्मार्थ औषधालय भी खोल दिया गया है। इसके अध्यक्ष पं० दीवानचन्द जी वैद्य हैं जो कुछ समय पूर्व सभा के उपदेशक भी रहे थे। इस समय छीना प्रचार का बड़ा उपयोगी केन्द्र बन रहा है। श्री स्वा० कृष्णानन्द जी का हैडक्वार्टर भी वहां है और श्री पं० बनवारीलाल जी बी० ए० से भी, उस इलाके में इस दिशा में सहयोग लिया जाता है। थोड़े से समय में ही औषधालय बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। इस समय लगभग ७० व्यक्ति दैनिक इससे लाभ उठाते हैं।

आर्य हस्पताल चीचियां—चीचियां (जिला कांगड़ा) में गत ५, ६ वर्षों से एक धर्मार्थ औषधालय जारी है। पहिले यह दलितोद्धार सभा के आधीन था, अब इसको वेद प्रचार विभाग के आधीन ले लिया गया है। इसके इश्चार्ज श्री पं० विद्यारत्न जी स्नातक हैं। इस औषधालय के संचालन के लिए श्री सेठ दीवानचन्द जी वर्मानी से सहायता मिलती आ रही है। यह भी ग्राम प्रचार का एक केन्द्र है।

शुद्धि—दलितोद्धार सभा का पूर्व रूप समाप्त हो जाने के बाद दलितोद्धार शुद्धि तथा रक्षा विभागों को एक ही कर दिया गया है जो वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता के आधीन है। वर्ष के आरम्भ में इस कार्यपर श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी तथा पं० पूर्णचन्द्रजी सिद्धान्त भूषण को भी उनके साथ कार्य पर लगा दिया गया। परन्तु इस कार्य

में कई प्रकार की कठिनाइयां हैं। आवश्यक अनुभव होने पर वर्ष के मध्य में पं० पूर्णचन्द्र जी के साथ स्वामी धर्मानन्द जी को भी लगाना पड़ा। जिन्होंने क्षेत्र तय्यार किया। यह कार्य निरन्तर जारी है। पं० पूर्णचन्द्र जी इसके अतिरिक्त जिला गुड़गावां में जागृति उत्पन्न करते रहे हैं।

कुम्भ प्रचार—इस वर्ष कुम्भ का अवसर था, यथापूर्व हमारी सभा ने कुम्भ प्रचार के लिए ५,०००) का बजट निश्चित किया था। साधारण सभा ने आज्ञा दी थी कि इसके लिए दान संग्रह करके व्यय किया जाए। अतः श्री स्वा० सुरेश्वरानन्द जी महाराज को जाति रक्षा के कार्य के अतिरिक्त इसके लिए नियत किया। परन्तु श्री स्वामी जी का स्वास्थ्य कुछ शिथिल हो गया और इसी बीच में सार्वदेशिक सभा ने कुम्भ प्रचार का कार्य अपने हाथ में लेने की घोषणा की और ५०००) मांगा। श्री स्वा० सुरेश्वरानन्द जी के यत्न से पर्याप्त धन इकट्ठा हुआ था, वह साहित्य बांटनेपर व्यय कर दिया गया और इसके अतिरिक्त १०००) सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित कुम्भ प्रचार फण्ड में श्री सभा प्रधान जी की आज्ञा से साधारण सभा की स्वीकृति की आशा में वेदप्रचार कोष से भेज दिया गया। श्री स्वा० वेदानन्द तीर्थ जी पुस्तकाध्यक्ष सभा कुम्भ कैम्प के अध्यक्ष थे। श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी भी उनके साथ कार्य करते रहे।

पंजाब पीड़ित सहायता—पश्चिमी पंजाब पीड़ित आर्य भाइयों की सहायता का कार्य अभी तक जारी है। २५०० आर्य परिवारों की सहायता की गई है और सभा ने इस कार्य पर इस समय तक लगभग ३००००) व्यय किया है। अब स्वभावतः इस कार्य की गति धीमी होती जा रही है, परन्तु अब भी अनेक भाई दुःखी और सहायता के पात्र हैं।

वसीयतें—श्री भागीरथलाल जी थानेसर निवासी ने सभा के नाम अपनी सम्पत्ति की वसीयत की हुई थी, जिसका कुछ भाग पूर्व मिल गया था, और इस वर्ष उनकी धर्मपत्नी का देहान्त होने पर लगभग २०००) की राशि और प्राप्त हुई है, जो गुरुकुल कुरुक्षेत्र में उनकी

स्मृति में इमारत पर लगाने के लिए दे दिया गया है। श्री भागीरथलाल जी के मकान के सम्बन्ध में कार्यवाही की जा रही है।

(२) श्री मैय्या दास जी चकभुमरा निवासी अपनी अवशिष्ट चल सम्पत्ति की वसीयत कर गए हैं। इस वसीयत के सम्बन्ध में गुरुकुल कांगड़ी द्वारा कानूनी कार्यवाही की जा रही है। इसका निश्चित परिणाम अगली रिपोर्ट में आ सकेगा।

विशेष—यह वर्ष सभा के इतिहास में इस दृष्टि से बड़ा महत्व पूर्ण रहा है कि सभा का मुख्य संस्था गुरुकुल कांगड़ी को स्थापित हुए पचास वर्ष हो जाने के कारण इस वर्ष उसका स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। श्री पं० विश्वनाथ जी स्वर्ण जयन्ती समिति के सभा मन्त्री बनाये गये। इस उत्सव की सफलता का श्रेय गुरुकुल प्रेमी आर्य जनता तथा गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० इन्द्रजी विद्या-वाचस्पति आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति तथा श्री पं० विश्वनाथ जी स० मुख्याधिष्ठाता को विशेष रूप से है। इस अवसर पर भारत गणराज्य के राष्ट्रपति माननीय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी दीक्षान्त भाषण देने के लिए गुरुकुल पधारे और उन्होंने भारत सरकार की ओर से एक लाख रुपये का दान घोषित किया। उत्तर प्रदेशीय सरकार के मंत्री श्री सी० बी० गुप्त भी पधारे. सरकार की ओर से विभिन्न कार्यों के लिए ६२,००० गुरुकुल को मिला है। स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का विस्तृत वृत्तान्त गुरुकुल कांगड़ी की रिपोर्ट में अंकित है।

भारतीय संसद् की सदस्यता—हर्ष का विषय है कि श्री पं० इन्द्र जी विद्या वाचस्पति मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी भारतीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य नियत हुए हैं। आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रथम स्नातक तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान हैं। इससे आर्य समाज, गुरुकुल और सभा, सब की शोभा बढ़ रही है।

राष्ट्रपति को बधाई—राष्ट्रपति माननीय श्री डा० राजेन्द्र-प्रसाद जी को २६ जनवरी ५० को भारत के सर्व प्रभुत्व सम्पन्न लोक

तन्त्रात्मक गणराज्य घोषित होने और उसके सर्व प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर सभा की ओर से बधाई भेजी गई।

यूनीवर्सिटी शिक्षा संस्थाएँ— इस समय सभा के आधीन निम्न कालेज और स्कूल चल रहे हैं :—

(१) **एम० डी० कालेज मोगा**—यह कालेज गत २४ वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में बड़ा महत्व पूर्ण कार्य कर रहा है। विद्यार्थियों की सख्या ५६२ है। प्रिंसिपल श्री राजेन्द्र कृष्णकुमार जी हैं।

(२) **एम० डी० ए० एस० हाई स्कूल मोगा**—स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या १३८ है. इसके हैडमास्टर ला० मंहगाराम जी बी० ए० बी० टी० हैं।

(३) **आर्य हाई स्कूल थानेसर**—विद्यार्थियों की संख्या २८१ है। हैडमास्डर ला० शोभाराम जी हैं।

(४) **आर्य हाई स्कूल मायापुर**—विद्यार्थियों की संख्या २३७ है। इसके हैडमास्टर श्री कान्ताराम शर्मा बी० ए० एल० टी० हैं।

(५) **आर्य हाई स्कूल दीना नगर**—

(६) **आर्य हाई स्कूल पानीपत**—

(७) **आर्य स्कूल ज्वालापुर**—

(८) **आर्य शिक्षा मण्डल**—छै वर्ष पूर्व आर्य शिक्षा मण्डल की स्थापना हुई थी। उसमें सभा की ओर से १० प्रतिनिधि सम्मिलित हैं। स्वर्गीय श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी अपने जीवनकाल में इसे जीवित जागृत संस्था बनाने का यत्न करते रहे। परन्तु पंजाब के बटवारे से उसमें भारी बाधा उत्पन्न हो गई, और श्री पण्डित जी का वियोग तो समस्त आर्यजगत् के लिए ही एक भारी क्षति है।

इस समय आर्य शिक्षा मण्डल के आधीन द्वाबा कालेज तथा कन्या महा विद्यालय जालन्धर चल रहे हैं। इस संस्था को विस्तृत और दृढ़ बनाने का यत्न करना चाहिए।

पंजाब यूनीवर्सिटी सेनिट—इस वर्ष पंजाब यूनीवर्सिटी की सेनिट का चुनाव था। इस बार, सभा ने भी अपनी ओर से प्रतिनिधि मनोनीत किए। हर्ष का विषय है कि श्रीयुत नन्दलाल जी हैड-मास्टर विक्टर हाई स्कूल जालन्धर छावनी और श्री० दिलीपचन्दजी हैड मास्टर आर्य हाई स्कूल लुधियाना दोनों ही रजिस्टर्ड ग्रेजुएट्स की कान्स्टीचुएन्सी से पंजाब यूनीवर्सिटी सीनिट के सदस्य निर्वाचित हो गए हैं। दोनों महानुभाव प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों के शिक्षणालयों के मुख्याध्यापक हैं।

अन्त में मैं परम पिता परमात्मा का पुनः धन्यवाद करता हूं कि जिनका सभा के कार्यों में उत्साहजनक आशीर्वाद मिलता रहा है।

नये वर्ष का जो कार्यक्रम निश्चित होगा, उसमें एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि सन् १९५१ में जन गणना हो रही है। उस अवसर पर आर्य भाइयों को वास्तविक गणना के लिए पूर्ण रूपेण गतिशील होना चाहिए; और यह प्रयत्न करना चाहिए कि पंजाब की राजनीति में साम्प्रदायिकता और उस से उत्पन्न होने वाले हानिकारक परिणामों से पंजाब सुरक्षित रखा जाए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालंधर शहर-

"Liabilities"

क्रम संख्या		सं० २००२ के अंत पर	सं० २००४ के अंत पर
	सभा के अपने फण्ड		
१	वेद प्रचार स्थिर-कोष	११५०००)	१५००००)
२	वेद प्रचार निधि	८०७४॥≡)८	५८०८)
३	आचार्य रामदेव स्मारक	६१६१-)॥।	८०००)
४	सेठ हरीराम वेद प्रचार ट्रस्ट	३०००)	३०००)
५	म० रामचन्द हकीम राऊवाल वेद-प्रचार ट्रस्ट	५०००)	५०००)
६	आर्य नगर	४६२५≡)॥	४६२५)
७	लेखराम स्मारक	३४२३०)	३५१३६)
८	विदेश प्रचार	६६६५०॥=)	६७७२०)
९	दयानन्द व्याख्यान माला	२२७४।-)	२२७५)
१०	श्रद्धानन्द स्मारक शुद्धि तथा प्रकाशन	८६५।।।)१	९८०)
११	उपदेशक विद्यालय-स्थिर	१०९०.०)	१००००००)
१२	दीवानचन्द स्मारक-स्थिर	१०००००)	९४८००)
१३	वसीयतें	५८१३७॥=)	५७९५९)
१४	अमानतें	१०१८७५=)२	६१००९)
१५	विविध संस्थाएं	६०३५९॥=)११	६०३६०)
१६	अज्ञात (Suspense account) दलितोद्धार सभा	११७६९।।।-)	१९८६२५)
१७	दयानन्द दलितोद्धार सभा स्थिर	४०००)	४०००)
१८	,, ,, ,, वसीयत रामनाथ	१०००)	१०००)
	PERSONAL Liabilities		
१९	पैंशन कण्ट्रीब्यूशन	३१६२९॥≡)६	२८२४३)
२०	प्रोविडेण्ट फण्ड (सभा तथा मोगा कालेज जिसमें कालेज का बोनस भी शामिल है)	५९६२३≡)७	५५०१५)
२१	बोनस (सभा कार्यालय, वेद प्रचार विभाग)	२२२६३॥=)१	१७५४२)

—शेष पत्र संवत् २००४ के अन्त पर

ASSETS

क्रम संख्या	निधियां	सं० २००२ के अन्त पर	सं० २००४ के अन्त पर
१	विद्यार्थी आश्रमशाला तथा स्नानागार	८६८०३—)४	८६८०३)
२	गुरुदत्त भवन में हाईस्कूल बनाते समय विद्यार्थी आश्रम के कमरों में आवश्यक परिवर्तन पर हुआ व्यय	६६५०।≡)।	६६५०)
३	राजपाल ब्लाक	६१६७॥=)।	१८०००)
४	शीशमहल भूमि विद्यार्थी आश्रम ऋण	४८७२१=)	४८७३२)
५	विद्यार्थी आश्रमशाला पश्चिम भाग (विनियोग)	१०८६३)	१०८६३)
६	दलितोद्धार सभा शाला	५६२४॥=)॥।	५६२५)
७	उपदेशक विद्यालय शाला	२६४८५।≡)	२६४८५)
८	उपदेशक विद्यालय शीशमहल लाहौर भूमि	५५१४=)	५५१४)
९	उपदेशक विद्यालय शीशमहल लाहौर भूमि ऋण	१३४००)	१३४००)
१०	सुन्दरदास आर्यधर्मशाला	११३०५॥=)।	११३०६)
११	गुरुदत्त भवन डाकखाना शाला (विनियोग)	४४५६)॥	४४५६)
१२	बच्छोवाली लाहौर हवेली उपेन्द्रनाथ वाली	२८४८८।=)॥	२६०००)
१३	डी. ए. वी. हाई स्कूल मिण्टगुमरी स्कूल बिल्डिंग	२८३५६।≡)	२८३५६)
१४	मिंटगुमरी स्कूल कोठी (बोर्डिंग हाऊस)	५०००)	५०००)
१५	मिंटगुमरी स्कूल भूमि तथा क्रीड़ास्थान (Play ground)	७४७५)	७४७५)
१६	दीवानचन्द स्मारक सैदपुर भूमि तथा शाला	२४१७६॥।)	२४१८०)

नोट—सम्वत् २००३ के रिकार्ड पाकिस्तान में रह जाने के कारण आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

LIABILITIES

क्रम संख्या	निधि	सं० २००२ के अन्त पर	सं० २००४ के अन्त पर
	"हीरक जयन्ती"		
२२	सेठ खेमचन्द खुशा बाई ट्रस्ट		५०००)
२३	ला० मानकचन्द बजाज हीरक जयन्ती दान गुरुदत्त भवन द्वार		१०००)
२४	हीरक जयन्ती दान	२५०८४६॥≋)॥	७०४६५)
	"Other Liabilities"		
२५	पं० ठाकुरदत्त शर्मा वेद भाष्य गद्दी	३००००)	३००००)
२६	वेद भाष्य	८०००)	८०००)
२७	पं० ठाकुरदत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट (लघु धर्म पुस्तक प्रकाशनार्थ)	१०००)	१०००)
२८	आर्य शिक्षा मण्डल		४७७६)
२९	आर्य कालिज लुधियाना (Margin money		२५०००)
३०	श्री ला० नारायणदत्त जी वास्ते लखनवाल (गुजरात) हस्पताल		१०००)
३१	रा० ब० डा० हरिराम आर्य हाई स्कूल जलालपुर कीकनां	६५०००)	८५०००)
३२	रा० स० मय्याभान आर्य हाई स्कूल फुलर्वान		५५००)
३३	दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला	१६१००॥≈)॥।	२५५४८)
३४	गौशाला अम्बाला शहर	३६०७॥≈)	३६०७)
३५	डी० ए० वी० मिडल स्कूल टौनी देवी स्थिर		२०००)
३६	डी० ए० वी० मिडल स्कूल टौनी देवी		६०८)
३७	डी० एम० कालेज मोगा स्थिर निधि	५२५००)	५२५००)
३८	सूद बैंक		१०७७)
	Donation for Buildings and Lands		
३९	विद्यार्थी आश्रमशाला तथा स्नानागार	८४०२८॥≈)४	८४०२८)

ASSESTS

क्रम संख्या	निधियां	सं० २००२ के अन्त पर	सं० २००४ के अन्त पर
१७	विभिन्न आर्यसमाज मन्दिरों पर विनियोग	४५८८॥।)	४५८६)
१८	शीशमहल लाहौर भूमि (इस भूमि पर) लगा हुआ है। जिसमें से गुरुकुल कांगड़ी के शेष पत्र) है और ४८७३२) विद्यार्थी आश्रम शीशमहल भूमि ऋण तथा १३४००) उपदेशक विद्यालय शीशमहल भूमि ऋण के नाम दिखाया हुआ है)	३३५७७=)११	३३५७७)
१९	गुरुदत्त भवन दीवार (यह दीवार झगड़े के दिनों में रक्षार्थ ऊँची कराई गई थी)		४०००)
२०	नौलखा भूमि लाहौर यह भूमि गुरुकुल के शेपपत्र में अंकित है		
२१	ओकाड़ा भूमि (लगभग १४ एकड़) ११० कनाल १ मरला दर ३५००) एकड़। अन्तरंग सभा प्रस्ताव सं० १ तिथि २९-३-४६ ८-१२-२००२	४८५००)	४६०००)
२२	पाकपटन भूमि (लगभग ३५ कनाल) मूल्य से ली गई भूमि के अतिरिक्त (इस ३५ कनाल में एक दो कनाल भूमि हिब्बा हुई हुई शामिल है) लगभग ४ कनाल भूमि बोर्डिंग हाऊस के लिये भी दान में मिली थी। अन्तरंग सभा प्रस्ताव सं० ५ तिथि ११-११-४५	१३५००)	१४०००)
२३	शुजाबाद भूमि (गुरुकुल मुलतान)	५०००)	५०००)
२४	गुरुकुल बेट सोहनी तथा चन्दूलाल एस्टेट भूमि १ वेद प्रचार ४३००) २ गु० कु० मुलतान ४५००) ३ गु० कु० वेट सोहनी १११९००)		२३३५००)

Liabilities

क्रम संख्या	निधियां	सं० २००३ के अन्त पर	सं० २००४ के अन्त पर
४०	राजपाल ब्लाक		१८०००)
४१	उपदेशक विद्यालयशाला दान	२६४८५।≡)	२६४८५)
४२	दलितोद्धार सभा शाला	४६२४॥।≈)॥।	४६२५)
४३	सुन्दरदास आर्य धर्मशाला गुरुदत्त भवन	१२७६६॥≡)	१२७७०)
४४	बख्शी झंडामल	५०००)	५०००)
४५	लाहौर वच्छोवाली पुरुष तथा स्त्री समाज की अमानत का धन (अमानतों से)		८०६०)
४६	डी. ए. वी. हाई स्कूल मिंटगुमरी बिलडिंग दान	२४२५४॥।≈)॥।	२४२५५)
४७	दीवानचन्द स्मारक संस्थाएँ सैदपुरशाला	२५०००)	२५०००)
४८	गुरुकुल मुलतान भूमि	५०००)	५०००)
४९	चन्दूलाल ऐस्टेट भूमि की निधियों में बांट:—		२३३५००)
	१. वेद प्रचार ४३००)		
	२. गुरुकुल मुलतान ४५००)		
	३. ,, बेटसोहनी १११९००)		
	४. गौशाला ,, ११३६००)		
	Stock		
५०	चमूपति साहित्य विभाग (पुस्तक फण्ड)	१०२१५–)॥।	१०१८५)
५१	,, ,, चलत	६११।–)॥।	६११)
५२	अनुसन्धान विभाग तथा प्रकाशन	४८५।≈)॥	३८०)
	Lands		
५३	कुरुक्षेत्र भूमि दान	१३३)	१३३)
५४	जालन्धर भूमि Guarantee account	५०००)	५०००)
	धरोहर		
५५	गुरुकुल कांगड़ी धरोहर		१७१६१७)
५६	,, ,, ,, नया		२२४३)

ASSESTS

क्रम संख्या	निधियां	सं. २००२ के अन्त पर	सं. २००४ के अन्त पर
	४ गौशाला वेट सोहनी ११३६००)		
	"PAKISTAN LOSSES CLAIMED"		
२५	चमूपति साहित्य विभाग पुस्तकें	११०२१।≡)।	११०२१)
२६	हिंदी सत्यार्थ प्रकाश		१०७६)
	उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	१०००)	२०००)
२७	कागज़ भण्डार	७४०॥)।	११०००)
	"पुस्तकों के Stock की यह केवल वही Items हैं जो सभा के balance sheet में अंकित थीं। इसके अतिरिक्त पंजाब वैदिक पुस्तकालय का रिकार्ड, उपदेशक विद्यालय, आर्य हाई स्कूल गुरुदत्त भवन तथा दयानन्द दलितोद्धार सभा की पुस्तकें, साइंस का सामान, Furnitureआदि भी थे जोBalance sheet में अंकित नहीं थे। यही स्थिति सभा अधीनस्थ अन्य स्कूलों के Furniture साइंस के सामान, और रिकार्ड आदि के सम्बन्ध में है जो पाकिस्तान में रह गये हैं।	६०७८॥-)॥।	२०००)
२८	आर्य हाई स्कूल के ओकाड़ा चलत व्यय का घाटा	६,६३८॥।≡)	१४०००)
२९	आर्य हाई स्कूल पाकपटन	८,६४२॥=)॥।	२०००)
३०	आर्य पुत्री पाठशाला किला गुजरसिंह (आर्य समाज के नाम Advance)	१,११८॥=)	१११९)

Liabilities

क्रम संख्या	निधियां	सं. २००२ के अन्त पर	सं. २००४ अन्त पर
५७	कन्या गुरुकुल देहरादून धरोहर	२६७६६।।।-)२	१४५४१)
५८	,, ,, बदरपुरभूमि बयाना		२५०००)
५९	पंजाब नैशनल बैंक लि० माल रोड लाहौर		३०८६२)
६०	,, ,, ,, ,, रेलवे रोड जालन्धर		१८६२)
	,, ,, ,, ,, सब्जी मण्डी देहली		
	मिश्रित		
६१	गुरुकुल बेट सोहनी [द्वारा प्रभात बैंक जो अभी नहीं मिला]		२५००)
६२	श्री मोतीराम साहित्य प्रकाशनार्थ दान [द्वारा फ़र्म कृपाराम ब्रदर्स]		२१८००)
६३	राजपाल बलिदान	६१०५)	
६४	दलितोद्धार सभा	६३६=)१	
६५	घिसावट फण्ड	३६०)	
६६	उर्दू सत्यार्थ प्रकाश	४५५०।।=)।।	
६७	दयानन्द बेलीराम डिग्री कालिज स्यालकोट	७५०००)	
६८	भलवाल तथा जलालपुर कीकनां स्कूल का जमा	१६८६।।।)।।	
	A. भलवाल		५००)
	B. जलालपुर कीकनां		१०००)
६९	आर्य कालिज लुधियाना स्थिर कोष	१०००००)	१०००००)
७०	जाति रक्षा		
७१	कन्या गुरुकुल धरोहर [नया]		
७२	पंजाब नैशनल बैंक लि० सब्जी मण्डी		
	योग	१६८८२१८।।।)७	२११८४६५)

Assests

क्रम संख्या	निधियां	सं. २००२ के अन्त पर	सं. २००४ के अन्त पर
३१	आर्य हाई स्कूल गुरुदत्त भवन लाहौर चलत	१८,३८७॥)१०	१६३००)
३२	मिंटगुमरी डी. ए. बी.कालेज शाला	२७८८)	२७८८)
३३	अगाऊ डी. ए. बी. हाई स्कूल मिंटगुमरी	१०००)	८३७)
३४	इम्प्रैस्ट (पुराना)	५००)	४७०)
३५	अगाऊ (पुराना)	१४५८४॥=)॥	१४०६८)
३६	एजेन्ट अकौंट (वेद प्रचार)	१२००६।≡)।	१२६७०)
३७	,, (नया)		८३८८)
३८	ऋण (पुराना)	१२५०७-॥-)	२२२५८)
३९	सूद प्राप्तव्य	१२६६६॥=)	
४०	प्रभात बैंक लिमिटेड		२५००)
४१	अमानत बिजली कम्पनी लाहौर	३००)	३००)
४२	लाहौर सैंट्रल कोआपरेटिब बैंक लिमिटेड (F/D)		१२०००)
	"अन्य (पूर्वी पंजाब में)"		
४३	छीना कोठी	१४७४।)॥	१४७४)
४४	छीना भूमि	३४०००)	३४०००)
४५	कुरुक्षेत्र भूमि विनियोग	६६२।=)॥	६६२)
४६	डी. एम. कालेज मोगा शाला पर लगा (कुल २२३५०) है जिस में से १४९००) गुरुकुल शेष पत्र का है)	७४५०)	७४५०)
४७	जालन्धर भूमि विनियोग	३०६२४)	३०६२४)
४८	बाग मूलादेवी ज्वालापुर		३१०००)
४९	आर्य समाज मंदिर लुहारु पर लगा	३०००)	६०००)
५०	डी. ए. बी. हाई स्कूल मिंटगुमरी		५२३४)
५१	दयानन्द दलितोद्धार सभा अगाऊ		४०००)
५२	अनुसंधान विभाग		८५९)

ASSETS

क्रम संख्या	निधियां	सम्वत् २००२ के अन्त पर	सम्वत् २००४ के अन्त पर
	"Securities and Cash Deposits"		
५३	Post office twelve years No Savings Certificates (payable at Delhi)		२००००)
५४	„ (in Pakistan)		२१७००)
५५	Prize Bond		१००)
५६	अमृत बैंक लिमिटेड अमृतसर (F. D.)		१००००)
५७	हिमालय बैंक „ हमीरपुर „		१४००)
५८	अंजमन इमदाद बाहमी टौनी देवी „		५००)
५९	पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड चादनी चौंक देहली चलत		१९०२०५)
*६०	पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड रेलवे रोड़ जालन्धर चलत		
६१	इलाहाबाद बैंक लि० जालन्धर चलत		४६३)
‡६२	स्टील एण्ड जनरल मिल्ज़ कम्पनी लिमिटेड Debentnres	५००००)	५००००)
६३	सरस्वती शूगर सिण्डीकेट लिमिटेड अब्दुल्लापुर F. D.		२००००)
६४	न्यू बैंक आफ इण्डिया लि०- चादनीचौंक देहली F. D.	———————	३६९६०)
६५	न्यू बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड- सन्लाइट बिल्डिग लाहौर		६२५०)
६६	न्यू बैंक आफ इण्डिया लिमिटिड- मालरोड़ ब्रांच लाहौर		३५००)
६७	पंजाब नैशनल बैंक लि० चांदनी चौक देहली „गवर्नमेंट सिक्सटरीज़ (Covt. Securities)		१६०००)
६८	3%Devleopment loan of 1970—75		१५००००)

* २००३ में प्रताप बैंक में ११०००)   ‡ २००३ में प्रभात बैंक में ५३३६।)

ASSETS

क्रम संख्या	निधियां	सम्वत् २००२ के अन्त पर	सम्वत् २००४ के अन्त पर
६६	4% Loan of 1960—70		१७५०००)
७०	3% Punjab Bond of 1952		१८६३००)
७१	4% ,, ,, 1948		११०४००)
७२	3% Convertion loan of 1946—86		७०१००)
७३	अगाऊ जलालपुर कीकना स्कूल	५०००)	
७४	दयानन्द बेलीराम डिग्री कालेज (बैंक में जमा)	८५०००)	
७५	आर्य कालेज लुधियाना महानिधि	१०००००)	१०००००)
७६	आर्य कालेज लुधियाना Bank Deposit	१०००००)	
७७	Cash in Hand नकद शेष	४२१३॥=)।	
७८	उपदेशक विद्यालय घाटा	४१५६॥)।	
७९	दीवानचन्द स्मारक ,,	२०६०॥-)	
८०	हीरक जयन्ती व्यय	३६०३।)	
८१	वर्ण आश्रम व्यवस्था घाटा	३३)	
८२	Bank Deposits	१०२५०॥≡)४	
८३	Govt. Securities	३७६७३५॥-)४	
८४	मोगा कालेज G. P. Notes (लेखराम निधि)	२२५००)	
८५	मोगा कालेज स्टाफ को ऋण	५६२॥=)	५६३)
	अमानतें		
८६	महिला कालेज कमालिया		१४)
८७	शाहना भूमि		७६)
८८	पंजाब पीड़ित सहायता		५६०)
८९	आर्य समाजें तथा अन्य संस्थाएँ		१६२९)
९०	दलितोद्धार सभा तथा जाति रक्षा		३२३)

ASSETS

क्रम संख्या	निधियां	सम्वत् २००२ के अन्त पर	सम्वत् २००४ के अन्त पर
	अगाऊ		
९१	अगाऊ (नया) श्री पं० यशःपाल जी		५००)
९२	,, आर्य समाज कोयटा		७००)
९३	,, श्री पं० बुद्धदेव जी		२००)
९४	,, डी. एम. कालेज मोगा		२२५)
९५	,, आर्य समाज बहादुरगढ़ (खर्च मुकद्दमा)		२६)
९६	B,, (नया)		
९७	ऋण (नया)		
९८	B ला० नोतनदास जी		५०)
९९	कन्या गुरुकुल धरोहर (नया)		७१७६)
१००	इम्प्रैस्ट (नया)		
१०१	शक्ति रहस्य पुस्तक		
१०२	सत्संग पद्धति		
	योग	१४९४१४३।≡)॥	२११८४९५)

बदरीदास कार्यकर्ताप्रधान चरणदास पुरी कोषाध्यक्ष भीमसेन विद्यालकार सभा मन्त्री युगलकिशोर कार्यालयाध्यक्ष

"सारी अवस्थाओं और कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए श्री युगलकिशोर जी ने जो अपूर्व परिश्रम और स्मरणशक्ति से काम लिया है वह बड़ा प्रशसनीय है, और मुझे यह सम्मतिप्रकाश करते हुए संतोष है कि इससे अधिक उत्तम शेष पत्र न बन सकता था। हस्ताक्षर मेहरसिंह लेखा निरीक्षक
१०-४-४९

The system of accounts adopted by Shri Jugal Kishor Ji regarding the accounts (2002-3-2004) is correct and the same is being followed by most of the commercial concerns and charitable institutions whose records have been destroyed in Pakistan.

(Sd.) N. D. KAPUR, *R. A.*
19-5-49.

शेषपत्रको २००४के खातों और सूचनाओं के साथ देखकर प्रमाणित किया।

हस्ताक्षर नारायणदास कपूर
१९-५-४९

हस्ताक्षर मेहरसिंह लेखा निरीक्षक
१०-४-४९

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

की

संवत् २००४,५ तथा ६ के लिए प्रतिनिधियों की सूची

संख्या नाम समाज	संख्या नाम प्रतिनिधि	पता
१ रामामण्डी	१ म. निहालचन्द जी	द्वारा आर्यसमाज रामा मण्डी (पटियाला)
	२ म. वचन देव जी	द्वारा मैसर्ज़ शादीराम रामरत्न रामामण्डी (पटियाला)
२ रायकोट	३ ला. लम्भूराम नय्यर	आनन्द आश्रम लुधियाना
३ प्रागपुर	४ पं० यशःपाल जी सिद्धान्तलंकार	अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर शहर
४ पहाड़गंज(आर्यपुरा) देहली	५ ला. हरिवंश जी	द्वारा ला. नारायणदत्त जी, १३ बारा खम्बा रोड, नई देहली
	६ ला. हकूमतलाल जी	द्वारा आर्य समाज पहाड़ गंज देहली
	७ पं० धर्मचन्द्र वैद्य	द्वारा आर्य समाज पहाड़ गंज देहली
५ सांगलाहिल	८ म. कृष्णलाल आर्य	६४७१ नबी करीम, पहाड़ गंज देहली
	९ म. लेखराम जी	द्वारा रमेश एण्ड कम्पनी, चांदनी चौक देहली
६ खुड्डियां	१० म. बालमुकुन्द आर्य	
७ जम्मू(हस्पताल रोड)	११ म. अनन्तराम जी	रिटायर्ड हैड क्लर्क मुहल्ला जुलाका जम्मू
	१२ प्रो. मानकचन्द खोसला	प्रिन्सिपल द्वाबा कालेज जालंधर
	१३ ला. ईश्वरदास जी	रिटायर्ड सुपरिण्टेंडेंण्ट, गली मलहोत्रा, जम्मू
८ बूड़े वाला	१४ मा. इन्द्रजीत जी	देहान्त हो गया
	१५ म. शान्तिलाल दलाल	
९ गुरुकुल कांगड़ी	१६ पं. हरिदत्त जी	उपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)
	१७ पं. हरिवंश जी	अध्यापक गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)
	१८ पं. चन्द्रकेतु जी	,, ,, ,, ,,
	१९ श्री चम्पत स्वरूप जी	उपाध्याय ,, ,, ,,

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		२०	पं. प्रियव्रतजी वेदवाचस्पति आचार्य	,, ,, ,,
		२१	बा. दीनदयालु वर्मा	कार्यालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी ,,
		२२	श्री ला. नन्दलालजी खन्ना	उपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी ,,
१०	श्री गोविन्दपुर	२३	ला. दयाराम जी	प्रेज़ीडेण्ड स्माल टाउन कमेटी श्री गोविन्दपुर (गुरुदासपुर)
११	सन्त नगर (लाहौर)	२४	म. मुन्शीराम जी	अकाउण्टेण्ट आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर शहर
		२५	बा. जयगोपाल भण्डारी	अनवर मंज़िल, लोअर कैथू, शिमला
		२६	ला. तीर्थराम जी कपाही	सुपत्र ला. ऋषिराम कपाही, हाऊस गुड़ वाला, महरौली देहली
१२	दीवानहाल देहली	२७	ला. नारायणदत्त जी ठेकेदार	१३ बारा खम्भा रोड, नई देहली
		२८	मास्टर केदार नाथ जी	१३ शिव आश्रम देहली
		२९	ला. कृष्णचन्द्र जी	५५ रामनगर नई देहली
		३०	ला. लक्ष्मीचन्द जी	५९ पंच कुइयां रोड, नई देहली
		३१	बा. नवनीतलाल जी, वकील	क्वार्टर नं० २ आर्यसमाज दीवानहाल देहली
		३२	पं. रामचन्द्र जी जिज्ञासु	आर्य समाज दीवानहाल, देहली
१३	किला लछमनसिंह रावी रोड लाहौर	३३	ला. नन्दलाल जी एम.ए. हैडमास्टर	एन. डी. विक्टर हाई स्कूल जालन्धर छावनी
१४	फिल्लौर	३४	ला. प्राणनाथजी वकील	फिल्लौर ज़िला जालन्धर।
१५	मोरिण्डा	३५	ला. धनपतराय जी	द्वारा मैसर्ज़ दीवानचन्द धनपतराय (अम्बाला)
		३६	पं. लब्भूराम जी,	द्वारा आर्य समाज मोरिण्डा (अम्बाला)
१६	झंग मघियाना	३७	ला. रामदत्त गन्ध	मार्फत श्री बलराम जी, टैलीफोन एक्सचेंज, कनाट प्लेस, न्यू देहली
		३८	श्री ओ३म् प्रकाश वैद्य	द्वारा गुरुकुल कांगड़ी (सहारपुर) यू. पी.
१७	डब वाली मण्डी	३९	श्री ओ३म् प्रकाश जी	द्वारा आर्यसमाज रामामंडी (पटियाला)
१८	फ़ीरोज़पुर शहर (रानी का तालाब)	४०	म. मदनजीत जी आर्य	महाशय दी हट्टी, बड़ा बाज़ार, फ़िरोज़पुर शहर
		४१	रा.सा.डा. साधुचंदजी	मैडीकल प्रेक्टिशनर, फ़ीरोज़पुर शहर

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		४२	म. तुलसीराम जी	बांसांवाला बाज़ार फ़ीरोज़पुर शहर
१६	रामगढ़ मुगलपुरा (लाहौर)	४३	पं. अमरनाथ शर्मा	मकान मिस्त्री विचित्रसिंह अड्डा कपूर्थला जालन्धर शहर
		४४	पं. बुद्धदेवजी विद्यालंकार	प्रभात आश्रम नई मंडी, मुज़फ्फ़र नगर यू. पी.
२०	कमालिया	४५	भक्त यशवंतजी आर्यसेवक	द्वारा श्री तीर्थराजजी आ. स. गाजियाबाद
		४६	म. निर्मलचन्द्रजी चुघ	द्वारा आर्यसमाज बस्ती गुजां, जालंधर
२१	देहली शाहदरा	४७	स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती	स्वर्गवास हुए
२२	जड़ांवाला	४८	ला. हुक्मचन्द जी	
		४६	कविराज गोपालदासजी वैद्य	निकट जल्लोखाना, कपूर्थला
		५०	ला. देशराज जी	जड़ांवाला इलेक्ट्रिक एण्ड साइकल वर्क्स बड़ा बाजार, कश्मीरी गेट, देहली
२३	फ़ीरोजपुर छावनी	५१	म. चन्द्रसेन जी	सदर बाज़ार फ़ीरोजपुर छावनी,
		५२	म. छज्जूराम जी	द्वारा आर्य समाज लुधियाना रोड, फ़िरोजपुर छावनी
२४	गोजरा	५३	मास्टर बाबूराम जी आर्य	
		५४	मा. अमरनाथ जी	सेकिण्डरी हाई स्कूल, पहाड़गंज न्यूदेहल
		५५	ला. मेलाराम जी	
		५६	ला. साहबदित्ताभल जी	
२५	गुजरांवाला	५७	ला. मोहनलाल जी तुली	द्वारा मैसर्ज़ मोहनलाल लब्भूराम चौपड़ा कपूर्थला
		५८	ला. गौतमदेव जी	
		५६	ला. हरिश्चन्द्र मेहता	
२६	घरोंडा (करनाल)	६०	म. दौलतराम जी गुप्त	घरोंडा, ज़िला करनाल
२७	सोहावाला स्यालकोट	६१	म. जसवन्त लाल जी	
		६२	म. अमृतलाल जी	
२८	आरफवाला	६३	ला. रघुनाथ राय धवन	पी. ओ. रोडे, तहसील मोगा (फ़ीरोजपुर)
२६	चकझुमरा	६४	ला. खुशहाल चन्द जी	द्वारा मैसर्ज़ खुशहालचन्द जगदीशचन्द चौक नीम वाला; लुधियाना
		६५	म. बूड़ीराम जी	द्वारा गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
३०	जालन्धर शहर	६६	रा, ब. बद्रीदासजी एडवोकेट	निकट मुन्सिफी कचहरी जालन्धर शहर
		६७	सेठ वृन्दावनजी सौंधी	कोट किशनचन्द, जालन्धर शहर
		६८	ला.जगन्नाथजी मित्तल	वकील फेरान गंज, जालंधर शहर
३१	जामपुर	६६	श्री लालचन्दजी हितैषी	सम्पादक प्रकाश, चहार बाग जालंधरशहर
		७०	चौ. सोभराज जी	द्वारा प्रो. सुखदेव जी गुरुकुल कांगड़ी
		७१	श्री ईश्वरदत्तजी गोरेवारा	
		७२	पं. ज्ञानचन्द्रजी बी. ए.	द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली
३२	नौशहरा वाला	७३	पं. रामचन्द्र जी	आर्य प्रचारक, नौशहरा ढाला (अमृतसर)
३३	क्लास वाला	७४	ला. सरदारीलाल जी अरोड़ा बज़ाज़	प्रताप बाज़ार, कमेटी बाग लुधियाना
		७५	ला. नाथामल भाटिया	द्वारा ,, ,, ,,
३४	करनाल	७६	म. सिंहरामजी आर्य	मुहल्ला जाटान करनाल
		७७	म. ज्ञानस्वरूप जी	द्वारा मैसर्ज़ शांति स्वरूप, ज्ञान स्वरूप पुरानी मण्डी करनाल
३५	स्यालकोट शहर	७८	ला. देवीदासजी ठेकेदार	
		७६	ला. चरनदासजी पुरी	बस्ती हरफूलसिंह, सदर बाज़ार देहली
		८०	ला. स्वरूप नारायणजी	द्वारा सनलाइट इन्श्योरेन्स कम्पनी, कनाट सर्कस नई देहली
		८१	ला. विशेश्वरनाथ सेठ बी. ए. एल. एल. बी.	वकील फ़ीरोजपुर शहर
		८२	पं. रामलाल शर्मा	यूनीफ़ार्म एजेंसीज़ जालंधर शहर
३६	गुजरात	८३	श्री राजारामसिंह जी	क्लर्क इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल्ज़ अम्बाला कैंट
३७	लुधियाना (दाल बाज़ार)	८४	ला. कोटूराम थापर	अम्बा भवन मोहल्ला माधोपुरी लुधियाना
		८५	दीवान रामशरण जी	कैसर गंज लुधियाना
		८६	पं. कर्त्ताराम जी	निकट ला. तिलकराज की खुई, सिविल लाइन्स लुधियाना
		८७	म. किशोरीलाल जी	मोहल्ला रूपा मिस्त्री लुधियाना
३८	नरवाना	८८	ला. ज्ञानचन्दजी एम.ए.	नरवाना (पटियाला)
		८६	पं. ज्ञानचन्दजी शर्मा	नरवाना (पटियाला)

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		९०	ला. अनन्तराम जी	नरवाना (पटियाला)
३९	मियांवाली	९१	म. टेकचन्दजी आर्य	द्वारा डा. निरंजनदेव जी, अब्दुल्लापुर (अम्बाला)
		९२	म. रामचन्दजी आर्य	द्वारा डा. निरंजनदेव जी, अब्दुल्लापुर (अम्बाला)
४०	लाहौर वच्छोवाली	९३	पं. ठाकुरदत्तजी शर्मा वैद्य	अमृतधारा देहरादून यू. पी.
		९४	पं. हीरानन्दजी शर्मा	द्वारा "अमृतधारा" देहरादून यू. पी.
		९५	म. कृष्ण जी	६, कीलिंग रोड नई देहली
		९६	ला. नोतनदास जी	द्वारा अमृतधारा, देहरादून यू. पी. स्वर्गवास हुए ११–३–४९
		९७	ला. रोशनलाल जी	स्पोर्ट्स लिमिटेड झांसी, यू. पी.
		९८	पं. भीमसेनजी विद्यालंकार	श्री हरगोविन्दपुर (गुरदासपुर)
		९९	ला. साधुराम जी	लाइटिंग डिपार्टमेण्ट, रेलवे स्टेशन लुधियाना जंकशन
		१००	पं. विश्वम्भरनाथ जी	द्वारा गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) यू पी. स्वर्गवास हुए २–४–४९
४१	खानपुर	१०१	म. शान्तिप्रकाश जी	
४२	करतारपुर	१०२	म. चिरंजीलालजी 'प्रेम'	करतारपुर (जालन्धर)
४३	किशनगंज मिल एरिया देहली	१०३	श्रीगोकुलप्रसादजी व्यास	गणेश लाइन, देहली क्लाथमिल्स देहली
		१०४	पं. सत्यव्रतजी शास्त्री	पास आर्य समाज किशन गंज मिल एरिया देहली
		१०५	श्रीराम सुमेरसिंह जी	कमरा नं० ७, गणेशलाइन, देहली क्लाथ मिल्स देहली
४४	मिण्टगुमरी	१०६	ला. सालिगराम भल्ला	द्वारा श्री बलभद्रभल्ला बैंक आफ बीकानेर लिमिटिड चांदनी चौक देहली
		१०७	पं. पूर्णचन्द जी	यतीमखाना बिल्डिंग खुर्जा (बुलेन्द शहर)
४५	लाहौर छावनी	१०८	ला. गिरधारीलालजी	
		१०९	म. टेकचन्द जी	५ रगेड़पुरा करोलबाग देहली
४६	मुलतान शहर	११०	म. निरंजनदेव जी	भारत बिस्कुटफैक्टरी कपूरथला
		१११	ला. हरकृष्णलाल चावला	शिब्बामल जैन बिल्डिंग अम्बालाछावनी

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		११२	मलिक रामचन्द खन्ना	८५ A कमलानगर सब्ज़ीमंडी देहली
		११३	मलिक सोमनाथ कपूर	प्रोप्राइटर बस सर्विस, देहरदून यू. पी.
४७	जीन्द शहर	११४	मा. बद्रीप्रसादजी गुप्त	द्वारा आर्य समाज जींद शहर
४८	आर्यनगर बरास्ता	११५	चौ. लालचन्द जी	
	(मुलतान)	११६	म. नन्दलाल जी	
४६	नई देहली (हनुमान रोड)	११७	प्रो. रामदेवजी एम.ए.	१० टोडरमल रोड, नई देहली स्वर्गवास हुए
		११८	बाबा मिलखासिंह जी	१४ बारा खम्भा रोड, नई देहली
		११६	प्रो. गोपाल जी	१५ हनुमान रोड, नई देहली
५०	सुलतानपुर लोधी	१२०	श्री रलियाराम जी वैद्य शास्त्री	द्वारा आर्य समाज सुलतानपुर लोधी (कपूर्थला)
		१२१	श्रीगोपालचन्द्र जी	द्वारा आर्य समाज सुलतानपुर लोधी (कपूर्थला)
५१	मुरीदके	१२२	पं. कुन्दनलालजी वैद्य वाचस्पति	निकट सुनहरी मस्जिद, चौड़ा बाज़ार लुधियाना
		१२३	ला. देशराज जी	
		१२४	ला.देवराजजी चड्ढा एम.ए.	
५२	लाहौर	१२५	श्री चमनलाल वर्मा	१८ B पक्का बाग़, जालन्धर सिटी
	(बादामीबाग़)	१२६	श्रीरामकृष्णजी भारती	मकान नं० १७६४ गली जयपुरियां, शोरा कोठी, सब्जी मंडी देहली
५३	गरला (कांगड़ा)	१२७	श्री युगलकिशोरजी,	कार्यालयाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, अड्डा होश्यारपुर, जालन्धरशहर
		१२८	पं. रामस्वरूप पाराशरी	द्वारा पं. रामदयालजी शर्मा शंखधर मुहल्ला वज़िरया बिहारीपुर, बरेली यू.पी.
५४	मैलसी	१२५	श्री कन्हैयालाल जी	आर्य हाई स्कूल थानेसर ज़िला करनाल
५५	पत्तोकी	१३०	श्री सोहनलाल कम्बोज	द्वारा मैसर्ज़ बिशनदास सोहनलाल आढ़ती फ़ीरोजपुर शहर
		१३१	श्रीरघुनाथजीआयुर्वेदालंकार	खेकड़ा (मेरठ) यू. पी.
५६	लायलपुर	१३२	ला. दुर्गादत्त जी	देहान्त हो गया
		१३३	ला. धनपतराय जी	द्वारा ला. रघुनाथ धई, २८ लोधी मार्कीट लोधी रोड नई देहली

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		१३४	ला. हज़ारीलाल जी	गुड़गांव बन्द सबडिवज़न, गुड़गांव नई देहली
		१३५	ला. श्यामसुन्दरजी खन्ना	गणेश फ्लोरमिल्स असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्ट वाटर वर्क्स, सिविल लाइन्स देहली
		१३६	ला. तीर्थराम जी	द्वारा श्री बृजलाल हुआ, गोपीनाथ बाज़ार चर्चरोड देहली कैण्ट
		१३७	से. रामनारायणजी वर्मानी	ज्वाला फ्लोर मिल्स अमृतसर
५७	टोबा टेकसिंह	१३८	सेठ मथुरादास जी	
		१३९	म. शिवदास राम जी	द्वारा बावा मिलखासिंह ठेकेदार १४, बाराखम्बा रोड, नई देहली
		१४०	ला. नारायणदास कपूर	७१६ चांदनी चौक, देहली
		१४१	बाबू वीरभानजी वकील	
५८	बटाला	१४२	म. सत्यपाल जी	द्वारा आर्य समाज बटाला (गुरुदासपुर)
		१४३	पं. पूर्णदेव जी	मोहल्ला धोरां बटाला (गुरदासपुर)
५९	लाहौर (ग्वाल मण्डी)	१४४	पं. भानुदत्तजी वैद्य	कूचाख्याली राम, बाज़ार सीताराम देहली
		१४५	ला. कृष्णदयाल जी	C/o सेन्ट्रल होटल शिमला
६०	कोट छुट्टा	१४६	पं. शांतिप्रकाशजी आर्योपदेशक	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालंधरनगर
		१४७	पं. शिवदत्तजी सिद्धांत शिरोमणि	द्वारा आर्य समाज लोधी रोड, नई देहली
६१	सराय सिद्धू	१४८	ला० मनोहरलाल जी	वार्ड नं० १०, मकान नं० ५६६, मोहल्ला पठानां पानीपत (करनाल)
		१४९	ला. गणेशदत्तजी आर्य	टाऊन नं० २ वार्ड नं० ४ टेण्ट नं० २९७५ कैम्प कुरुक्षेत्र (करनाल)
६२	गिद्दड़बाहा	१५०	ला. रामनारायण जी एम. ए. बी. टी.	हैडमास्टर गीदड़बाहा (फ़ीरोजपुर)
६३	मियानी	१५१	पं. सोमकीर्त्ति जी	आयुर्वेदिक फार्मेसी गु० कां० (सहारनपुर)
६४	महतपुर	१५२	म. सत्यप्रकाश जी	द्वारा आर्यसमाज महतपुर (जालंधर)
६५	फगवाड़ा	१५३	ला. बालमुकुन्द जी	द्वारा इन्दु औषधालय फगवाड़ा (जालंधर)
		१५४	ला. धनीराम जी	,, ,, ,, ,, ,,
६६	अम्बाला छावनी	१५५	राय अमृतराय जी	पंजाबी मोहल्ला अम्बाला छावनी

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		१५६	पं० अर्जुनदेव जी विद्यालंकार	रवि वर्मा स्टील वर्क्स, अम्बाला छावनी
		१५७	ला. अमीरचन्दजी बी.ए.	पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला छावनी
६७	मीरपुर	१५८	म. रूपचन्द जी	द्वारा श्री कृष्णलालजी पोस्ट मैन, जम्मू
६८	कोट अद्दू	१५६	डा. प्रेम प्रकाश जी	केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट, झज्जर (रोहतक)
		१६०	ला. गणेशदत्त जी	प्रोप्राइटर भारतग्लास वर्क्स,सदरबाजा देहली
		१६१	पं. गुरुदत्तजी स्नातक	
६६	पीर सलूही	१६२	श्रीमान् निरंजन नाथजी खोसला	५।६६ वेस्टर्न एक्सटैनशन एरिया करोल बाग़ देहली
७०	गुरुदत्त भवन लाहौर	१६३	स्वामी वेदानन्दतीर्थजी महाराज	प्रधान सार्वदेशिक दयानन्द वानप्रस्थ मंडल ज्वालापुर
७१	चीचावतनी	१६४	ला. रामदत्तजी वकील	अम्बाला शहर
		१६५	पं. सुरेन्द्रपाल जी	नगला खुशाव डाकघर सिरतागंज जिला मैनपुरी यू. पी.
७२	नया बांस देहली	१६६	प्रो. इन्द्रजी विद्यावाचस्पति	'वीर अर्जुन' देहली
		१६७	श्री पन्नालाल जी	द्वारा आर्य समाज नया बांस देहली
७३	लुधियाना (साबुन बाज़ार)	१६८	ला. दिलीपचन्द जी	हैडमास्टर आर्य हाई स्कूल लुधियाना
		१६६	मास्टर यशःपाल जी	आर्य हाई स्कूल लुधियाना
		१७०	मास्टर श्रवणकुमार जी	द्वारा पं. कुन्दनलाल जी वैद्य निकट सुनहरीमस्जिद, चौड़ी बाज़ार लुधियाना
		१७१	पं. सत्यदेवजी विद्यालंकार	द्वारा श्री विष्णुदत्तजी वैद्य कूचा लालू-मल, लुधियाना
७४	शुजाबाद	१७२	ला. नित्यानन्द जी	
		१७३	म. जगदीश मित्र जी	द्वारा डा० छबीलदासजी, निकट मिशन हास्पिटल करनाल
		१७४	ला. प्रेमदत्तजी बी.ए.एल. एल. बी.	लीगल एडवाइज़र म्युनिसिपल कमेटी अमृतसर
७५	झंग शहर	१७५	पं. महावीर जी	द्वारा ला. रामदित्ता मल पोस्टमैन कुरु-क्षेत्र (करनाल)
		१७६	म. कृष्णजी	
७६	रावलपिण्डीशहर	१७७	पं. देवीदयाल जी	इम्पीरियल, टुबाको कम्पनी, कुतुब रोड, देहली

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
७७	रेवाड़ी	१७८	पं. सोमदेव जी	संजीवन औषधालय रेवाड़ी (गुड़गांव)
		१७९	पं. पारब्रह्म परमार्थी	हिन्दू हाई स्कूल, मोहल्ला बल्लू बाज़ार रेवाड़ी
		१८०	म. भगवानदास जी	भगवान स्टोर रेवाड़ी (गुड़गावां)
७८	पाकपटन	१८१	ला. रत्नलाल जी बी. एस. सी. बी. टी.	सर एच. बी. हाई स्कूल, नई देहली
		१८२	भय्या प्रभुदयाल जी	
७९	जालन्धर छावनी	१८३	ला. मूलराजजी बी.ए.बी.टी	द्वारा जी. पी. ओ. देहली
		१८४	कैप्टिन बोधराजजी	९१, केनिंगरोड जालन्धर छावनी
८०	सब्ज़ीमंडी देहली	१८५	पं. कृष्णचन्द्र जी विद्यालंकार	१९ जयत बिल्डिंग रोशन आरा रोड, देहली
		१८६	श्री कश्मीरीलालजीआर्य	३०८१ गली राजपूतां, सब्जीमंडी देहली
		१८७	पुत्तूलाल जी	द्वारा आर्यसमाज सब्ज़ीमण्डी आर्यपुरा देहली
		१८८	श्री पन्नालाल जी	गली खारीकुआं आर्यपुरा, सब्ज़ीमण्डी देहली
		१८९	ला. राधाकृष्ण जी	पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड, सब्जी-मण्डी देहली
८१	करोलबाग़ देहली	१९०	म. सत्यपाल जी	क्रिश्चियन कालोनी, करौलबाग़, देहली
		१९१	पं. मूलराज जी	गलीनं० २३,बीडनपुरा,करौलबाग देहली
८२	अलीपुर	१९२	श्री मनोहरलालजी	सोनीपत (रोहतक)
		१९३	रामरत्नलाल जी	द्वारा मैसर्स ईश्वरदास नेभराज गोगिया ग़ाज़ियाबाद (मेरठ)
		१९४	चौ. भगवानसिंह जी	द्वारा मैसर्स ईश्वरदास नेभराज गोगिया ग़ाज़ियाबाद (मेरठ)
८३	भूपाल वाला	१९५	पं. मेलाराम जी	
८४	मुज़फ़्फ़रगढ़	१९६	म. कृष्णकुमार जी	मानिकवाला मकान नं० E ७९९ छिपा गली मुहल्ला कुम्हारां कुआं, करनाल
		१९७	यज्ञदत्तजी वर्मा	कैम्प कमाण्डेण्ट पानीपत (करनाल)
		१९८	श्री ठाकुरदत्तजी दर्गन	द्वारा आर्यसमाज अलवर (राजपूताना)

संख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
८५	नवां शहर	१९९	डा. लब्भूराम जी	आई.एम.डी. नवांशहर द्वारा (जालंधर)
		२००	ला. हंसराजी लौंगया	नवांशहर द्वारा जालंधर
		२०१	ला.श्रीरामजी हैडमास्टर	आर्य हाईस्कूल नवांशहर
८६	गोबिन्दपुरा मुलतान	२०२	श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा	द्वारा मैसर्ज रामकृष्ण गोरवाड़ा एण्ड ब्रदर्स जनरल मर्चेण्ट, दुकान नं० ६५२१ गली मटके वाली, सदर बाज़ार देहली
८७	शोर कोट	२०३	पं.दीनदयालजी शास्त्री	व्यवसायाध्यक्ष गुरुकुलकांगड़ी(सहारनपुर)
		२०४	श्री मुकुन्दलालजी	द्वारा आर्यसमाज पक्काबाग जालंधरशहर
८८	गुरुकुल मटिण्डू	२०५	पं. देवराजजी विद्यालंकार	समामैडीकल स्टोर्ज़, १९ बाज़ार गुलिया निकट जामा मस्जिद देहली
८९	क़िला सोभासिंह	२०६	म. राजपालजी	द्वारा श्री हंसराजजी, अमन मार्कीट, लुधियाना
		२०७	पं. दीवानचंदजी वैद्य	द्वारा आर्य समाज ओहरी चौक बटाला (गुरुदास पुर)
९०	शहर मुलतान	२०८	म. ब्रह्मदेवजी	द्वारा अलीपुर रिलीफ़ कमेटी सोनीपत (रोहतक)
९१	सिरसा	२०९	म.गोपालस्वरूपजी वकील	सिरसा (हिसार)
९२	गोबिन्दगढ़ (जालन्धर)	२१०	पं. बख्शीशचन्द जी	गोबिन्दगढ़ जालन्धर शहर
		२११	ला.खैरैतीराम मलहोत्रा	गोविन्दगढ़ जालन्धर शहर
		२१२	प्रो. योगध्यानजी आहूजा	विक्रमपुर, जालन्धर शहर
९३	कैथल	२१३	श्री राममूर्तिजी	द्वारा आर्य समाज कैथल (करनाल)
९४	सौलन	२१४	पं सत्यदेव जी विद्यालंकार	द्वारा एस. डी. शर्मा ऐंड कम्पनी १३, नं० बस्ती हरफूलसिंह देहली
९५	लाडवा	२१५	डा. वेनीप्रसाद जी	द्वारा आर्य समाज लाडवा (करनाल)
९६	लोहारू	२१६	स्वामी सच्चिदानन्द जी	आर्य समाज लोहारू स्टेट
		२१७	श्री भरतसिंहजी शास्त्री	उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
९७	कच्चा बाजार अम्बाला छावनी	२१८	डा. एम. डी. चौधरी	कच्चा बाजार अम्बाला छावनी
९८	लोधी रोड नई देहली	२१९	श्री देशराज जी	४ कोटला रोड, नई देहली
		२२०	श्री सरदारीलालजी	१२/२३० लोधी रोड नई देहली
९९	देहली शाहदरा	२२१	पं.सुखदेवजी विद्यावचस्पति	गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

ख्या	नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
		२२२	प्रो० वागीश्वर जी	गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)
००	बांसा वाला बाज़ार जालंधर शहर	२२३	सेठ चमनलालजी सोंधी	कोट किशनचन्द जालन्धर शहर
		२२४	पं. यज्ञदत्तजी	द्वारा फार्मेसी भैरोंबाज़ार जालन्धर शहर
		२२५	श्री लालचन्द जी सभरवाल वकील	गोपाल नगर जालन्धर शहर
		२२६	श्री करोड़ीमलजी साहनी	हनुमानगढ़, जालन्धर शहर
		२२७	श्री राममूर्त्ति मलहोत्रा,	गोपालनगर जालन्धर शहर
		२२८	श्री देवदत्त चोपड़ा	बांसा वाला बाज़ार जालन्धर शहर
६३	कैथल	२२९	श्री काकारामजी	द्वारा आर्य समाज कैथल
१०१	सफ़ीदों	२३०	ला.भगवानदासजी गुप्ता	पोस्टल क्लर्क सफ़ीदों (रियासत जींद)
१०२	नरेला	२३१	श्री शिवलाल जी	द्वारा आर्यसमाज नरेला (देहली)
		२३२	श्री अतरसिंह जी	,, ,, ,, ,,
४७	जींद शहर	२३३	ला. रामप्रकाश सर्राफ़	जींद शहर
७२	नयाबांस देहली	२३४	पं.मनोहरजी विद्यालंकार	द्वारा आर्य समाज नयाबांस देहली
१०३	इक्कस (जींद)	२३५	श्रीराम दयालजी आर्य	दयानन्द धर्मार्थ औषधालय जींद शहर
१०४	नारनौल	२३६	श्रीराजकुमार जी	द्वारा आर्य समाज नारनौल
१०५	गांगटेहड़ी	२३७	श्री हरनारायण शर्मा	ग्राम गागटेहड़ी डि. असन्ध (करनाल)
१०६	बाल नगर	२३८	चौ. बलदेवसिंह जी	नरवाना (पटियाला राज्य)
		२३९	श्री मोतीराम जी	बालू नगर (पटियाला राज्य)
		२४०	ला. पूर्णचन्द जी	बालू नगर (पटियाला राज्य)
१०७	श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर	२४१	डा. रामरखामल जी	कटरा सफेद अमृतसर
		२४२	श्री महाराजमल जी	M/s महाराजमल धर्मपाल पुरानी लक्कड़ मंडी अमृतसर
१०८	मजीठा	२४३	कैप्टिन केशवचन्द्र जी	लारेन्स रोड अमृतसर
१०९	सुजानपुर	२४४	श्री दिवाकरजी खोसला	असिस्टेण्ट मैनेजर लक्ष्मी इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड २ बैटरीलैन राजपुर रोड, देहली
११०	रामचन्द वाला	२४५	चौ० परशुराम जी	ग्राम रामचन्दवाला डि. असंध(करनाला
१११	लूखी	२४६	पं० सोहनलाल जी	द्वारा आर्यसमाज लूखी P.O. कनीना (नाभा राज्य)
		२४७	श्री भीमसेन जी	द्वारा आर्यसमाज लूखीP.O.कनीना(नाभ)

नाम समाज	संख्या	नाम प्रतिनिधि	पता
दनौदा कलां	२४८	श्री खेमचन्द जी	प्रधान आर्यसमाज दनौदा कलां P.O. नरवाना (पटियाला)
	२४९	श्री शेरसिंह जी	मंत्री आर्य समाज दनौदा कलां P.O. नरवाना (पटियाला)
लालकुर्ती बाज़ार अम्बाला छावनी	२५०	श्री सोमेन्द्रनाथ सन्द्रल बी. ए, शास्त्री	द्वारा आर्यसमाज लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी
नया बांस देहली	२५१	श्री विद्यानिधि जी	खारी बावली देहली
	२५२	ला. बुद्धिप्रकाश जी	द्वारा आर्य समाज नया बांस देहली
	२५३	ला. राधमोहन जी	,, ,, ,, ,,
	२५४	ला. श्रीकृष्णदास जी	,, ,, ,, ,,
	२५५	ला. बिशन स्वरूप जी	,, ,, ,, ,,
सोहना	२५६	म. चांदनरामजी	द्वारा आर्यसमाज सोहना (गुड़गांव)
	१५७	म. श्यामलाल जी	,, ,, ,, ,,
माजरा	२५८	मा. पोहकरमल जी	मिडिल स्कूल जहाज़गढ़ (रोहतक)
इसराना	२५९	मा. मोलूराम जी	द्वारा आर्यसमाज इसराना (करनाल)
	२६०	ला. लक्ष्मीनारायणजी	,, ,, ,, ,,
बल्लबगढ़	२६१	श्री शिवचरणदास जी	११३ दरियागंज देहली
	२६२	श्री भीकमसिंह जी	Vohra Mill बल्लबगढ़
भुसलाना	२६३	श्री रमेशचन्द जी	
सालवन	२६४	श्री अलबेलसिंह जी	प्रधान आर्यसमाज सालवन (करनाल)
बस्ती गुजां	२६५	पं. जयदेव जी	निरीक्षक पंजाब आर्य शिक्षासमिति जालंधर
	२६६	श्री मनोहरलाल जी	बाग अहलूवालिया बस्ती गुजां जालंधर
बनूड़	२६७	श्री कृष्ण जी	द्वारा आर्यसमाज बनूड़ (पटियाला)
अलेवा	२६८	श्री देवतराम जी	,, ,, अलेवा (करनाल)
	२६९	श्री रणजीतसिंह जी	,, ,, ,, ,,
बापौली	२७०	श्री मौलसिंह जी	द्वारा आर्यसमाज बापौली
	२७१	श्री मोलड़सिंह जी	,, ,, ,,
भटिण्डा	२६२	डा. भगवन्तराय जी	भटिण्डा (पटियाला)
	२७३	पं. स्वरूपसिंह जी	गुरुकुल भटिण्डा (पटियाला)

that there is no advantage in considering such acquisitive behaviour as an instinct on its own. Similarly, animals which store food do so as a part of the food-getting impulse, and it is unnecessary and redundant to introduce the concept of an acquisitive instinct to describe it.

In the case of acquisitiveness, therefore, the usefulness of the concept has been questioned, even in connection with the behaviour of animals. It is consequently unlikely that the concept will prove any more useful as a description of a certain type of behaviour in mankind. So far as our own community is concerned the principal evidence is drawn from the behaviour of children and the behaviour of a few highly abnormal adults. Burt,[1] for example, uses his finding that stealing accounts for 80 per cent. of all boyish transgressions as evidence in favour of an acquisitive instinct. By doing so, as he himself points out, he does not concede their true weight to other possible explanations of the behaviour, e g. hunger, desire to get money for the cinema, spirit of adventure and so on. But when, in addition, he states that in only 16 out of every thousand cases could the delinquency be attributed to sheer inborn acquisitiveness one wonders that he has troubled to introduce the topic of an instinct of acquisition at all, unless he is using the term instinct in a way which is very different from that of other people. Sixteen in every thousand cases is a very different thing from behaviour which is common to all members of the same species. One might, in fact, be led to precisely the opposite conclusion from his illustration. If only 16 in every thousand cases show sheer inborn acquisitiveness, then clearly they diverge very sharply from the norm, in whom it would appear from this evidence that no acquisitive instinct exists

Many people have pointed out that few children pass through their teens without making collections of stamps, marbles, cigarette cards, shells, eggs or other things. Recent investigations have shown, however, that within the past forty years or so there has been a remarkable change in the collecting habits of children. In 1891 Burk [2] found that over 90 per cent of children between the ages of 7 and 16 were making collections of one kind or another. In 1927, however, Lehman and Whitty [3] found that only 10 per cent. of children of the same ages were doing so. Beaglehole [4] suggests that the explanation for the change is to

[1] Burt (9), p 449
[2] Burk (8)
[3] Lehman and Whitty (30).
[4] Beaglehole (6), p. 259

be found in the fact that by 1927 there were so many other attractions available for the children, e.g the cinema, the wireless, dancing, the theatre and so on, that an entirely new set of attitudes and interests had arisen, and the practice of collecting had for the most part receded into the background.

So far as adults are concerned most of the evidence is drawn from a few people—misers, kleptomaniacs and mental-hospital patients Some mental-hospital patients will spend all their time picking up pins from the floor and hoarding them. Most misers hoard money, but James [1] mentions the case of a miser who hoarded old newspapers. When he died these were found to fill all the rooms of his good-sized house from floor to ceiling, leaving only a few narrow channels between them to give him his living space. Another case, a kleptomaniac, is also reported by James : this man stole his own silver spoons from his own dining-room, and his own pots and pans from his kitchen and stored them in his barn Subsequently he bought substitutes for them with his own money. But here again to argue that the mode of behaviour of a few highly abnormal individuals can be used to indicate the existence of an acquisitive instinct when the normal pattern is *not* to behave in that particular way is hardly convincing.

So far as primitive communities are concerned many different things are reported by anthropologists to be collected. Thus the Malay collects beads, the North American Indian scalps, the Andaman Islander netting, and the inhabitants of Malekula pigs Yet this behaviour is not so much evidence in favour of the existence of an acquisitive instinct as a reflection of the type of cultural pattern of the society. Harrisson,[2] for example, reports that the inhabitant of Malekula collects pigs in order to increase his social prestige. Every time he collects another hundred pigs he goes up one rung in the social ladder, until finally when he has collected enough he is symbolically off the top of the ladder, is given the title of "hawk" and may, if he likes, walk about flapping his hands as if in flight. Here the gaining of social prestige is the fundamental motivating force. The fact that in the process many hundreds of pigs have to be collected is incidental to this.

Again in a group of islands to the east of Papua objects of no intrinsic value are sought and then at once circulated in exchange for others [3] One currency (arm shells) circulates

[1] James (27), Vol. 2, pp 422–26 [2] Harrisson (18). [3] Suttie (40).

clockwise and the other currency (shell necklaces) circulates counter-clockwise among this group of islands. No one gains anything tangible by it. The successful person is he who has passed a greater volume of currency through his hands to the supposed detriment of his competitors. Again it is more reasonable to interpret the behaviour in terms of the particular values which happen to be attached to certain objects by a particular group of people than to explain it in terms of an acquisitive instinct—particularly as every individual gets rid of the objects he collects as soon as he possibly can, and increases his prestige by doing so.

Some primitive communities, in fact, seem to have the opposite of an acquisitive instinct. Benedict[1] describes orgies of destruction among the Kwakiutl Indians. Everyone tries to outdistance everyone else in his distribution of property. If an individual receives a gift and is not able to repay at least double the amount when the time comes for repayment, then he is shamed and loses enormously in prestige. The two ways by which he can show himself to be superior to a rival are to present him with more property than he can return or to destroy a large quantity of his own goods.

> The destruction of goods took many forms Great potlatch feasts in which quantities of candlefish oil were consumed were reckoned as contests of demolition The oil was fed lavishly to the guests, and it was also poured upon the fire Since the guests sat near the fire, the heat of the burning oil caused them intense discomfort, and this also was reckoned as a part of the contest In order to save themselves from shame, they had to lie unmoved in their places, though the fire blazed up and caught the rafters of the house. The host also must exhibit the most complete indifference to the threatened destruction of his house Some of the greatest chiefs had a carved figure of a man upon the roof. It was called the vomiter, and a trough was so arranged that a steady stream of the valuable candlefish oil poured out of the figure's open mouth into the house fire below If the oil feast surpassed anything the guest chief had ever given, he must leave the house and begin preparations for a return feast that would outstrip the one given by his rival. If he believed that it had not equalled a feast that he had previously given, he heaped insults upon his host, who then took some further way of establishing his greatness[2]

Can one assume the existence of an acquisitive instinct to explain this behaviour? It would be just as reasonable to assume the existence of an instinct of destructiveness

[1] Benedict (7). [2] Ibid, pp 193-4.

Concluding Remarks on Instincts

It should be emphasised once more that I am not trying to maintain that man has no innate behaviour mechanisms of the type which is usually referred to as instinctive I am not saying that man has no instincts What I am saying is that it is not so profitable to investigate man's behaviour by analysing and classifying his instincts as it is to consider his behaviour in the light of an interplay between his innate characteristics and the social influences which impinge upon those characteristics. And, further, that the effect of the cultural pattern is in most cases of more importance than a person's innate characteristics. Most people will be moulded by the pattern in which they grow up so as to conform to a considerable degree to that pattern in adulthood. This will hold true with two limitations The first is that there may be a sudden abandonment of the cultural pattern in very exceptional circumstances, e.g. when the living conditions are made so unfavourable for so many members of the group that they organise a revolution against the established ideas and practices, or—somewhat similarly—after a serious defeat in war. In these conditions there will be an interim period during which there is no predominating cultural pattern until the leading individuals within the community have developed new sentiment habits, attitude habits and interest habits which they will then impose (not always with a very clear consciousness that they are doing so) on the rest of the community and on the rising generation.

The second limitation is that there will always be some individuals within a community whose innate characteristics so far diverge from those of the cultural pattern that instead of being moulded by that pattern and developing according to type they react against the pattern—they may even be driven further away from the pattern because of this—and they become the deviants and the maladjusted individuals within that community. As Benedict has shown, an individual who is a deviant in one community may be the normal, or even the leader, in another community with a different pattern of culture.

Finally, I am not arguing that the cultural pattern inevitably forces everybody to behave in identically the same way. Such an argument would be absurd Many cultural patterns encourage individuality. But the individuality that is encouraged is of a type that will conform to the existing pattern : that is to say,

variety will exist, but it will be a variety within the limits of a particular configuration of outlook, feeling and behaviour.

Sentiments

If the concept of instinct does not prove very helpful in the description of human motivation, where shall we turn to describe it better? Perhaps the notions of *sentiments*, *interests* and *attitudes* are more useful, for one can often see in them the way in which cultural factors are influencing their growth and development, and the way in which they become modified either by some crisis in the individual's own life, e.g. as a result of conversion, great grief, economic distress, falling in love or thwarted ambition; or by a social crisis of the kind that was mentioned in the last section, or by social conversion of the type seen frequently during the course of the present war in the sudden changes of sentiments and attitudes of one social group towards another which has unexpectedly become its ally or which has unexpectedly changed from fighting on the same side to fighting on the other, or by a more gradual change in social customs and ideas, e.g. in the changing social attitude towards, let us say, divorce or criminals or socialism

A sentiment has been defined as an organised system of emotional dispositions clustered about a particular object or person with the effect that an appropriate emotion tends to be evoked as the occasion requires [1] Thus if a sentiment of hatred is directed towards a particular person one tends to feel the appropriate emotion as the occasion requires, e g pleasure when he is worsted or anger when he is successful. Many of the text-books on psychology [2] give descriptions of the principal sentiments that are found in our community, e.g. love, hatred, respect, patriotism, contempt and so on.

Banister [3] has put forward the view that the basis of sentiments is something innate. He uses the concept in order to explain the herding together of some animals (including man), and as an alternative to the concept of a gregarious instinct. He maintains that herd animals, like the dog, or man, possess "the capacity for the organisation of (their) innate tendencies

[1] The sentiment is sometimes distinguished from the *complex* on the ground that the latter contains repressed or morbid elements The distinction is on the whole a useful one, but it cannot be adhered to too rigidly, for probably most sentiments contain some repressed elements Perhaps the distinction would be better expressed in terms of the relative predominance of the normal or of the morbid elements

[2] See, for example, McDougall (32), Chap. 17

[3] Banister (5)

round animate objects" whereas in other animals, like the cat, this capacity is very small. Those animals that possess the tendency, therefore, tend to live in herds while those that do not have it tend to be solitary. One objection to the theory would appear to be that an animal with an innate capacity for organising its tendencies round *inanimate* objects, that is to say with a sentiment-forming tendency of a special type, would be a solitary animal, not a social one. But presumably if the sentiment-forming tendency is found at all it will be found to include animate as well as inanimate objects.

It must be remembered too that the development of sentiments is not *explained* by the supposition that man has a sentiment-forming tendency any more than sex behaviour is "explained" by the assumption that man has a sex instinct. Shand[1] and McDougall[2] and other psychologists who have discussed sentiments have found it more convenient to treat them as types of behaviour (like habit or attitude or interest) which are built up as a result of the individual's experiences. The concept has been exhaustively treated in Shand's monumental work, and more popular extensions have been provided by McDougall. McDougall gives a description of a number of sentiments, among them the sentiment of self-regard. Although McDougall believes that man possesses a specific herd instinct (or gregarious propensity) he thinks that in addition the extension of his sentiment of self-regard binds him to the group to which he belongs in a peculiarly intimate manner. Self-respect, pride, ambition and vanity are forms of the sentiment of self-regard in McDougall's view, but it readily extends itself to include the man's clothes, his house, his books, his wife and children, his school, his profession, his country, and so on, so that he will tend to behave in a similar way when they are the object of praise or blame as he will if he himself is the object.

> Hence the paradox, the most important of all truths for social psychology, that these egoistic tendencies of a man's self-regard impel him to strive for the welfare of the group to which he belongs; they find satisfaction in its prosperity and are painfully thwarted by its failures and shortcomings. And here again a man's sentiment for his group may be, and not uncommonly is, of the same double nature as his sentiment for his child, that is to say, it is both an extension of his self-regard and a love; he is not only proud of being an Englishman or an American, but also he regards

[1] Shand (38) [2] McDougall (32), (33).

his nation with affection, admiration, gratitude, holds it to be a thing of value, deserving of his self-sacrificing effort [1]

McDougall has not, however, sufficiently brought out the implications of his theory. It would seem to follow that in a community which did not foster a possessive attitude in its members the strength of community spirit would be diminished. McDougall himself regards acquisitiveness as something innate, but we have already called this in question. He has not considered the effect on its members of differences in the fundamental social attitudes of different communities. It is more likely that the sentiments that will prove to be of more importance in any community, and which will in consequence affect the way in which most members of that community will behave, will be those—whether acquisitive, communistic, radical or reactionary—which the particular cultural pattern happens to stress most strongly. It may well be that in our own group community spirit or nationalistic sentiment is encouraged by the prevailing social tendencies of acquisitiveness, but if so it should also be remarked that less parochial sentiments may develop in the members of groups who are less strongly directed along these lines . for, as the result of familial and educational influences, most individuals will adopt as they develop the modes of reaction which the community in which they are reared considers to be appropriate.

The prevailing sentiments in the members of any community, therefore, should not be approached as if they were inevitable. Rather they should be considered as a reflection of the influence of the prevailing tendencies in a community on the members of which that community is composed. A complete analysis along these lines still needs to be made.

Attitudes and Interests

Some authorities [2] regard attitudes as a relative transitory type of interest : others regard interests as a transitory type of attitude. For this reason we will consider them both together. It probably depends on the attitude or on the interest which of them should be regarded as the more enduring It is certainly true that one can have an attitude on a question in which one is not interested, but one cannot have an interest in something without at the same time having an attitude towards it.

Just as no comparative analysis has been made of the different

[1] McDougall (33), p. 236 [2] Allport (3).

sentiments which tend to be developed in different communities, so also no analysis has been made of the different attitudes and interests which tend to prevail in primitive communities compared with countries in Western civilisation, or even of those in the different countries of Western civilisation which possess fundamentally different social patterns of outlook and behaviour. We shall therefore confine ourselves for the most part to a few remarks about the attitudes and interests which the motivation of our own group is apt to arouse.

We will first of all consider some of the more enduring types of attitude and interest The fact that our economy is a mixture of wealth, prestige and social class has produced a number of interesting consequences. We obtain money from work and we can purchase other satisfactions with the money we receive. But the relative strengths of these satisfactions with their concomitant attitudes and interests have not been fully explored. Certain things stand out, however. One is the *level of aspiration*.[1] It is true that the height of the aspiration level varies in different people, but it appears that more or less the same degree of aspiration occurs in the different attitudes of any one person, and whatever level an individual may set himself will have an important effect on his social relationships. The aspiration level shows itself, for example, in the extent to which one will compete with others. The strongest degree of competition will be against those who are of approximately the same level as oneself. As Allport [2] points out, one usually sets oneself a goal not so far above one's abilities that one will suffer embarrassment and humiliation if one fails, nor so far below them that one will feel ineffectual and cheap on accomplishing one's task.

The level of aspiration is seen not only in one's work but in one's social behaviour as well. It often goes by the name of "keeping up with the Joneses". The important thing may be, for example, to buy a car that is slightly better than that of the person who is in the same kind of job as oneself or who lives next door, not to buy one that is better than that of a multi-millionaire. Again, the Wimbledon tennis-player may spend a worried and despondent night over shots that would fill the average player with delight and excitement. In these attitudes we see the effect of a combination of the monetary, social and prestige forces

When once these interests and attitudes are aroused they

[1] See the experimental work of Hoppe (23) and Frank (12).
[2] Allport (3)

tend to persist. One reason for this, as Allport [1] points out, is that they, like other habits, save both time and mental effort, and therefore unless the individual encounters some serious crisis—usually of an emotional kind—which involves the readjustment of many of his ideas and actions he will not bother to change them. Another reason is also developed by Allport [2] in what he calls *functional autonomy*, that is to say, the tendency of an attitude or an interest to persist even after it no longer serves its original purpose. He gives numerous illustrations of this from which we may select the following.

> The miser perhaps learnt his habits of thrift in dire necessity or perhaps his thrift was a symptom of sexual perversion (as Freud would claim) and yet the miserliness persists and even becomes stronger with the years even after the necessity or the roots of the neurosis have been relieved.

Workmanship is another example.

> A good workman feels compelled to do clean-cut jobs even though his security or the praise of others no longer depend upon high standards. In fact in a day of jerrybuilding his workmanlike standards may be to his economic disadvantage Even so he cannot do a slipshod job. . . . What was once an instrumental technique becomes a master motive.

Finally we will choose one more example

> The pursuit of literature, the development of good taste in clothes, the use of cosmetics, the acquiring of an automobile, strolls in the public park or a winter in Miami may first serve, let us say, the interests of sex But every one of these instrumental activities may become an interest in itself, held for a lifetime, long after the erotic motive has been laid away in lavender

Not all interests and attitudes have this degree of permanence. Some of them as we all know change with age. Strong [3] found, for example, as one might expect, that the desire to be a film actor or airman or cowboy usually became rather less intense at the end of adolescence : on the other hand, some of the interests increased in desirability with age, e.g. the desire to spend nights away from home (in the United States), and the desire to contribute to charities. Still others, e.g. the desire to become an undertaker, were regarded as just as unpleasant at the age of 55 as they were at the age of 35.

[1] Allport (3) [2] Idem. (4), pp. 196–7.
[3] Strong (39).

Other interests and attitudes are still more transitory.[1] These are those which are concerned with current fads and fashions described in that masterpiece of contemporary history by F. L. Allen [2] which recalls echoes of the Big Red Scare, Mah Jong, Yes We Have No Bananas, Rudolph Valentino's funeral, Chicago gang warfare, and hundreds of other passing interests in the United States during the 1920's.

Finally it is well to draw attention to Allport's [3] distinction between *public* and *private* attitudes He points out that most people reserve for themselves the right to say one thing and to think another . that a person caught off his guard may disclose his innermost attitude, but that the direct frontal attack which many psychological enquiries make provokes him to give merely a conventional answer For this reason Allport concludes that the task of investigating attitudes is difficult and hazardous.

It is a point which it is very necessary for those making a social survey or other survey of attitudes to have constantly in mind. It does not, however, mean that such surveys are valueless, for as Allport points out there is nothing to prove that the private attitude is any more fundamental or significant than the public attitude. Both may be sincerely held. Furthermore, as Murphy, Murphy and Newcomb [4] show, public attitudes represent in essence a degree of liking or disliking of some social customs Consequently, the degree to which public attitudes are widely held may be taken as a measure of the stability of certain social relationships. This is, however, not true in every case, for the uniformity of attitude may be of a transitory nature due to a certain combination of temporary circumstances (e.g. the great uniformity of attitude towards Mr Chamberlain at the time of Munich), and there may be as great a uniformity in the opposite direction at a later date. In some cases, therefore, homogeneity of attitude gives no indication of stability of opinion, feeling or action. Nevertheless the suggestion is worth following up. It points in the direction towards which one way of investigating the stability of public attitudes and the stability of social customs might start, and that would be one of the routes too through which one could obtain a measurement of the cultural

[1] Some interests and attitudes are more liable to be influenced by propaganda influences than others are But this question is too wide to be discussed here It will be discussed with other problems concerned with propaganda in a forthcoming book

[2] Allen (2). [3] Allport (3).

[4] Murphy, Murphy and Newcomb (35), p. 1024.

pattern of different communities and of the features of those cultural patterns that would be likely to have most formative influence on the attitudes, feelings, beliefs and actions of the rising generation.

REFERENCES

1. ADLER, A, *The Practice and Theory of Individual Psychology.* London: Kegan Paul, 1932, pp 352

2 ALLEN, F L., *Only Yesterday* London. Pelican Books, 1938, 2 vols

3 ALLPORT, G W, " Attitudes " Chapter 18 in *A Handbook of Social Psychology.* (*Ed.*, C. Murchison). Worcester, Mass Clark University Press, 1935, pp 1195

4. ——, *Personality A Psychological Interpretation.* New York · Holt, 1937, pp 588

5 BANISTER, H, " Sentiment and Social Organisation ". *Brit J Psychol* 1932, **22**, 242–9.

6 BEAGLEHOLE, E, *Property* London: Allen & Unwin, 1931, pp 326.

7 BENEDICT, R, *Patterns of Culture.* London · Routledge, 1935, pp 291.

8. BURK, C. F, " The Collecting Instinct ", *Ped Sem*, 1900, 7

9 BURT, C, *The Young Delinquent* London. University of London Press, 1925, pp 643

10 CROZIER, W. J., and HOAGLAND, H " The Study of Living Organisms " Chapter 1 in *Handbook of General Experimental Psychology* (*Ed*, C Murchison). Worcester, Mass Clark University Press, 1934, pp 1103

11 DURBIN, E F M, and BOWLBY, J, *Personal Aggressiveness and War.* London: Kegan Paul, 1939, pp 154

12 FRANK, J D, " The Influence of the Level of Performance in One Task on the Level of Aspiration in Another ". *J. Exper Psychol*, 1935, **18**, 159–71.

13. GINSBERG, M, *The Psychology of Society* London. Methuen, 1921, pp 174.

14 ——, *Studies in Sociology.* London: Methuen, 1932, pp. 211.

15. ——, *Symposium on Property and Possessiveness* *Brit J Psychol.* (*Med. Sect.*), 1935, **15**, 63–8.

16 GRINDLEY, G C., " The Formation of a Simple Habit in Guinea-pigs " *Brit J Psychol*, 1932, **23**, 127–47

17. HARDING, D. W, *The Impulse to Dominate.* London · Allen & Unwin, 1941, pp 256

18 HARRISSON, TOM, " Notes on Class Consciousness and Class Unconsciousness ". *Sociological Review*, 1942, **34**, 147–64.

19 HINGSTON, R W. G, *Problems of Instinct and Intelligence* London: Arnold, 1928, pp 296

20. HOBHOUSE, L. T, *Mind in Evolution* London: Macmillan, 1926, revised edn, pp 483

21 ——, WHEELER, G C, and GINSBERG, M, *The Material Culture and Social Institutions of the Simpler Peoples* London: Chapman & Hall, 1915, pp 299.

22 HOPKINS, P., *The Psychology of Social Movements.* London Allen & Unwin, 1938, pp 284

23 HOPPE, F, " Erfolg und Misserfolg ". *Psychol Forsch.*, 1930, **14**, 1–62.

24. HULL, C L, " The Factor of the Conditioned Reflex ". Chapter 9 in *Handbook of General Experimental Psychology* (*Ed*, C Murchison) Worcester, Mass. Clark University Press, 1934, pp. 1103.

25 HUNTER, W. S., *Human Behavior.* Chicago: University of Chicago Press, 1928, pp 355.

26. HUXLEY, J, *Ants.* London: Benn, 1930, pp 79

27. James, W, *Principles of Psychology.* London: Macmillan, 1901, 2 vols.

28 KLINEBERG, O., *Race Differences.* New York Harper, 1935, pp. 366

29 LASHLEY, K. S., *Brain Mechanisms and Intelligence.* Chicago University of Chicago Press, 1929, pp. 213

30 LEHMAN, H C., and WITTY, P. A., "The Present Status of the Tendency to Hoard". *Psychol. Rev*, 1927, **34**, 48–56

31 LOEB, J., *Tropisms, Forced Movements and Animal Conduct* Philadelphia, Pa. Lippincott, 1918, pp. 209.

32. McDOUGALL, W., *An Outline of Psychology.* London: Methuen, 4th edn. revised, 1928, pp 456.

33 ——, *The Energies of Men* New York: Scribners, 1933, pp. 395.

34 MEAD, M., *Sex and Temperament in Three Primitive Societies* London: Routledge, 1935 pp 335.

35. MURPHY, G, MURPHY, L. B., and NEWCOMB, T M, *Experimental Social Psychology.* New York: Harpers, 1937 (revised edn.), pp 1121.

36. PAVLOV, I. P., *Conditioned Reflexes* London: Oxford University Press, 1927, pp. 430

37 RIVERS, W H R., *Reports of the Cambridge Anthropological Expedition to Torres Straits* (*Ed*, A. C. Haddon) Cambridge: University Press, 1901, Vol. 5

38 SHAND, A. F, *The Foundations of Character.* London Macmillan, 1920 (2nd edn), pp. 578

39 STRONG, E K, *Change of Interests with Age.* Stanford University Press, 1931, pp 235.

40. SUTTIE, I D., *Symposium on Property and Possessiveness. Brit. J Psychol.* (*Med Sect*), 1935, **15**, 51–62

41. WARDEN, C J., *Animal Motivation.* New York: Columbia University Press, 1931, pp 502

42 WATSON, J B, *Behavior. An Introduction to Comparative Psychology.* New York Holt, 1914, pp 439.

43 ——, *Behaviorism,* London: Kegan Paul, 1931, pp. 308.

CHAPTER VIII

MENTAL MECHANISMS AND EMOTION

INTRODUCTORY

The organisation which keeps a human being in adjustment with his fellows and with his environment is very complicated : it is a reflection of the combination of his innate capacities and the physical and social influences that he has encountered in the particular social group in which he happens to have been brought up. The relative strength of the reaction of different individuals to the same situation consequently varies, and it is this individuality which enables some people to remain unscathed by experiences that would induce an acute form of maladjustment in others. Again, among those who become maladjusted some may react in one way and others in quite a different way. Nevertheless, in spite of this diversity, it is possible to describe not more than a few main types of maladjustment which those individuals who become maladjusted in our society exhibit. Many of these are in fact of such common occurrence in their milder forms that they can hardly be regarded as maladjustments at all. They are types of mental mechanism which occur with great frequency in many " normal " people Only in their more extreme manifestations do they become abnormal.

COMPENSATIONS

One of these is the mechanism of *compensation*. We have already mentioned Adler's theory in Chapter VII. The main idea which is relevant to our present purpose is that everybody attempts to compensate for a feeling of inferiority which arises in childhood when the child feels himself to be inferior to his parents and to the world at large because of his physical weakness and dependency. The feeling of inferiority is likely to be stronger than the average in children who are physically handicapped by deafness, a stutter, a club foot, etc. : it is also likely to occur in the unwanted child who may be made to feel his inferiority by his parents more than is the average child : or in a younger or youngest child : or again it may occur in a slightly different way in the spoilt child who, having everything provided for him in his home, never really finds his feet and consequently, when he

goes away from home and finds he is no longer so much the centre of attention as he was within it, develops a feeling of inferiority with its resulting compensatory behaviour.

These feelings of inferiority which all of us possess, though some possess more strongly than others, lead us to attempt compensations for them. And so long as the form of compensation we decide upon lies within our capacities we are able to remain in adjustment with our environment. If, however, we set our goal too high some form of maladjustment will develop. Now since different people possess different levels of ability, and since different people possess different depths of inferiority feeling, the compensations (often unrecognised for what they are by the individual who uses them) will differ both in kind and in degree. Some may be observed quite frequently in our friends or acquaintances (though it would be rash to conclude that every instance of the kind of behaviour about to be described is of necessity the result of compensation) ; others are observable in mental-hospital patients. Let us look at the types of behaviour which are often the result of compensating for some consciously or unconsciously recognised feeling of inferiority.

(*a*) *Over-evaluation*

One of the types goes by the name of *over-evaluation*. This may concern some physical or mental characteristic, or it may concern personal property. Thus, for example, a girl with pretty teeth may acquire ways of talking or of smiling or of laughing so that her teeth are shown off to the best advantage. One would not care to criticise this form of behaviour ; the girl may easily improve her social adjustment by adopting it. But if she were to practise ways of improving her smile in front of the mirror for most of the day, and if she did this to the neglect of other duties, then the behaviour would become a form of maladjustment. Another example of the same kind of behaviour would be a man who prided himself on his powers of observation, and who over-evaluated this characteristic to such a degree that he consistently led any conversation round, or broke into any discussion, so as to be able to demonstrate the fact that he had observed some perhaps rather insignificant and irrelevant detail.

Another example of over-evaluation lies in a person's attitude towards economic or social status. Because he over-values wealth or social class a person may tend to live beyond his income, buy the more expensive rather than the less expensive

things, recount stories about the behaviour of the aristocracy, and if possible any connection with them he may have had, and generally try to keep up appearances so as to impress his neighbours with his economic or social importance. "Keeping up with the Joneses", social snobbery and other kinds of competitive emulation of the same general type may therefore frequently be regarded as manifestations of this mechanism of over-evaluation.

(b) Introjection

The next mechanism we shall consider goes by the name of *introjection.* It is closely related to the last example of over-evaluation. In this one tends to obtain reflected glory from some other person or group of people or even institution with whom one associates, or who possess some of the qualities which one admires. It may be shown in the pleasure which one member of a family experiences when another member achieves some success: or in the pleasure which is felt when one's school wins a game, or as part of the reaction when one's country wins a war: it may be shown, if one is a devoted conservative, in pleasure at being elected a member of the Carlton, or, if one is an intellectual, to the Athenæum, or, if one is a sportsman, to the M.C.C. It may be an alternative to over-evaluation in accounting for the pleasure some people might obtain from being seen walking down Bond Street with a duke on either arm, or at being seen lunching at the "Ivy" with a different girl every day, each one of them more attractive than the last.

In its more abnormal and extreme manifestations one comes to identify oneself to such a degree with another admired individual that one believes one is in fact that person himself. So one might actually believe oneself to be Napoleon or Frances Day or Lord Rothschild and behave in the way in which one believes they would behave.

(c) Belittling Others

So far we have considered mechanisms by which a person attempts to raise his own importance. But the end result is the same if instead of raising oneself one diminishes the importance of other people. There are a number of mechanisms of this type. One of the most frequent is to belittle them by fault-finding, destructive criticism and malicious gossip. The people who are the object of gossip are most frequently the superiors of the person who gossips about them, or else they are people of whom the person who gossips is jealous or envious in some

way. Thus gossip by students about members of their teaching staff may be attributable to envy of the position of superiority which the teachers enjoy, whereas gossip by members of the teaching staff about their students may be attributable to envy of the students' freedom and relative lack of responsibility.

(*d*) *Projection*

Another common mechanism goes by the name of *projection.* In this one tends to blame others for one's own failures and weaknesses and shortcomings. A person who is unconsciously aware of his own shortcomings sees them as if they appeared in another person. He criticises others for the faults he possesses himself. It is observable in a mild degree in many forms of behaviour, one of which might be the tendency of the incompetent car driver to complain of the bad manners of other road users. In more severe forms the mechanism gives rise to a delusional symptom, e.g when an elderly spinster accuses a young doctor of making sexual advances to her.

A somewhat similar mechanism is to blame other people for one's own limitations, by pointing out that the pressure of social customs, traditions, conventions and other restrictions is so strong that it has prevented one from making a deeper mark on the world than one otherwise would have. Or to maintain that the workings of one's mind are really so far ahead of those of other people that they are unable to keep up with one and so fail to understand one's true worth. In more severe forms this mechanism may be seen in what are called *ideas of reference* and *ideas of influence*, that is to say, beliefs that people are making uncomplimentary remarks about one, that they are planning methods of encompassing one's discomfiture, or that they are forcing one to do things one does not want to do.

(*e*) *Belittling Oneself*

As a final example of these compensatory mechanisms may be mentioned the rather subtle technique of belittling oneself. It occurs with great frequency in ordinary life—though it is often a reflection of a genuine modesty and should not (any more than any of the other mechanisms that have been mentioned) inevitably be taken to indicate a compensatory mechanism at work. As examples of some common ways in which the mechanism may be used as a form of compensation we may take the not unusual apology for having played so badly which someone who has lost a game, e.g. of tennis, may make to his opponent,

or the apology which some speakers (or lecturers) not infrequently make for not having time to go into the subject in greater detail, or for having been hurried in preparation (by circumstances over which they have had no control), or for being poor at public speaking. In these ways criticism may be disarmed, and perhaps even praise for what has been accomplished in spite of the difficulties may be awarded. The apologies also tend to give the impression that the speaker (or lecturer) really knows far more about the subject than he has been able to say in his speech.

Repression and the Freudian Theory

In all the mechanisms that have so far been mentioned (when, let it be said again, they are true examples of such mechanism) there is some degree of what is called *rationalisation*, that is to say the assignment of a false motive to behaviour because the person using the mechanism would be ashamed consciously to acknowledge the true motive. The true motive is repressed into the unconscious mind.

The mechanism of *repression* is discussed at length in the picturesque analogy of the Freudian theory.[1] According to this view every mental process belongs in the first place to the unconscious and from there it may, under certain conditions, proceed further into the conscious system. Freud compares the unconscious system to a large ante-room in which the various mental excitations crowd upon one another like individual human beings at a popular reception. Adjoining the ante-room is a second, smaller apartment, a sort of reception room in which consciousness resides. But on the threshold between the two rooms there stands a doorkeeper, the *Censor*, who examines the various mental excitations that are struggling for admittance to the reception room, censors them and refuses them admittance if he disapproves of them. He is a kind of Lord Chamberlain scrutinising the credentials of those who clamour to be presented at Court. If he is very vigilant he will stop those he disapproves of at the threshold: if he is off his guard the mental excitations may temporarily slip into the reception room until he notices them and drives them out again But even those favoured mental excitations which are granted permission, or otherwise manage, to pass the threshold do not necessarily enter consciousness immediately. They only do so if they succeed in attracting attention, much as, to change the analogy, a member of parlia-

[1] Freud (5), pp 248–51.

ment is permitted to speak in debate only if he is successful in catching the eye of the Speaker. This second chamber is given the name of the *pre-conscious*. If the Censor refuses any mental excitation admittance to the pre-conscious system that mental excitation is *repressed* Repression, however, does not destroy a mental excitation : the mental excitation remains in a condition of stress with its energy undischarged. It is consequently likely to appear again if it can elude the vigilance of the Censor, or if it can adopt some form that the Censor will not recognise.

The mental excitations which are most likely to be repressed are those which conflict with the system of morals and ideals which the individual has built up during his training and development, and which would therefore tend to lower his feeling of self-respect if he were to acknowledge their existence in an unmodified form. As one example we may take the attitude of *ambivalence* which some children (most, or all children according to Freud) may show towards their parents. They both love them and hate them. They love them for the care and protection, the food and the warmth they receive from them : they hate them for the restrictions which they necessarily impose upon them and for not allowing them to do everything they want to. The force of social conventions is such that they cannot (without losing self-respect) obviously betray these feelings of hostility They therefore repress them and keep them repressed It is sometimes possible, however, to show that a person's behaviour towards his parents rests on this unacknowledged and repressed antagonism towards them. A special form of this antagonism is the *Œdipus* complex and the *Electra* complex. In the Œdipus complex a son, through his more intimate association with his mother than with his father, is believed to fall in love with her and to hate his father for the rights he possesses over her. A similar situation exists in the daughter's corresponding attitude towards her father and her mother, although the development of the attitudes is rather more difficult to explain.

There is no doubt that in some cases the behaviour of sons towards their fathers and of daughters towards their mothers is bound up with a different degree of affection which they may feel towards their two parents. But that the mechanism is as universal as Freud believed is far more questionable, and its extension to explain phenomena such as religion (God being identified with the father) or nationalism (one's country being identified with one's mother) is much thinner still.

In so far as the moral training of different people is the same they will tend to repress the same kinds of things : in so far as it is different one person may repress a mental excitation that will be consciously acknowledged by another without any shock to his ethical standards

But those that are repressed continue to try to enter consciousness, and they can only do so, as we have seen, if they manage to slip past the Censor. The best chance they have of doing this is if they appear as a *symptom*, that is to say a " cleverly chosen ambiguity which has one meaning to the conscious and quite a different meaning to the unconscious system ". Some of these symptoms have already been discussed in this chapter Their task of eluding the vigilance of the Censor is made still easier if the Censor is off his guard as he is, for example, when the person is very tired or when he is asleep.

This leads us to consider some of the mechanisms which Freud believes are employed during sleep.[1] Dreams, he thinks, are in most cases the expression of unconscious wishes. The dream as we dream it and subsequently remember it possesses a *manifest content*, but in order to interpret its true significance we must discover its *latent content*. The manifest content represents the distortion that the repressed desires of the latent content have had to undergo in order to elude the Censor, and various mechanisms are employed to achieve this object. One of them is known as *displacement*. Things that in the latent content are really important emotionally may appear as very minor incidents in the manifest content : similarly, things that in the manifest content appear to be most important may be of only minor significance in the latent content. A second mechanism is *condensation*, in which several items of importance in the latent content are combined and blended together so as to appear as a single event in the manifest content. It is a process rather like a composite photograph in which the photographs of a number of people are taken on the same plate. The resulting picture represents none of them individually but is a blending of them all. A third mechanism is *dramatisation*. The events of significance in the latent content are dramatised and portrayed as if in a play. The dreamer is able to adopt a detached attitude towards the events that are occurring in his dream because they appear to him as if he were merely part of the audience watching a theatrical performance unfold. A fourth mechanism is

[1] Freud (4).

symbolisation Each element in the manifest content is a symbol which signifies and stands for something else in the latent content Thus instead of dreaming of a male sexual organ one dreams of a gun or a pencil · instead of dreaming of a female sexual organ one dreams of a box or a bottle. But again, the universal validity of the symbolical aspects of these objects would seem to be open to question. For instance, it is maintained that a king in the manifest content represents the father in the latent content: it may do so in some cases, but in others it might merely mean that the dreamer has social aspirations.

After the sleeper wakes and attempts to recall his dream a further mechanism occurs which makes the dream still harder to interpret. This is known as *secondary elaboration*. The dream as it is dreamt is often illogical and disconnected and spasmodic. The process of secondary elaboration is to weave the various disconnected items together into a form which makes a more logically connected whole, in this way making the individual and really separate items more difficult to disentangle from one another.

In interpreting the dream the Analyst is allowed to make use of the principle of ambivalence. In this connection it means that a symbol may, if it fits a patient's case better, be interpreted as standing not for what it usually does but for the opposite. Thus a dagger which would ordinarily be interpreted as referring to the male sexual organ may, if necessary, be interpreted as referring to the female. This latitude allowed to the Analyst in the interpretation of his patients' dreams would appear to destroy any basis of scientific exactitude for the theory. Analysts are, however, entirely unmoved by such criticism. They point out that the system is not to be judged according to rules that are used in scientific investigation. It has been evolved as a clinical rather than as a scientific method, and the basis of criticism must therefore rest on whether or not the system works, that is to say, on whether or not patients can be cured of their maladjustments. This line of argument is not, however, very convincing. It would be possible, if Analysts were prepared to take the trouble, to record the precise conditions under which, let us say, a particular symbol had been successfully interpreted in one way and those in which it had been successfully interpreted in the other. And if the record were made sufficiently comprehensive and exhaustive it would be possible to apply the ordinary scientific criteria to the theory and investigate its degree of truth or falsity.

Still, however much one may question on the available evidence the claim for a universal validity of the doctrines, there is no doubt that the Analysts have brought to the forefront a number of important mental mechanisms which one should be aware of as methods which are sometimes employed by some people as means of dealing with their difficulties in adjustment.

REGRESSION, SUBLIMATION AND FIXATION

Before leaving the Freudian theory let us consider the mechanism known as *regression*. Freud believes that the *libido*, i.e. the energy underlying the sexual instincts, is directed towards different objects in the course of normal development. At first it finds expression through the mouth in the pleasure an infant obtains from sucking. As the infant grows up the libido is directed towards other objects until in the normal person it finally finds expression in direction towards a person of the opposite sex. If, however, in adult life the libido should require expression in a way that conflicts with the system of morals and ideals he has built up in the course of his development, then a situation of potential neurosis has arisen One way in which this conflict may be solved, however, a solution which allows the individual to remain in a normally healthy mental state, is by means of *sublimation* Freud holds that sexually impelled excitations are very plastic and that they are able to change their object very easily. Sublimation, therefore, occurs when the original object of the sexual impulse is abandoned and a new aim is adopted, an aim which is social rather than sexual in character, e.g. instead of trying to win the girl one tries to win the game.

If, however, no satisfactory alternative object can be found, if, that is to say, no sublimation can take place, the libido may *regress* to an earlier object : it may return to one of the stages through which it has already passed and be directed on to the object that is characteristic of that phase. Regression is particularly likely to occur if the development of the libido has not been normal, for it is always possible that a part of the libido may become *fixated* on to the object characteristic of any phase and leave less to go on to the next stage. If this occurs it is easier for regression to occur when a person encounters a difficulty in adult life than if the development of the libido has been normal.

If regression does take place there are two ways in which the individual may react. He may consciously accept the regression because he sees nothing wrong in it, and it does not infringe his

conscience or conflict with his system of morals and ideals (due perhaps to having been brought up in a morally lax or in an unconventional environment). Thus he may consciously accept, let us say, homosexuality and actively live the life of a homosexual. This type of reaction is called a *perversion* and no neurosis necessarily arises. The individual continues to live his way of life and is relatively satisfied by it, although a neurosis may develop *indirectly* later if he finds he is ostracised by others because of his perversion.

The second way in which he may react is by means of repression, and a great effort will be expended to prevent the regression or fixation from entering consciousness. He may exhibit a whole host of symptoms and unusual types of behaviour, none of which he appreciates as being connected with a regression and repression, but which if unwoven could be shown to be caused by them. A regression (or fixation) together with repression invariably leads to a neurosis.

Now without fully accepting the whole of Freud's elaborate doctrine it is possible occasionally to see types of behaviour which may conveniently be classed as regressions. They are exhibited by people who refuse to be their age, who giggle for no discoverable reason, and who perform other types of immature behaviour which is more characteristic of people considerably younger than they. It is also shown by people who adopt stereotyped reactions in their dealings with other people, reactions which perhaps they have adopted as the result of seeing them frequently portrayed on the movies and which they believe to be characteristic of the behaviour of men and women. They sometimes occur in methods and manners of speech, e g. the adoption of child-like turns of phrase that are unconsciously calculated to arouse protectiveness in other people, and they occur in other mechanisms of a similar kind as well. In an extreme form this mechanism is exhibited by the officer who was taken prisoner in the last war in circumstances in which he might justifiably have been accused of cowardice He regressed psychologically to the age of five years. " He called the servants by the names which had belonged to servants who had been in the house when he was five. He called his young sister by the name of his eldest sister, etc. His speech was infantile. He lisped and used phrases and recalled incidents that his mother remembered only with difficulty." [1]

[1] Fisher (3), p. 96.

Persistent Non-adaptive Reactions

There remain to be considered a few more mechanisms which may arise in circumstances in which an individual is experiencing some difficulties in adjustment. One way of reacting to such a situation is to repeat and to persevere with the same type of behaviour over and over again, never getting any nearer the solution of the difficulty The particular reaction is ineffective, but it is nevertheless repeated If one arrives at a railway station at the end of a journey and unsuccessfully searches one's pockets for one's ticket, this type of reaction would be exhibited if one proceeded to search the same pockets over and over again. The more frequently one searches the same pockets without success the more emotional the situation is likely to become. It is true that a certain amount of persistence in the same type of behaviour is often quite useful socially. It may be illustrated by the effect which the spider had on Robert the Bruce, and, with less dramatic results, in the advantage which a research worker or a bank clerk obtains through possessing the characteristic in more than an average degree. But the type of persistence exhibited by the person who has lost his ticket is of a rather different kind : it is guided by emotion rather than by reason and so it becomes uneconomical and disturbing. In more extreme forms emotion and persistence are tied up together in obsessional and compulsive acts. These occur frequently in their milder forms among normal people, but the degree of emotion that accompanies a ritualistic act such as throwing spilt salt over the left shoulder or not walking under a ladder is rarely sufficiently strong to induce any feeling of worry if they are not indulged in, though there may be a slight *malaise* These superstitions, too, depend on the current beliefs in the particular community in which the person is living. But the obsessions which make the patient so worried as to lead to an interference with his normal life are mainly those that do not have the backing of social acceptance and approval. They have been classified by Mapother and Lewis [1] into four types, though there is a good deal of overlap between the types, (1) Ideas and images, (2) Impulses, (3) Phobias, (4) Ruminations An obsessional idea is a form of delusion : an obsessional impulse ranges from the minor ritualistic acts we have already mentioned up to a continual washing of the hands or to an impulse to plunge a knife into people or

[1] Mapother and Lewis (9), p. 1880.

the street: phobias take many forms; some are irrational fears of, e.g. spiders, mice or cows, others are fears of open or enclosed spaces and so on: ruminations take the form of continual and pointless questioning or search, such as trying to recall a particular incident or name when there is no need to do so.

Anxieties and Other Emotional Over-reactions

In the obsessions and compulsions the patient realises the incongruity of his actions and he is consequently upset because he feels he has to perform them. In other types of reaction he is not upset by having to do what he does, but by what he regards as the seriousness of his situation His response is excessive and much stronger than the situation warrants, and it is often displaced on to objects other than the one which originally gave rise to the feeling. Typical of this reaction is anxiety. In both its milder forms of undue anxiety and in its more severe forms of anxiety neurosis the feeling is most likely to arise when a person feels his security is threatened. It is frequently found, too, to be associated with an inferiority feeling. After a person has been unsuccessful at something he has tried to do he may develop an attitude of self-depreciation, tend to undervalue his assets and to convince himself that he will be unsuccessful in any attempt to solve a subsequent difficulty of the same sort, even before he has begun to try. From this may follow the fear of encountering such difficulties, and, by extension, of encountering *any* difficulty The anxiety neurotic is uneasy, and his thinking is spasmodic and disconnected. He is restless in his activity, but simultaneously shows symptoms of fatigue. Normal individuals sometimes show such symptoms, but in their case there is what we consider to be a more adequate predisposing cause—sometimes a completely adequate predisposing cause.

So, too, with other types of emotional reaction than anxiety. On coming into a fortune of several thousand pounds the normal person may be found to be vivacious and energetic, in constant high spirits and easily distractible. His constant high spirits may lead him to exaggerate and to distort, and everything he does, even the most irrelevant of his actions, may be carried out with zest and enthusiasm. This picture, too, is found in the manic patient in the mental hospital, but whereas with the normal person the phase of elation will be of only relatively brief duration, the manic patient's elation and euphoria will continue for a longer time and will prevent him from carrying on his life

in the ordinary way. It will not matter to the person who has inherited several thousand pounds if his elation incapacitates him temporarily from earning his own living, but in the case of the manic patient it usually matters very much.

In contrast to this picture of elation we have a completely different pattern of behaviour in depression. Here we find an over-reaction of quite a different type. Instead of being joyous and elated and vivacious the picture is one of gloom and misery. The actions are slow. The patient may sit for hours in the most profound dejection. He may, if he is willing to talk at all, say he has nothing to live for and that suicide is the only solution to his misery. The pattern may occur as a temporary phenomenon in the normal person who has suffered some severe emotional experience : in the mental-hospital patient, however, it is of much longer duration and there may be no discoverable adequate predisposing cause Yet, if he is accessible to questions, he may mention the imaginary sins he has committed and the punishment that will be the just reward for his wickedness.

Hysteria and Inaccessibility

Finally there is a third technique which may be employed Instead of worrying about the incongruity of his actions, or instead of over-reacting to the situation, a person may exhibit an under-reaction, apathy or indifference to his symptoms In the normal person a more than usual degree of apathy may be partly, no doubt, due to the type of training he has received Thus the Public School boy in England or the Plains Indian in America are noted for their reserve : the Sicilian for his lack of it. In those Englishmen who are trained to suppress the expression of emotion it would be wrong to infer that they do not feel emotional. Yet there are some quite normal people who do in fact feel less strongly than others in certain situations. In the abnormal individual we find apparent indifference and under-reaction in the maladjustment which is called hysteria. The hysteric is not upset by his reactions nor worried because he feels he has to do them He accepts and discusses his symptoms in an emotionally detached way. His symptoms may take the form of an anæsthesia, a paralysis, a tremor, an amnesia,[1] a fugue,[2] as well as many others. They frequently occur after an industrial accident, and when they do so they complicate the physical results of the accident and tend to persist until the question of

[1] Loss of memory [2] See Chapter IV, pp. 54–5.

compensation has been settled But whatever particular type of symptom may be shown it is the patient's indifference to his incapacitation that is one of the most noticeable features.

An exaggerated form of this inaccessibility and indifference is to be found in some types of *schizophrenia*. Major catastrophes may go on in the outside world, but the schizophrenic appears unmoved. If he has a system of delusions of persecution he may mention the depths of infamy to which his persecutors are descending with hardly as much as a conventional expression of annoyance.[1] Sometimes he will merely sit in a corner by himself or spend his day staring out of the window with a far-away expression on his face, apparently day-dreaming, and completely indifferent to his personal appearance. Sometimes he may seem to be quite normal, and it is only on getting to know him a little better that something " peculiar " is noticed about his behaviour. In this type of reaction we are approaching perhaps the man-in-the-street's picture of a don in one of the older universities.

Watson's Theory of Emotion

Thus many of the types of reaction which are considered to be abnormal in our culture are to be found occasionally in those who are generally considered to be normal. The main difference between the abnormal's responses and those of the normal individual is that we consider the former's to be excessive or incongruous or too prolonged or inadequate—to be, in fact, out of proportion to what we consider to be the seriousness of the situation. The kind of situation in which normal emotion is likely to arise is that in which a person finds himself in a new or unexpected situation. This is the kind of situation that gives rise to difficulties, and the resulting maladjustment may be mild and lead to only transient emotional behaviour or more severe and give rise to a more prolonged type of maladjustment.

It has been the view of some authorities that human beings possess a few innate patterns of emotional reaction, and that all the varied forms of emotional expression that one encounters among adults are modified from these few. Thus Watson[2] thought that all emotions except three were conditioned reflexes based on the conditioning of responses to the three unconditioned emotional reactions of fear, rage and love. He thought that

[1] This is not true of all schizophrenics, for some types tend to over-react unexpectedly for very minor reasons.

[2] Watson (12), Chap. 7.

these unconditioned emotional reactions could be evoked in the young infant in the following ways · For *fear*, a loud sound or a sudden loss of support ; for *rage*, hampering of movement, e g. when the arms were kept pressed against the sides ; for *love*, stroking the skin, tickling, gentle rocking or patting, or the stimulation of the erogenous zones. All the other emotional reactions he considered to be conditioned to these three. For example, Watson conditioned fear in an infant to a white rat by striking a bar behind the infant's head as he stretched his hand out to feel the rat. When the fear response had been conditioned to the rat it extended itself to other furry animals which previously called out neither a positive nor a negative response Furthermore, by presenting the animal at meal-times, Watson found that it was possible to uncondition the fear response, so that the infant once more stretched out his hand to feel the rat Watson maintained that other emotional reactions become conditioned or unconditioned in a similar way

The generalisation of the theory is, however, farfetched. To prove that some emotional reactions can be conditioned does not prove that they all are conditioned . again, the conditioned fear experiment does not succeed with all infants ; some turn round and scowl at the loud noise and do not appear to connect it with the white rat Furthermore, the results of Sherman's experiment do not support the theory.

Sherman [1] used infants below 12 days old in his experiment and gave the following four different types of stimuli : (1) *Hunger*, the infants being kept fifteen minutes beyond their usual feeding time ; (2) *Dropping* them 2 to 3 feet towards a table ; (3) *Restraint*, the infant's head and face being held down on the table with a fairly firm pressure ; (4) *Pricking* their cheeks six times with a needle. Sherman divided his observers into four groups : (*a*) One group was shown motion pictures of the stimulating circumstances and the ensuing responses ; (*b*) A second group was shown the motion pictures of the ensuing responses without being shown the stimulating circumstances ; (*c*) A third group was shown the film in which the stimuli and responses were transposed, e g. pricking with the needle being shown before the response to restraint, and so on ; (*d*) A fourth group had direct observation of the infants' responses, but the stimuli were applied while the infants were behind a screen. The observers in this group, therefore, had to depend on their

[1] Sherman (11).

observation of behaviour without knowing the stimulating circumstances.

The results were that 27 of the 40 observers in group (*a*) answered "fear" to the dropping, 24 named "anger" to the restraint, 13 answered "pain" to the sticking with a needle, and 7 named "hunger" to the missing of the meal. Furthermore, eighteen of the observers stated that they named the various emotions they did because they were influenced by seeing the stimuli. In group (*b*) the judgments of the emotions were very variable: anger was given most frequently—11 times to the hunger reaction, 14 times to the dropping reaction, 13 times to the behaviour following restraint, and 8 times to the behaviour following pricking with a needle. A similar discrepancy was found in the interpretation of other types of behaviour. As an instance of the difference between groups (*a*) and (*b*) may be mentioned the fact that of the observers in group (*b*) only 15 per cent. attributed the response of fear to the dropping, while in group (*a*) 67 per cent. did.

In the case of group (*c*), when the anger reaction was preceded by a leader representing fifteen minutes' delay of feeding, 60 per cent. named hunger as the reaction, and when the hunger reaction was preceded by the restraint 46 per cent. named anger as the reaction. By pure chance one would expect such estimations in only 25 per cent. of the cases. Thus the stimulus preceding the reaction was usually the deciding factor in the name given to the reaction.

In the case of group (*d*) "colic" was most frequently suggested as the cause of all the responses The observers in this group were mostly medical students, so they may have judged by inference. The nurses in the group, too, tended to say that the behaviour was due either to colic or to being awakened from sleep. The decisions, therefore, appear to have been based on *probability* rather than on differential observation.

Thus these heartless experiments indicated that there is no pattern of expression which may be said to characterise any particular emotion. Yet if, as Watson maintained, there are three innate patterns of emotional response—fear, anger and love—then Sherman ought to have found a large percentage of agreement among the judges naming the reactions Whether the reaction was named rage, fear or love does not matter very much. The point is that they should have fallen into three clearly marked groups. In fact they did not do so. Sherman's

work shows that the differentiations of the infants' responses are made on the basis of responses to given stimulating conditions, and they are only accurate when these stimulating conditions are known.

DARWIN'S THEORY OF EMOTION

Darwin's [1] theory of the fundamental nature of emotional expression was in some ways even wider than Watson's. Darwin formulated three principles :

(1) *The Principle of Serviceable Associated Habits.* This is that certain actions and movements are useful in order to relieve certain sensations of desires, and that these actions may become associated by habit with the sensations. They may, according to Darwin, persist even after their original usefulness has passed, and as an example he mentions that he found it impossible to stop himself from leaping backwards when a poisonous snake in the Zoo struck at him from the other side of the glass through which he was observing it. Another example of the same kind of thing is the behaviour of a dog turning round and round before lying down on the drawing-room carpet, a habit which has persisted from the time when the dog in the prairie turned round and round on the grass before lying down, in order to prepare a comfortable place on which to rest.

(2) *The Principle of Antithesis.* According to the first principle certain states of mind lead to the establishment of certain habitual actions. Therefore, according to Darwin, when a directly opposite state of mind exists an opposite set of reactions will occur. For example,

> When a dog approaches a strange dog or man in a savage or hostile frame of mind, he walks upright and very stiffly ; his head is slightly raised, or not much lowered ; the tail is held erect and quite rigid , the hairs bristle, especially along the neck and back , the pricked ears are directed forwards, and the eyes have a fixed stare These actions . . . follow from the dog's intention to attack his enemy, and are thus to a large extent intelligible . . Let us now suppose that the dog suddenly discovers that the man whom he is approaching is not a stranger, but his master ; and let it be observed how completely and instantaneously his whole bearing is reversed Instead of walking upright, the body sinks downwards or even crouches, and is thrown into flexuous movements , his tail, instead of being held stiff and upright, is lowered and wagged from side to side , his hair instantly becomes smooth ; his ears are depressed and drawn backwards, but not closely to

[1] Darwin (1)

the head ; and his lips hang loosely. From the drawing back of the ears, the eyelids become elongated, and the eyes no longer appear round and staring . Not one of the above movements, so completely expressive of affection, are of the least direct service to the animal. They are explicable, as far as I can see, solely from being in complete opposition or antithesis to the attitude and movements which, from intelligible causes, are assumed when a dog intends to fight, and which consequently are expressive of anger [1]

Similarly, the serviceable associated habit of the frowning brow, thrown-back shoulders and clenched fists expressive of rage and power has as its antithesis the raised eyebrows, shrugging shoulders and open palms expressive of impotence, or the inability to cope with a situation.

(3) *The Direct Action of the Nervous System.* According to Darwin's third principle, when an individual is strongly excited nervous energy is released and finds expression by means of movements which partly depend on nervous connections and partly on habit. For example, when we are terribly afraid, the excess nervous energy finds its expression in trembling ; when we are in agony we writhe , when we are in pain we perspire ; when we are enraged we clench and grind the teeth, heave the chest, and so on

Now according to Darwin's principles and the elaboration he makes of them, each and every kind of emotion is represented by different and specific kinds of expressive movements. Therefore it ought to follow, if this is true, that one can accurately describe the emotions depicted if one sees photographs of people expressing various emotions. But the experimental work that has been done on this point is far from convincing.

In the first place there have been experiments in which photographs or artists' sketches of posed emotional expressions have been used. Feleky,[2] for example, posed for a series of photographs over a period of about a year, endeavouring to depict various emotions. Similarly, Langfeld [3] used artists' sketches of posed emotional expressions. These photographs or artists' sketches were then shown to a group of individuals who were asked to indicate the particular emotion that was portrayed on each. It was found that there was considerable uncertainty in the judgment of many of the photographs and sketches, some being judged relatively accurately, others very poorly One reason for this might, of course, be that the emotions depicted

[1] Darwin, pp 50–1. [2] Feleky (2). [3] Langfeld (8).

were posed, and that people who posed were not actually in the emotional situation at the time Consequently they might exaggerate traditional or conventional expressions rather than modes of expression used in actual emotional situations. Landis,[1] therefore, photographed people (unknown to them) while they were actually exhibiting emotion : but he found no characteristic pattern for each emotion, and no better agreement about the emotions being experienced when the photographs were shown to other people for judgment than was found with the posed photographs or the artists' sketches.

These facts seem to indicate, therefore, that our judgments in ordinary life must be based on some other factor, for there is little doubt that in ordinary life we are able to interpret with fair accuracy the emotion that an individual is experiencing. This additional factor is the total situation in which the person happens to be at the time, or which we believe him to be in. The results of Sherman's experiments have already shown us the importance of this factor.

Cultural Patterning of Emotional Expression

Another deduction from Darwin's theory would be that all people, including primitive people, should express the same emotion in the same way. This can be investigated by referring to anthropological material.[2] Thus Darwin regarded the shake of the head from side to side to mean " No " as an extension of the child's refusal of food. Yet he himself pointed out that this was by no means a universal behaviour pattern. Thus the Dyaks of Borneo contract their eyebrows slightly to mean " No ", the Sicilians raise the head and chin, and so on.

Tears, too, do not always imply sorrow. It is reported that among the Maori of New Zealand no demonstration was made on the departure of a friend, but tears were shed if he returned. And even when they are used to imply grief there is often a conventional pattern—thus in China it is reported that the amount of emotional display permitted on a sorrowful occasion depended on a person's social class. A nobleman showed less emotion than a commoner, and for the latter to be restrained implied that he was presuming beyond his class.

Again, in Western culture it is conventional to stand up in the presence of a superior as a mark of respect. But the inhabi-

[1] Landis (7).
[2] See Klineberg (6) for a fuller account of the examples given below.

tants of Fiji or the Tonga Islands sit down in those circumstances. The inhabitants of the Friendly Islands take off their clothes as a mark of respect, and the Todas raise the open right hand to the face, resting the thumb on the bridge of the nose. To us it means something rather different from respect

The causes of emotion may also vary. Some authorities have endeavoured to explain shame on a sexual basis, but there are many groups who go about without any clothes, or who wear clothes which cover parts of the body which we do not regard it as shameful to conceal, while leaving other more intimate parts of their bodies unclothed There are groups of Australians who feel most ashamed when they are not wearing their nose ring—the sole article of clothing they wear. Similarly, too, death is not always regarded as a cause of sorrow : to some peoples it is accepted with rejoicing.

Thus it follows that the cultural pattern very largely determines the kind of emotion, the amount of emotion, and the way the emotion is expressed in different situations It is not surprising, in view of this, that when we try to judge emotional expression from photographs we should be so unreliable, for in ordinary life we are guided by the total situation that the individual happens to be in at the time, and when we see people exhibiting emotional behaviour in real life we do not judge so much by their muscles and expressions as by the situation they are in. It is quite possible to infer entirely the wrong emotions if we apply the conventions of our own culture to the behaviour of people in another. Thus Porteus,[1] on asking a group of Australian natives to do a particular dance for him, was met with a volley of replies, apparently in terms of the most vehement refusal He felt that the language needed no interpretation. Nevertheless, his interpreter remarked that they were saying that they would do it for him Every cultural pattern has its own types of response which it considers to be normal and others which it considers to be abnormal. Not only so, but in addition a type which is considered to be abnormal by one culture may be the most ordinary and usual pattern of response in another.

[1] Porteus (10).

REFERENCES

1. DARWIN, C, *Expression of Emotion in Animals and Men* London: Murray, 1872, pp 374

2. FELEKY, A M., "The expression of emotions" *Psychol Rev.*, 1934, **21**, 33-41

3 FISHER, V E, *An Introduction to Abnormal Psychology.* New York: Macmillan, 1931, pp 512

4 FREUD, S, *Interpretation of Dreams* London: Allen & Unwin, 1937, revised edn, pp. 600

5 ——, *Introductory Lectures on Psycho-analysis* London· Allen & Unwin, 2nd edn, 1943, pp 395

6. KLINEBERG, O, *Race Differences* New York· Harper, 1935, pp 366.

7 LANDIS, C., "The Interpretation of Facial Expression in Emotion". *J General Psychol*, 1929, **2**, 59-72

8 LANGFELD, H S, "The Judgment of Emotion by Facial Expression". *J Abn Psychol*, 1918, **13**, 171-84.

9. MAPOTHER, E, and LEWIS, A J, "Psychological Medicine" Sect. 21 of *A Textbook of the Practice of Medicine* (*Ed*, F. W Price). Oxford. University Press, 6th edn, 1941, pp 2032.

10 PORTEUS, S D. *The Psychology of a Primitive People* London: Arnold, 1931, pp 438

11 SHERMAN, M, "The Differentiation of Emotional Responses in Infants." *J Comp Psychol*, 1928, 7, 265-84, 335-51

12. WATSON, J. B., *Behaviorism.* London: Kegan Paul, 1931, pp. 308.

INDEX OF AUTHORITIES

INDEX OF SUBJECTS

The International Library of

Sociology

and Social Reconstruction

Edited by W. J. H. SPROTT
Founded by KARL MANNHEIM

ROUTLEDGE & KEGAN PAUL
BROADWAY HOUSE, CARTER LANE, LONDON, E C 4

CONTENTS

GENERAL SOCIOLOGY

Brown, Robert. Explanation in Social Science. *208 pp. 1963. (2nd Impression 1964.) 25s.*

Gibson, Quentin. The Logic of Social Enquiry *240 pp 1960. (2nd Impression* 1963.) *24s.*

Goldschmidt, Professor Walter. Understanding Human Society *272 pp 1959 21s.*

Homans, George C. Sentiments and Activities Essays in Social Science *336 pp 1962. 32s*

Jarvie, I. C. The Revolution in Anthropology. *Foreword by Ernest Gellner. 272 pp. 1964. 40s*

Johnson, Harry M. Sociology a Systematic Introduction. *Foreword by Robert K Merton. 710 pp. 1961. (3rd Impression 1963.) 42s*

Mannheim, Karl. Essays on Sociology and Social Psychology *Edited by Paul Keckskemeti With Editorial Note by Adolph Lowe 344 pp 1953. 30s.*

Systematic Sociology An Introduction to the Study of Society *Edited by J S. Eros and Professor W A C. Stewart 220 pp 1957 (2nd Impression 1959.) 24s*

Martindale, Don. The Nature and Types of Sociological Theory *292 pp. 1961 35s.*

Maus, Heinz A Short History of Sociology *234 pp 1962 28s*

Myrdal, Gunnar Value in Social Theory A Collection of Essays on Methodology *Edited by Paul Streeten 332 pp 1958. (2nd Impression 1962.) 32s*

Ogburn, William F., and Nimkoff, Meyer F. A Handbook of Sociology. *Preface by Karl Mannheim 612 pp. 46 figures 38 tables 4th edition (revised) 1960 35s.*

Parsons, Talcott and **Smelser, Neil J.** Economy and Society: A Study in the Integration of Economic and Social Theory *362 pp 1956 (3rd Impression 1964.) 35s.*

Rex, John. Key Problems of Sociological Theory. *220 pp 1961. (2nd Impression 1963.) 25s*

Stark, Werner. The Fundamental Forms of Social Thought *280 pp 1962 32s*

FOREIGN CLASSICS OF SOCIOLOGY

Durkheim, Emile. Suicide A Study in Sociology *Edited and with an Introduction by George Simpson 404 pp 1952 (2nd Impression 1963.) 30s.*

Socialism and Saint-Simon *Edited with an Introduction by Alvin W. Gouldner Translated by Charlotte Sattler from the edition originally edited with an Introduction by Marcel Mauss 286 pp. 1959. 28s*

Professional Ethics and Civic Morals *Translated by Cornelia Brookfield. 288 pp 1957. 30s*

Gerth, H. H., and Wright Mills, C. From Max Weber Essays in Sociology. *502 pp 1948 (4th Impression 1961.) 32s*

Tonnies, Ferdinand Community and Association (*Gemeinschaft und Gesellschaft.*) *Translated and Supplemented by Charles P Loomis Foreword by Pitirim A Sorokin 334 pp. 1955. 28s*

SOCIAL STRUCTURE

Andrzejewski, Stanislaw. Military Organization and Society. *With a Foreword by Professor A. R. Radcliffe-Brown 226 pp. 1 folder 1954 21s*

Cole, G. D. H. Studies in Class Structure. *220 pp. 1955 (2nd Impression 1961) 21s*

Coontz, Sydney H. Population Theories and the Economic Interpretation *202 pp. 1957 (2nd Impression 1961) 25s.*

Coser, Lewis. The Functions of Social Conflict. *204 pp 1956 18s*

Glass, D. V. (Ed). Social Mobility in Britain. *Contributions by J. Berent, T. Bottomore, R. C Chambers, J. Floud, D. V. Glass, J R Hall, H. T. Himmelweit, R K. Kelsall, F. M. Martin, C. A Moser, R. Mukherjee, and W Ziegel 420 pp. 1954 (2nd Impressions 1963) 40s*

Kelsall, R. K. Higher Civil Servants in Britain From 1870 to the Present Day. *268 pp 31 tables. 1955 25s.*

Ossowski, Stanislaw. Class Structure in the Social Consciousness *212 pp 1963. 25s*

SOCIOLOGY AND POLITICS

Barbu, Zevedei. Democracy and Dictatorship. Their Psychology and Patterns of Life. *300 pp 1956 28s*

Benney, Mark, Gray, A. P., and **Pear, R. H.** How People Vote: a Study of Electoral Behaviour in Greenwich. *Foreword by Professor W A. Robson. 256 pp 70 tables 1956. 25s*

Bramstedt, Dr. E. K. Dictatorship and Political Police. The Technique of Control by Fear. *286 pp 1945 20s.*

Crick, Bernard. The American Science of Politics Its Origins and Conditions. *284 pp 1959 28s*

Hertz, Frederick. Nationality in History and Politics. A Psychology and Sociology of National Sentiment and Nationalism. *440 pp 1944 (4th Impression 1957) 32s.*

Kornhauser, William. The Politics of Mass Society *272 pp 20 tables 1960 25s*

Laidler, Harry W. Social-Economic Movements An Historical and Comparative Survey of Socialism, Communism, Co-operation, Utopianism, and other Systems of Reform and Reconstruction *864 pp 16 plates 1 figure 1949 (3rd Impression 1960.) 50s.*

Mannheim, Karl. Freedom, Power and Democratic Planning *Edited by Hans Gerth and Ernest K. Bramstedt 424 pp 1951. 35s.*

Mansur, Fatma. Process of Independence *Foreword by A H Hanson 208 pp 1962. 25s*

Myrdal, Gunnar. The Political Element in the Development of Economic Theory. *Translated from the German by Paul Streeten 282 pp 1953 (3rd Impression 1961.) 25s*

Polanyi, Michael, F R S. The Logic of Liberty: Reflections and Rejoinders *228 pp. 1951 18s*

Verney, Douglas V. The Analysis of Political Systems *264 pp 1959 (2nd Impression 1961) 28s*

Wootton, Graham. The Politics of Influence British Ex-Servicemen, Cabinet Decisions and Cultural Changes, 1917 to 1957 *320 pp. 1963 30s.*

FOREIGN AFFAIRS: THEIR SOCIAL, POLITICAL AND ECONOMIC FOUNDATIONS

Baer, Gabriel. Population and Society in the Arab East *Translated by Hanna Szoke. 288 pp. 10 maps 1964. 40s*

Bonné, Alfred. The Economic Development of the Middle East· An Outline of Planned Reconstruction after the War. *192 pp 58 tables 1945 (3rd Impression 1953) 16s*

State and Economics in the Middle East A Society in Transition. *482 pp. 2nd (revised) edition 1955 (2nd Impression 1960) 40s.*

Studies in Economic Development with special reference to Conditions in the Under-developed Areas of Western Asia and India. *322 pp 84 tables (2nd edition 1960) 32s.*

Mayer, J. P. Political Thought in France from the Revolution to the Fifth Republic *164 pp. 3rd edition (revised) 1961. 16s*

Schenk, H G. The Aftermath of the Napoleonic Wars. The Concert of Europe—an Experiment *250 pp 17 plates. 1947. 18s*

Schlesinger, Rudolf. Central European Democracy and its Background. Economic and Political Group Organization *432 pp 1953 40s.*

Thomson, David, Meyer, E., and Briggs, A. Patterns of Peacemaking *408 pp. 1945. 25s.*

Trouton, Ruth. Peasant Renaissance in Yugoslavia, 1900-1950 A Study of the Development of Yugoslav Peasant Society as affected by Education *370 pp 1 map 1952 28s.*

SOCIOLOGY OF LAW

Gurvitch, Dr. Georges. Sociology of Law *With a Preface by Professor Roscoe Pound 280 pp 1947 (2nd Impression 1953) 24s.*

Renner, Karl. The Institutions of Private Law and Their Social Functions *Edited, with an Introduction and Notes by O Kahn-Freund. Translated by Agnes Schwarzschild 336 pp. 1949 28s*

CRIMINOLOGY

Cloward, Richard A., and **Ohlin, Lloyd E.** Delinquency and Opportunity A Theory of Delinquent Gangs *248 pp 1961 25s.*

Friedlander, Dr. Kate. The Psycho-Analytical Approach to Juvenile Delinquency Theory, Case Studies, Treatment. *320 pp 1947. (5th Impression 1961) 28s.*

Glueck, Sheldon and **Eleanor.** Family Environment and Delinquency *With the statistical assistance of Rose W Kneznek. 340 pp 1962. 35s.*

Mannheim, Hermann. Group Problems in Crime and Punishment, and other Studies in Criminology and Criminal Law *336 pp 1955 28s*

Morris, Terence. The Criminal Area: A Study in Social Ecology *Foreword by Hermann Mannheim 232 pp. 25 tables. 4 maps. 1957 25s*

Morris, Terence and **Pauline,** assisted by **Barbara Barer.** Pentonville. a Sociological Study of an English Prison. *416 pp. 16 plates 1963. 50s*

Spencer, John C. Crime and the Services. *Foreword by Hermann Mannheim 336 pp. 1954. 28s.*

Trasler, Gordon. The Explanation of Criminality *144 pp 1962 20s*

SOCIAL PSYCHOLOGY

Barbu, Zevedei. Problems of Historical Psychology. *248 pp 1960. 25s*

Blackburn, Julian. Psychology and the Social Pattern *184 pp 1945 (6th Impression 1961.) 16s.*

Fleming, C. M. Adolescence: Its Social Psychology With an Introduction to recent findings from the fields of Anthropology, Physiology, Medicine, Psychometrics and Sociometry *271 pp 2nd edition (revised) 1963. 25s.*
The Social Psychology of Education. An Introduction and Guide to Its Study *136 pp. 2nd edition (revised) 1959. 11s.*

Fleming, C. M. (Ed). Studies in the Social Psychology of Adolescence. *Contributions by J E Richardson, J. F Forrester, J. K Shukla and P. J. Higginbotham Foreword by the editor 292 pp 29 figures 13 tables 5 folder tables 1951. 23s*

Halmos, Paul. Solitude and Privacy· a Study of Social Isolation, its Causes and Therapy *With a Foreword by Professor T H Marshall 216 pp 1952. 21s*
Towards a Measure of Man· The Frontiers of Normal Adjustment. *276 pp. 1957. 28s*

Homans, George C. The Human Group *Foreword by Bernard DeVoto. Introduction by Robert K Merton 526 pp 1951 (4th Impression 1963) 35s.*
Social Behaviour: its Elementary Forms. *416 pp. 1961 30s.*

Klein, Josephine. The Study of Groups *226 pp. 31 figures. 5 tables. 1956 (3rd Impression 1962) 21s*

Linton, Ralph. The Cultural Background of Personality. *132 pp. 1947 (4th Impression 1958.) 16s.*
See also Yang, M.

Mayo, Elton. The Social Problems of an Industrial Civilization With an appendix on the Political Problem *180 pp 1949 (4th Impression 1961) 18s*

Ridder, J. C. de. The Personality of the Urban African in South Africa A Thematic Apperception Test Study. *196 pp 12 plates. 1961. 25s*

Rose, Arnold M. (Ed.) Mental Health and Mental Disorder A Sociological Approach. *Chapters by 46 contributors 654 pp. 1956. 45s*
Human Behavior and Social Processes: an Interactionist Approach. *Contributions by Arnold M Ross, Ralph H Turner, Anselm Strauss, Everett C Hughes, E. Franklin Frazier, Howard S. Becker, et al. 696 pp 1962. 56s.*

Smelser, Neil J. Theory of Collective Behavior. *448 pp. 1962 45s.*

Spinley, Dr. B. M. The Deprived and the Privileged: Personality Development in English Society. *232 pp 1953 20s*

Wolfenstein, Martha. Disaster A Psychological Essay. *264 pp. 1957. 23s.*

Young, Professor Kimball. Personality and Problems of Adjustment. *742 pp. 12 figures. 9 tables. 2nd edition (revised) 1952. (2nd Impression 1959.) 40s*
Handbook of Social Psychology. *658 pp. 16 figures 10 tables. 2nd edition (revised) 1957 (3rd Impression 1963) 40s*

SOCIOLOGY OF THE FAMILY

Banks, J A. Prosperity and Parenthood: A Study of Family Planning among the Victorian Middle Classes. *262 pp. 1954 24s*

Chapman, Dennis. The Home and Social Status *336 pp. 8 plates 3 figures 117 tables 1955. 35s*

Klein, Viola. The Feminine Character History of an Ideology *With a Foreword by Karl Mannheim. 256 pp. 1946 16s*

Myrdal, Alva and **Klein, Viola.** Women's Two Roles: Home and Work. *238 pp 27 tables. 1956. (2nd Impression 1962) 25s.*

Parsons, Talcott and **Bales, Robert F.** Family: Socialization and Interaction Process *In collaboration with James Olds, Morris Zelditch and Philip E Slater 456 pp 50 figures and tables 1956 35s*

THE SOCIAL SERVICES

Ashdown, Margaret and **Brown, S. Clement.** Social Service and Mental Health: An Essay on Psychiatric Social Workers. *280 pp 1953. 21s.*

Hall, M. Penelope. The Social Services of Modern England *416 pp. 6th edition (revised) 1963 28s.*

Heywood, Jean S. Children in Care: the Development of the Service for the Deprived Child. *256 pp. 1959 (2nd Impression 1964) 25s.*
An Introduction to teaching Casework Skills. *192 pp. 1964 In preparation.*

Jones, Kathleen. Lunacy, Law and Conscience, 1744-1845 the Social History of the Care of the Insane *268 pp 1955. 25s*
Mental Health and Social Policy, 1845-1959. *264 pp 1960. 28s*

Jones, Kathleen and **Sidebotham, Roy.** Mental Hospitals at Work. *220 pp. 1962. 30s*

Kastell, Jean. Casework in Child Care *Foreword by M Brooke Willis. 320 pp 1962 35s*

Rooff, Madeline. Voluntary Societies and Social Policy. *350 pp. 15 tables 1957. 35s.*

Shenfield, B. E. Social Policies for Old Age A Review of Social Provision for Old Age in Great Britain. *260 pp 39 tables. 1957 25s*

Timms, Noel. Psychiatric Social Work in Great Britain (1939-1962). *280 pp. 1964. 32s.*
Social Casework: Principles and Practice. *256 pp. In preparation*

Trasler, Gordon. In Place of Parents. A Study in Foster Care. *272 pp. 1960. 25s*

Young, A. F., and **Ashton, E. T.** British Social Work in the Nineteenth Century *288 pp 1956 (2nd Impression 1963.) 28s.*

SOCIOLOGY OF EDUCATION

Banks, Olive. Parity and Prestige in English Secondary Education: a Study in Educational Sociology *272 pp 1955. (2nd Impression. 1963) 28s*

Collier, K. G. The Social Purposes of Education. Personal and Social Values in Education. *268 pp 1959 (2nd Impression 1962.) 21s.*

Edmonds, E. L. The School Inspector *Foreword by Sir William Alexander 214 pp. 1962 28s*

Evans, K. M. Sociometry and Education. *158 pp. 1962 18s*

Fraser, W. R. Education and Society in Modern France *150 pp. 1963. 20s.*

Hans, Nicholas. New Trends in Education in the Eighteenth Century *278 pp. 19 tables. 1951. 25s*
Comparative Education A Study of Educational Factors and Traditions. *360 pp. 3rd (revised) edition 1958 (2nd Impression 1961) 23s.*

Mannheim, Karl and **Stewart, W. A. C.** An Introduction to the Sociology of Education. *208 pp 1962 21s*

Musgrove, F. Youth and the Social Order *176 pp. 1964. In preparation*

Ortega y Gasset, Jose. Mission of the University. *Translated with an Introduction by Howard Lee Nostrand 88 pp 1946 (3rd Impression 1963) 15s*

Ottaway, A. K. C. Education and Society. An Introduction to the Sociology of Education *With an Introduction by W O Lester Smith 212 pp Second edition (revised) 1962 (2nd Impression 1964) 18s.*

Peers, Robert. Adult Education· A Comparative Study *398 pp. 2nd edition 1959. 35s.*

Pritchard, D. G. Education and the Handicapped 1760 to 1960. *258 pp 1963. 28s.*

Samuel, R. H., and **Thomas, R. Hinton.** Education and Society in Modern Germany. *212 pp. 1949 16s*

Simon, Brian and **Joan** (Eds.). Educational Psychology in the U S S.R. *Introduction by Brian and Joan Simon. Translation by Joan Simon Papers by D N. Bogoiavlenski and N. A. Menchinskaia, D. B Elkonin, E. A. Fleshner, Z I Kalmykova, G S Kostiuk, V A Krutetski, A. N. Leontiev, A. R Luria, E. A Milerian, R. G. Natadze, B M. Teplov, L S Vygotski, L V. Zankov 296 pp 1963. 40s.*

SOCIOLOGY OF CULTURE

Fromm, Erich. The Fear of Freedom *286 pp 1942. (8th Impression 1960.) 21s.*
The Sane Society. *400 pp 1956 (3rd Impression 1963) 28s*

Mannheim, Karl. Diagnosis of Our Time· Wartime Essays of a Sociologist. *208 pp. 1943. (7th Impression 1962) 21s*
Essays on the Sociology of Culture. *Edited by Ernst Mannheim in co-operation with Paul Kecskemeti Editorial Note by Adolph Lowe 280 pp. 1956. (2nd Impression 1962.) 28s.*

Weber, Alfred. Farewell to European History. or The Conquest of Nihilism. *Translated from the German by R. F. C. Hull 224 pp. 1947 18s*

SOCIOLOGY OF RELIGION

Argyle, Michael. Religious Behaviour. *224 pp 8 figures. 41 tables 1958 25s.*

Knight, Frank H., and **Merriam, Thornton** W. The Economic Order and Religion *242 pp. 1947 18s.*

Watt, W. Montgomery. Islam and the Integration of Society. *320 pp. 1961. (2nd Impression.) 32s.*

SOCIOLOGY OF ART AND LITERATURE

Beljame, Alexandre. Men of Letters and the English Public in the Eighteenth Century· 1660-1744, Dryden, Addison, Pope *Edited with an Introduction and Notes by Bonamy Dobree. Translated by E O. Lorimer. 532 pp 1948. 32s*

Misch, Georg. A History of Autobiography in Antiquity *Translated by E W Dickes 2 Volumes. Vol. 1, 364 pp., Vol 2, 372 pp. 1950. 45s. the set*

Silbermann, Alphons. The Sociology of Music. *224 pp 1963. 28s*

SOCIOLOGY OF KNOWLEDGE

Hodges, H. A. The Philosophy of Wilhelm Dilthey. *410 pp. 1952. 30s*

Mannheim, Karl. Essays on the Sociology of Knowledge *Edited by Paul Kecskemeti Editorial note by Adolph Lowe 352 pp. 1952 (2nd Impression 1959) 35s.*

Schlesinger, Rudolf. Marx His Time and Ours *464 pp. 1950. (2nd Impression 1951.) 32s*

Stark, W. The History of Economics in its Relation to Social Development *104 pp. 1944. (4th Impression 1957.) 12s.*

America· Ideal and Reality The United States of 1776 in Contemporary Philosophy. *136 pp 1947. 12s.*

The Sociology of Knowledge. An Essay in Aid of a Deeper Understanding of the History of Ideas. *384 pp. 1958 (2nd Impression 1960.) 36s.*

Montesquieu: Pioneer of the Sociology of Knowledge. *244 pp 1960 25s*

URBAN SOCIOLOGY

Anderson, Nels. The Urban Community: A World Perspective *532 pp. 1960 35s.*

Ashworth, William. The Genesis of Modern British Town Planning A Study in Economic and Social History of the Nineteenth and Twentieth Centuries *288 pp 1954. 25s*

Bracey, Howard. Neighbours Neighbouring and Neighbourliness on New Estates and Subdivisions in England and the U.S A. *220 pp 1964*

Cullingworth, J. B. Housing Needs and Planning Policy A Restatement of the Problems of Housing Need and "Overspill" in England and Wales *232 pp. 44 tables. 8 maps 1960 28s*

Dickinson, Robert E. City Region and Regionalism. A Geographical Contribution to Human Ecology *360 pp 75 figures. 1947. (4th Impression 1960.)*

The West European City. A Geographical Interpretation. *600 pp 129 maps 29 plates. 2nd edition 1962. (2nd Impression 1963.) 55s*

Dore, R. P. City Life in Japan· A Study of a Tokyo Ward. *498 pp 8 plates 4 figures. 24 tables. 1958 (2nd Impression 1963.) 45s*

Jennings, Hilda. Societies in the Making: a Study of Development and Redevelopment within a County Borough. *Foreword by D A Clark 286 pp. 1962. 32s*

Kerr, Madeline. The People of Ship Street *240 pp 1958 23s*

RURAL SOCIOLOGY

Bracey, H. E. English Rural Life: Village Activities, Organizations and Institutions. *302 pp 1959. 30s*

Infield, Henrik F. Co-operative Living in Palestine. *With a Foreword by General Sir Arthur Wauchope, G C.B. 170 pp. 8 plates. 7 tables 1946 12s. 6d*

Littlejohn, James. Westrigg the Sociology of a Cheviot Parish. *172 pp. 5 figures. 1963 25s.*

Saville, John. Rural Depopulation in England and Wales, 1851-1951. *Foreword by Leonard Elmhirst. 286 pp 6 figures 39 tables 1 map. 1957. 28s (Dartington Hall Studies in Rural Sociology)*

Williams, W. M. The Country Craftsman· A Study of Some Rural Crafts and the Rural Industries Organization in England *248 pp 9 figures. 1958 25s (Dartington Hall Studies in Rural Sociology.)*
The Sociology of an English Village Gosforth *272 pp 12 figures 13 tables 1956 (3rd Impression 1964) 25s*

SOCIOLOGY OF MIGRATION

Eisenstadt, S. N. The Absorption of Immigrants a Comparative Study based mainly on the Jewish Community in Palestine and the State of Israel *288 pp 1954 28s*

SOCIOLOGY OF INDUSTRY AND DISTRIBUTION

Anderson, Nels. Work and Leisure *280 pp. 1961 28s.*

Blau, Peter M., and Scott, W. Richard. Formal Organizations· a Comparative approach *Introduction and Additional Bibliography by J H Smith 328 pp. 1963 28s.*

Gouldner, Alvin W. Patterns of Industrial Bureaucracy. *298 pp 1955. 25s*
Wildcat Strike: A Study of an Unofficial Strike *202 pp 10 figures. 1955 16s*

Jefferys, Margot, with the assistance of Winifred Moss Mobility in the Labour Market· Employment Changes in Battersea and Dagenham. *Preface by Barbara Wootton 186 pp. 51 tables. 1954. 15s*

Levy, A. B. Private Corporations and Their Control *Two Volumes. Vol. 1, 464 pp., Vol 2, 432 pp. 1950. 80s the set.*

Levy, Hermann. The Shops of Britain. A Study of Retail Distribution *268 pp. 1948. (2nd Impression 1949) 21s.*

Liepmann, Kate. The Journey to Work. Its Significance for Industrial and Community Life. *With a Foreword by A M. Carr-Saunders 230 pp 40 tables. 3 folders 1944. (2nd Impression 1945.) 18s.*
Apprenticeship: An Enquiry into its Adequacy under Modern Conditions *Foreword by H D. Dickinson 232 pp 6 tables. 1960. (2nd Impression) 23s.*

Millerson, Geoffrey. The Qualifying Associations· a Study in Professionalization. *320 pp 1964. In preparation.*

Smelser, Neil J. Social Change in the Industrial Revolution: An Application of Theory to the Lancashire Cotton Industry, 1770-1840. *468 pp 12 figures. 14 tables. 1959 (2nd Impression 1960) 40s*

Williams, Gertrude Recruitment to Skilled Trades *240 pp. 1957 23s*

Young, A. F. Industrial Injuries Insurance: an Examination of British Policy. *192 pp. 1964 In preparation*

ANTHROPOLOGY

(*Demy 8vo.*)

Crook, David and Isabel. Revolution in a Chinese Village Ten Mile Inn. *230 pp 8 plates 1 map 1959. 21s*

Dube, S. C. Indian Village, *Foreword by Morris Edward Opler. 276 pp 4 plates 1955 (4th Impression 1961) 25s*

India's Changing Villages Human Factors in Community Development. *260 pp 8 plates 1 map. 1958 (2nd Impression 1960) 25s*

Fei, Hsiao-Tung. Peasant Life in China a Field Study of Country Life in the Yangtze Valley. *Foreword by Bronislaw Malinowski 320 pp 14 plates 1939 (5th Impression 1962.) 30s*

Gulliver, P. H. The Family Herds A Study of Two Pastoral Tribes in East Africa, The Jie and Turkana *304 pp 4 plates 19 figures 1955 25s*

Social Control in an African Society a Study of the Arusha, Agricultural Masai of Northern Tanganyika. *320 pp. 8 plates 10 figures. 1963. 35s*

Hogbin, Ian. Transformation Scene. The Changing Culture of a New Guinea Village *340 pp. 22 plates. 2 maps 1951. 30s*

Hsu, Francis L. K. Under the Ancestors' Shadow Chinese Culture and Personality *346 pp 26 figures 1949 21s.*

Religion, Science and Human Crises A Study of China in Transition and its Implications for the West. *168 pp 7 figures 4 tables 1952 16s*

Lowie, Professor Robert H. Social Organization *494 pp. 1950 (3rd Impression 1962) 35s.*

Maunier, René. The Sociology of Colonies An Introduction to the Study of Race Contact *Edited and translated by E O Lorimer 2 Volumes Vol. 1, 430 pp, Vol 2, 356 pp. 1949. 70s the set.*

Mayer, Adrian C. Caste and Kinship in Central India. A Village and its Region *328 pp 16 plates. 15 figures 16 tables 1960 35s*

Peasants in the Pacific: A Study of Fiji Indian Rural Society. *232 pp. 16 plates 10 figures 14 tables 1961 35s*

Osborne, Harold. Indians of the Andes Aymaras and Quechuas *292 pp 8 plates 2 maps 1952 25s.*

Smith, Raymond T. The Negro Family in British Guiana· Family Structure and Social Status in the Villages *With a Foreword by Meyer Fortes 314 pp 8 plates 1 figure 4 maps 1956 28s*

Yang, Martin C. A Chinese Village Taitou, Shantung Province. *Foreword by Ralph Linton. Introduction by M L Wilson 308 pp. 1947 23s*

DOCUMENTARY

(*Demy 8vo*)

Belov, Fedor. The History of a Soviet Collective Farm *250 pp 1956 21s.*

Meek, Dorothea L. (Ed) Soviet Youth Some Achievements and Problems *Excerpts from the Soviet Press, translated by the editor 280 pp 1957 28s*

Schlesinger, Rudolf (Ed) Changing Attitudes in Soviet Russia

1. The Family in the U S S R *Documents and Readings, with an Introduction by the editor 434 pp 1949 30s*
2. The Nationalities Problem and Soviet Administration Selected Readings on the Development of Soviet Nationalities Policies. *Introduced by the editor. Translated by W W Gottlieb 324 pp 1956 30s*